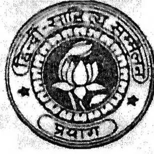
बुलन्द-शहर एवं खुरजा तहसीलों
की
बोलियों का संकालिक अध्ययन

डॉ० महावीर सरन जैन
एम्० ए०, डी० फिल्०



शकाब्द १८८८
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशक
मौलिचन्द्र शर्मा
सचिव, प्रथम शासन निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग।

•

प्रकाशन वर्ष : शकाब्द १८८८, सन् १९६७
प्रथम संस्करण : ११०० प्रतियाँ
मूल्य : रु० ९·००

मुद्रक :
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग।

S

Segmental	खंडित
Segmental-Phonemes	खंड ध्वनिग्राम
Semi-Vowels	अर्द्धस्वर
Short	ह्रस्व
Sonorous	मुखर
Sonority	मुखरता
Sound	ध्वनि
Sound-Symbol	ध्वनि-प्रतीक
Standard	परिनिष्ठित
Stem	प्रातिपदिक
Stem-formation	प्रातिपदिक रचना
Stops	स्पर्श
Stress	बलाघात
Structure	गठन
Structure-symmetry	रचना सम्बन्धी संगति
Supra-Segmental Phonemes	खंडेतर ध्वनिग्राम
yllabic	अक्षरात्मक
yllable	अक्षर
yllabic-division	आक्षरिक-विभाजन
ynchronic	संकालिक
Syntax	वाक्य-विन्यास
Syntactic level	वाक्य-धरातल
ystem	पद्धति

T

eeth-Ridge	वर्त्स्य
Tense	काल
Terminal junctures	बाहरी-विवृतियाँ

U

Utterance	उच्चार
Unaspiration	अल्पप्राणता

Unaspirated	अल्पप्राण
Velar	कंठ्य
Verb	क्रिया
Vocal Cards	स्वर तंत्रियाँ
Voiced	घोष
Voiceless	अघोष
Vowel	स्वर
Vowel-combination	स्वर-संयोग

W

Wind-Pipe	श्वास नलिका

५.४. सहायक-ग्रन्थ

(क) अंग्रेजी ग्रन्थ

Bloch, B, and Trager, G., Outline of Linguistic Analysis, 1942

Bloomfield, Leonard., Language, 1933.

Carol, John B., –The Study of Language–A Survey of Linguistics and related Deciplines in America, 1955.

Chatterjee, S. K., –Origin and Development of Bengali Language, 1927.

Francis, W. Nelson. –The Structure of American English, 1958.

Fries, Charles., –The Structure of English : An Introduction to the construction of English Sentences, 1952.

Gleason, H. A., –(a) An Introduction to Descriptive Linguistics 1962.
–(b) Work-book in Descriptive Linguistics 1955.

Gray, Louis, H., –Foundations of Language 1939.

Greenberg, J. H., –Essays in Linguistics, 1958.

Grierson, J. A., –Linguistic Survey of India, Vol. IX Part. I.

Gune, P. D., –Introduction to Comparative Philology, 1962.

Hale, R. A., –Leave Your Language Alone, 1950.

Harris, Z. S., –Methods in Structural Linguistics, 1951.

Haffner, R. M. S. –General Phonetics, 1949.

Hill, Archibald, A. –Introduction to Linguistic Structures 1959.

Hockett, C. F., –(a) A Course in Modern Linguistics 1959.

–(b) A Manual of Phonology, 1955.

JaKobson, R., and Halle, M. –Fundamentals of Language, 1956

Joos Martin, (Ed.), –Readings in Linguistics, 1957.

Jesperson, –Language; Its Nature, Development and Origin, 1922.

Jones, Daniel. –(a) An Outline of English Phonetics. 1940

–(b) The Phoneme; Its Nature and Use, 1950.

Kelkar, A. R., –The Phonology and Morphology of Marathi; Ph. D. Thesis, Cornell University, Ithaca, 1958.

Kellogg, S. H., A Grammar of the Hindi Language, 1938.

hubchandani, L. M. –The Phonology and Morphophonemics of Sindhi.

urath, Hans., –A Word Geography of the Eastern United States, 1949.

Muller, Max, –Lectures on the Science of Language, 1873.

Nida, E. Albert, Morphology; The Descriptive Analysis of Words, 1946.

Pike, Kenneth, –(a) Phonetics : A Critical Analysis of Phonetic Theory and a Technic for the Practical Description of Sounds, 1943.

–(b) Phonemics : A Technique for Reducing Languages to Writing, 1947.

–(c) The Intonation of American English, 1945.

Potter, R. K., Kopp, G.A., and Green, H. C., –Visible Speech, 1947.

Potter, Simeon, –Modern Linguistics, 1957.

Sapir, Edward, –Language, An Introduction to the Study of Speech, 1921.

Saksena, Babu Ram, –Evolution of Awadhi, 1937.

Shannon, C. E., and Weaver, W., –The Mathematical Theory of Communication, 1949.

Sturtevant, Edgar, H., –An Introduction to Linguistic Science, 1947.

Tiwari, U. N., –The Origin and Development of Bhojpuri, 1960.

Ullmann, S., –Words and Their Use, 1951.

Ward, I. C., –The Phonetics of English, 1945.

Westermann, D., and Ward, I. C., –Practical Phonetics for Students of African Languages.

Whitney, W. D., –Language and the Study of Language (5th Edition, 1855).

Whorf, Benjamin Lee, –Language, Thought and Reality (Ed. by John, B. Caroll), 1956.

(ख) हिन्दी ग्रन्थ

गुरु, कामता प्रसाद हिन्दी व्याकरण, १९५७

चटर्जी, सुनीति कुमार —भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी

तिवारी, उदयनारायण (अ) भोजपुरी भाषा और साहित्य

(ब) हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास स० २०१२

बल्ल, गोलोक बिहारी —ध्वनि विज्ञान

वर्मा, धीरेन्द्र —(अ) ब्रजभाषा सन् १९५४

(ब) हिन्दी भाषा का इतिहास सन् १९४९

सक्सेना, बाबूराम —सामान्य भाषा विज्ञान सं० २०१३

पुरुषोत्तम दास टंडन अभिनन्दन ग्रन्थ

(ग) हिन्दी पत्रिकाएँ : विशेषांक

धीरेन्द्र वर्मा विशेषाक —हिन्दी अनुशीलन भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग १९६० ई०

साहित्य सन्देश भाषा विज्ञान विशेषाक —साहित्य सन्देश, आगरा

(घ) अंग्रेजी पत्रिकाएँ

Indian Linguistics –Linguistic Society of India, Poona.

Language –Linguistic Society of America.

Modern Philology –University of Chicago, U. S. A.

प्रकाशकीय

आज हिन्दी का मानक रूप खड़ीबोली है। खड़ीबोली के स्वरूप ने ही हिन्दी द्य की प्रतिष्ठा की और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होने की क्षमता दान की। खड़ीबोली का मूल क्षेत्र हस्तिनापुर से दिल्ली तक के प्रदेश की भूमि है, जिसे पहले कुरुप्रदेश कहा जाता था आज उसमें मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, दिल्ली तथा बुलन्दशहर जिले आते हैं। इन जिलों के दक्षिण-पश्चिम का प्रदेश जभूमि ब्रजभाषा का क्षेत्र हो जाता है। बुलन्दशहर और खुर्जा ऐसी दो तहसील हैं, जहाँ की बोलियों में खड़ीबोली और ब्रजभाषा—दोनों बोलियों की सन्धिभाषा का प्रयोग होता है। इस दृष्टि से इन तहसीलों की बोली भाषा विज्ञान के अध्ययन के हेतु मूल्यवान् सामग्री प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत पुस्तक का विषय उक्त तहसीलों की बोलियों का भाषा विज्ञान के आधार पर संकालिक अध्ययन है। जिस क्षेत्रीय बोली का अध्ययन इस शोध ग्रन्थ में किया गया है, वह ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों के स्वरूपों से आक्रान्त है, और इन दोनों बोलियों में हिन्दी साहित्य का अधिकांश भाग लिखा गया है अतः हिन्दी में बुलन्दशहर और खुरजा तहसीलों की बोलियों का संकालिक अध्ययन पुस्तक का प्रकाशन न केवल हिन्दी की भाषा-वैज्ञानिक समृद्धि है, अपितु हिन्दी-वाङ्मय की एक अनिवार्य आवश्यकता की सर्वप्रथम पूर्ति है।

आशा है, पुस्तक अपने क्षेत्र के पाठकों के लिए सर्वथा उपादेय होगी।

मौलिचन्द्र शर्मा
सचिव
प्रथम शासन निकाय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग



भूमिका

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में डाक्टर महावीर सरन जैन ने बुलन्दशहर एवं खुर्जा तहसीलों की बोलियों का संकालिक दृष्टिकोण से भाषाशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया है। डाक्टर जैन ने यह शोधप्रबन्ध प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि के लिए तैयार किया था। यह शोधप्रबन्ध मेरे निर्देशन में सम्पन्न हुआ था और मेरे अतिरिक्त इसके अन्य परीक्षक हिन्दी तथा भाषाविज्ञान के दो मूर्द्धन्य एवं वयोवृद्ध विद्वान्—डा० बाबूराम सक्सेना एवं डा० धीरेन्द्र वर्मा थे। तीनों परीक्षकों ने इस शोधप्रबन्ध की मुक्तकंठ से प्रशंसा की एवं सन् १९६२ में इस शोधप्रबन्ध पर डाक्टर जैन को प्रयाग विश्वविद्यालय से डी० फिल० की उपाधि प्राप्त हुई।

इस शोधप्रबन्ध की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

१—इसमें ब्रजभाषा एवं खड़ीबोली के सक्रांति-क्षेत्र का भाषा-सर्वेक्षण किया गया है।

२—सर्वेक्षण से उपलब्ध सामग्री का अध्ययन डाक्टर जैन ने वर्णनात्मक पद्धति (डिस्क्रिप्टिव मेथड) से किया है।

३—यह अध्ययन एकमात्र संकालिक (सिनक्रानिक) स्तर पर किया गया गया है।

४—इस शोधप्रबन्ध के सम्पन्न करने में गठनात्मक पद्धति (स्ट्रक्चरल मेथड) का भी पूर्ण सहारा लिया गया है।

मैं निस्संकोच भाव से यह कह सकता हूं कि यह हिन्दी में लिखित प्रथम शोधप्रबन्ध है जिसमें अधुनातम भाषाशास्त्रीय पद्धति के अनुसार सामग्री का विश्लेषण किया गया है। डाक्टर जैन ने इस शोधप्रबन्ध को प्रस्तुत कर जहां एक ओर हिन्दी भाषा के गौरव में अभिवृद्धि की है, वहां दूसरी ओर उन्होंने एक ऐसा सुन्दर आदर्श प्रस्तुत किया है जिसका हिन्दी की विभिन्न बोलियों के अनुसंधित्सु ही नहीं, अपितु आर्य-परिवार की अन्य भाषाओं के शोधकर्ता भी अनुगमन कर सकते हैं। यह अत्यत आवश्यक है कि हिन्दी की अन्य बोलियों का अध्ययन भी इस आदर्श पर यथासम्भव शीघ्र सम्पन्न किया जाय।

साधारण प्रकाशक के लिए इस शोधप्रबन्ध का प्रकाशन भी एक कठिन कार्य था, क्योंकि यह अत्यधिक वैज्ञानिक एवं टेक्नीकल है तथा इसमें अनेक प्रकार के

टाइपों एव चिह्नों की आवश्यकता थी। इसके लिए मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के अधिकारियों, विशेष रूप से श्री गोपालचन्द्रसिंह, श्री विद्या भास्कर, श्री राम प्रताप त्रिपाठी, एवं श्री देवदत्त शास्त्री को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने इस शोधप्रबन्ध को अत्यंत तत्परता के साथ सम्मेलन से प्रकाशित कराया।

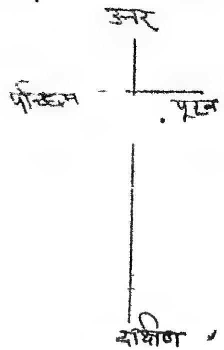
मुझे पूर्ण आशा है कि इस शोधप्रबन्ध के प्रकाशन से भाषा के क्षेत्र में कार्य करनेवाले शोधकर्ताओं को विशेष प्रेरणा एवं दिशा मिलेगी।

उदयनारायण तिवारी
एम्० ए० डी० लिट्०

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
भाषा एवं शोध-संस्थान,
जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर।

विषय सूची

(क) मानचित्र



जिला मेरठ

सिकन्द्राबाद तहसील

बुलन्द शहर तहसील

अनूप शहर तहसील

खुरजा तहसील

यमुना नदी

स्या.

बुलन्द

सि.

खुर.

पहा.

जिला, अलीगढ़

संकेत पत्र

— यह चिह्न विभक्ति—रहित अवस्था का द्योतक है। ऐसी दशा मे मूल अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक ही विभक्तिमय होता है।

˂	—	यह चिह्न 'पूर्व रूप से बनता है' अर्थ द्योतक है।
√	-	धातु चिह्न
/ /	—	ध्वनिग्रामिक लेख का चिह्न
.	-	महत्स्वन का चिह्न
| |		पदग्रामिक लेख का चिह्न
{ }		महापदग्रामिक लेख का चिह्न
~		मुक्त परिवर्तन का चिह्न
अ		स्वर
क		व्यंजन
उदा०		उदाहरण
पु०		पुरुष
अवि०		अविकारी कारक
वि०		विकारी कारक
प्रा०		प्रातिपदिक
विभ०		विभक्ति
स०	—	सहायक क्रिया
के०	—	केन्द्र
स्या०	—	स्याना
अगो०	--	अगौता
बुलन्द०	—	बुलन्द शहर
शि०	-	शिकारपुर
खुर०	—	खुरजा
जे०	. —	जेवर
पहा०	—	पहासू

आभार प्रदर्शन

मैं एम० ए० की परीक्षा देने के पश्चात् तत्काल अपने शोध-प्रबन्ध 'बुलन्द शहर और खुरजा तहसीलों की बोलियो का संकालिक अध्ययन' (Synchronic Study of the dialects of Buland Shahr and Khurja Tehsils)' के लिए सामग्री एकत्र करने के कार्य मे व्यस्त हो गया था। इसका कारण यह था कि एम० ए० (उत्तरार्द्ध) में भाषा विज्ञान (Philology) तथा भाषा शास्त्र (Linguistics) जैसे विषयों की प्रतीयमान नीरसता एवं दुरूहता समाप्त हो चुकी थी तथा शनै: शनै: इसी ओर मेरी अभिरुचि बढ रही थी। इसको भाषा विज्ञान तथा संस्कृत पालि के मेरे गुरु डा० उदय नारायण तिवारी की प्रेरणाओ ने बल दिया और मैंने भाषा शास्त्र में ही कोई अभिनव तथा मौलिक कार्य करने का निश्चय कर लिया। डा० तिवारी के निर्देश पर मैने बुलन्द शहर तहसील की कथ्य सामग्री को एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। बाद मे, सौभाग्य से अपनी डी० फिल्० थीसिस के लिये मुझे यही विषय मिल गया। चूँकि मुझे यह कार्य आधुनिकतम भाषा शास्त्रीय पद्धति के अनुसार करना था, अतएव मेरे लिए यह आवश्यक था कि मैं इसके लिये 'लिग्विस्टिक सोसायटी आफ इन्डिया' द्वारा परिचालित 'ग्रीष्म कालीन भाषा शास्त्रीय सत्रों' (Summer School of Linguistics) मे जाकर अध्ययन करू। इन सत्रो मे मुझे अपने देश के मूर्द्धन्य भाषा शास्त्रियों —डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, डा० बाबूराम सक्सेना, प्रो० मीनाक्षी सुन्दरम्, डा० उदय नारायण तिवारी, डा० ए० एम० घाटगे, डा० पी० बी० पंडित तथा डा० अशोक केलकर आदि से अध्ययन करने एवं सम्पर्क स्थापित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस अध्ययन के परिणाम स्वरूप मैंने अपनी सामग्री को संगठित एवं वर्गबद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। हिन्दी मे ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण से तो पर्याप्त कार्य हुआ है, किन्तु जहाँ तक मुझे ज्ञात है वर्णनात्मक पद्धति पर, आधुनिकतम भाषा शास्त्रीय सिद्धान्तो पर अवलम्बित, कोई भी परिष्कृत एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ अभी तक नही लिखा गया है। ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली के संक्रान्ति क्षेत्र की बोलियो का विवरणात्मक ढग से अध्ययन करने का मेरा यह प्रथम प्रयास है। इसमे बुलन्द शहर और खुरजा तहसील की जीवन्त बोलियों का ध्वनिग्रामिक (Phonemic) ध्वनिग्राम-क्रम-गठनात्मक (Phonot-

actic) सन्धि (Morphophonemics) एवं पदग्रामिक (Morphemic) अध्ययन प्रस्तुत किया गया है तथा इस अध्ययन को मैंने भाषाशास्त्र के अद्यतनतम विवरणात्मक पद्धति के अनुसार किया है। समग्र सामग्री को इस पद्धति में विवेचित करने में मुझे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। इसका एक कारण यह भी रहा है कि मेरे सामने इस प्रकार के विशेषण का कोई आदर्श न था। यही कारण है कि इस कार्य को सम्पन्न करने में मुझे लगभग ढाई वर्षों तक अथक एवं अनवरत परिश्रम करना पड़ा।

मैं हिन्दी क्षेत्र में, भाषा शास्त्र के अध्ययन को प्रोत्साहन देने वाले—डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० बाबूराम सक्सेना तथा डा० उदय नारायण तिवारी का अत्यधिक आभारी हूँ जिनके व्यक्तित्व, अध्यापन एवं कृतियों से इस अधिनिबंध को लिखने मे मुझे प्रेरणा एवं सहायता मिली है। डा० उदय नारायण तिवारी मेरे शोध-निर्देशक थे और उनके निर्देशन में ही सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ। यह उनकी ही प्रेरणाओं, स्नेह तथा समायोजन का फल है कि मैं अधिक परिश्रम कर, अपने कार्य को निर्धारित अवधि में सम्यक् रूप से पूर्ण कर सका हूँ। सामग्री को संगठित करने में मुझे जहाँ भी कोई कठिनाई हुई, उसके समाधान में डा० तिवारी ने मुझे अत्यधिक सहायता दी।

डा० ए० एम० घाटगे, डा० अशोक कुमार केलकर, डा० लक्ष्मन-मूलचन्द खूबचन्दानी तथा डा० जगदेव सिंह चौधरी ने इस शोध प्रबन्ध को एक बार आद्योपान्त पढ़कर मुझे अनेक सुझाव दिये, उनके कारण मैं उनका अत्यधिक आभारी हूँ।

अन्त में, शोध सामग्री को एकत्र करने के लिये की गई अपनी यात्रा में मुझे जिन सूचकों द्वारा सामग्री प्राप्त हुई उन सबका भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

जबलपुर विश्वविद्यालय
जबलपुर

—महावीर सरन जैन

भूमिका

०.१ अनुसन्धान का उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य बुलन्दशहर एवं खुरजा तहसील की बोलियों का संकालिक दृष्टिकोण से भाषाशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करना है।

०.२ आलोच्य क्षेत्र

०.२१ भाषाशास्त्रीय दृष्टि से

भाषाशास्त्रीय दृष्टि से यह क्षेत्र खड़ीबोली क्षेत्र (मेरठ जिला) तथा ब्रज भाषा-भाषी क्षेत्र (अलीगढ जिला) के मध्य स्थित है तथा इसी कारण यह पश्चिमी हिन्दी की दो प्रमुख बोलियों का संक्रान्ति-क्षेत्र (Transition area) है। यह खड़ीबोली एवं ब्रजभाषा की सीमाओ को निर्धारित करता है। सीमाओं को निर्धारित करने के कारण ही इस क्षेत्र मे संवाक् रेखाओं का समूह (Bundle of Isoglosses) घटित होता है।

इस सक्रान्ति क्षेत्र के सम्बन्ध में विद्वानों के निम्नलिखित विचार है —

(१) डा० ग्रियर्सन

ब्रजभाषा का हिन्दुस्तानी में समाहार

बुलन्द शहर और बदायूं जिलों की बोली यों तो सामान्यरूप से साधु ब्रज-भाषा है, किन्तु दोनों ही क्षेत्रों मे यह ऊपरी दोआब और पश्चिमी रुहेलखंड की हिन्दुस्तानी से अत्यधिक मिश्रित हो जाती है····· ·····बुलन्द शहर की भाषाओ की सामान्य तालिका के अनुसार ६३९,००० जन पछारो एव २,००० ब्रजभाषा भाषी है। वहाँ के अधिकारी इस बात का दावा करते है कि यहाँ ९३९,००० भाषा भाषी ऐसी भाषा का प्रयोग करते है जो ब्रजभाषा से पृथक है··· · ·।

(लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया,
खण्ड IX, भाग १)

(२) डा० धीरेन्द्र वर्मा

······बुलन्द शहर के उत्तरी भाग की बोली, खड़ीबोली क्षेत्र के अधिक निकट होने के कारण पड़ोस की इस बोली (खड़ीबोली) के रूपों से मिश्रित है। (ब्रजभाषा पृ० ३५)

(३) डा० उदयनारायण तिवारी

मथुरा अलीगढ़ तथा पश्चिमी आगरे की ब्रजभाषा आदर्श है। अलीगढ़ के उत्तर मे बुलन्द शहर है जहाँ की भाषा मे खड़ीबोली का अत्यधिक सम्मिश्रण हो जाता है। (हिन्दी भाषा उद्गम और विकास---द्वितीय सस्करण, पृष्ठ २३८)

०.२२ भौगोलिक दृष्टि से

भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र गंगा और यमुना के दोआब में स्थित है जिसका नदियों के किनारों को छोड़कर शेष भाग प्राय: समतल है।[1] इस क्षेत्र के उत्तर मे जिला मेरठ, दक्षिण में अलीगढ़, उत्तर पश्चिम में जिला बुलन्द शहर की सिकन्द्राबाद तहसील तथा पूर्व में जिला बुलन्द शहर की अनूप शहर तहसील है। इस क्षेत्र का क्षेत्रफल ९३५ वर्गमील है जिसमें बुलन्द शहर तहसील का क्षेत्रफल ४७६ (४४८ ग्रामीण तथा २८ शहरी तथा खुरजा तहसील का क्षेत्रफल ४५९ (४३१ ग्रामीण तथा २८ शहरी) वर्गमील है।

०.२३ जनसंख्या, ग्राम तथा परगने

इस क्षेत्र की जनसंख्या लगभग ८ लाख है जिसमें तहसील बुलन्द शहर की जनसंख्या लगभग ४६०,००० तथा खुरजा तहसील की जनसंख्या ३८०,००० के लगभग है। इस क्षेत्र की लगभग ७५०,००० जनसंख्या ग्रामों मे तथा शेष शहरों में रहती है। बुलन्द तहसील में ३८४ तथा खुरजा तहसील मे ३५० गाँव है।[2] बुलन्द तहसील मे चार--(१) स्याना (२) अगौता (३) बरन, एवं (४) शिकारपुर तथा खुरजा तहसील मे तीन--(१) खुरजा (२) पहासु, एवं (३) जेवर, परगने हैं।

०.३ प्रस्तुत प्रबंध की विशेषताएँ

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध किसी सीमित एवं सक्रान्ति क्षेत्र (Transition Area) की बोलियों का संकालिक पक्ष से किया गया अपने ढंग का प्रथम एवं मौलिक अध्ययन है। ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली के संक्रान्ति क्षेत्र पर अधुनातम भाषा

---

१ जिला बुलन्दशहर---सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, पृष्ठ १

२ सूचना विभाग, जिला बुलन्दशहर द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर।

शास्त्रीय विवरणात्मक पद्धति से कोई भी कार्य न होने के कारण, यह प्रथम प्रयास है।

मैने सम्पूर्ण क्षेत्र को परगनानुसार सात केन्द्रों में बाँटकर, उन केन्द्रों की बोलियों का विवरणात्मक विश्लेषण के साथ साथ उनका तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। हिन्दी में ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण से तो अत्यंत महत्वपूर्ण एवं मौलिक कार्य हुये है किन्तु हिन्दी की किसी भी बोली का हिन्दी माध्यम से आधुनिकतम भाषा शास्त्रीय सिद्धान्तों पर अवलम्बित विवरणात्मक अथवा संकालिक दृष्टिकोण से कोई भी परिष्कृत एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ नही निकला है। अंग्रेजी में भी अभी तक केवल हिन्दी की एक बोली 'बांगरू' पर डा० जगदेव सिंह चौधरी ने डा० हेनरी हेनिंग्सवाल्ड के तत्वावधान मे पेन्सिलवानिया विश्व-विद्यालय में एक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है जिस पर उन्हें पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई है। इस सम्बन्ध में यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भारत की अन्य आर्यभाषाओं में भी कोई बहुत कार्य नहीं हो पाया है। इस सम्बन्ध में केवल दो शोध-प्रबन्ध ही उल्लेखनीय हैं तथा दोनों अंग्रेजी मे अमेरिका के विश्वविद्यालयों में पी-एच० डी० की डिग्री प्राप्त करने के लिये लिखे गये थे। इनमें डा० अशोक केलकर ने मराठी पर तथा डा० लक्ष्मन मूलचन्द खूबचन्दानी ने सिन्धी पर कार्य किया है तथा शोध प्रबन्ध लिखकर अमेरिका के विश्वविद्यालयों से पी-एच० डी० की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। इस प्रकार जहाँ तक मुझे ज्ञात है, हिन्दी के माध्यम से संकालिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने का यह मेरा प्रथम प्रयास है।

अधुनातम भाषा शास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार अपने क्षेत्र की बोलियों का गठन ज्ञात करना मेरा उद्देश्य रहा है। मेरे सामने तत्सम्बन्धी कोई आदर्श न होने के कारण, वर्ण्य विषय की दुरूहता तो निर्विवाद रूप से जटिल हो गई है किन्तु इससे एक लाभ यह हुआ है कि शोध-प्रबन्ध में भाषा के गठनानुसार ढाँचा निर्धारित हो गया है, किसी परम्परागत या किसी भाषा के 'मॉडल' या आदर्श ग्रन्थ की पद्धति पर ही इन बोलियों के रूपों को 'फिट' कर देने तक सीमित होकर नहीं रह गया। यही कारण है कि कदाचित् हिन्दी मे यह पहला शोध प्रबन्ध है जिसमें कथ्य रूपों का विश्लेषण परम्परागत विवेचन से हटकर, आधुनिकतम भाषा शास्त्रीय सिद्धान्तो के आधार पर किया गया है तथा सामग्री का उसके गठन के संदर्भ में विवेचन किया गया है।

भाषा-विवेचन की अधुनातम पद्धति पाणिनि को अपना आदर्श मानती है। उसके अनुसार भाषा की सम्पूर्ण सामग्री को अति सक्षेप मे विवेचित करने की

आवश्यकता है। मैंने भी इसी आदर्श को अपनाते हुये अपनी शोध सामग्री को अति संक्षेप में ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

०.४ शोध प्रबंध की सीमायें

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की सीमा बुलन्द शहर एवं खुरजा तहसीलों की बोलियों की पदग्रामिक संरचना (Morphological construction) तक सीमित है।

पदग्रामिक संरचना में पद अथवा पदग्रामों की कोटि (Type) तथा उनका क्रम (Order) बिलकुल निश्चित होता है। इसके अतिरिक्त पदग्रामिक संरचना सदैव एक समाप्ति लिए हुए होती है। पदग्रामिक संरचना की एक अन्य विशेषता यह भी होती है कि उसके मध्य हम किसी अन्य रूप या तत्व का प्रवेश नहीं कर सकते हैं।

पदग्रामिक संरचना की उपर्युक्त विशेषतायें उसको वाक्य तथा वाक्यांश से पृथक् कर देती है। वाक्य को हम किसी भी सीमा तक बढा सकते हैं। इसके अतिरिक्त वाक्य के अन्तर्गत शब्दों का क्रम अत्यधिक निश्चित नहीं होता है। पदग्रामिक संरचना में पदों का क्रम बिल्कुल निश्चित होता है किन्तु वाक्य मे शब्दो का क्रम इतना निश्चित नहीं होता। क्रम की निश्चिता एवं अनिश्चिता के आधार पर दोनों में अर्थ सम्बन्धी अन्तर भी हो जाता है। पदग्रामिक संरचना का अपना कोई अर्थ नहीं होता है। एक पदग्रामिक संरचना में जो पद होते हैं, उन पदों का अर्थयोग ही पदग्रामिक सरचना का भी अर्थ होता है। एक वाक्य में शब्दों का क्रम निश्चित नहीं होता है, इस कारण शब्दों के क्रम भेद से वाक्यों का अर्थ परिवर्तित होता रहता है। इस प्रकार वाक्य का अर्थ उसकी इकाइयों का ही अर्थ नहीं होता, अपितु, अपना भी अर्थ होता है, किन्तु पदग्रामिक संरचना का अर्थ उसमें समाहित पदों के अर्थों का योग होता है।

०.५ ध्वनिग्रामिक प्रतिलेखन सम्बन्धी नियम

यों देवनागरी लिपि अन्य लिपियों से अपेक्षाकृत ध्वनिग्रामिक है किन्तु फिर भी तत्संबंधित कुछ नियमों का निर्देश आवश्यक है :—

१. / आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ / स्वर ध्वनिग्रामों के दूसरे प्रतीक क्रमशः / ा, ि, ी, ु, ू, े, ै, ो, ौ / हैं। इस रूप में इनका प्रयोग व्यंजनों के साथ होता है। इनकी लेखन विधि क्रमशः इस प्रकार है :—

(क) व्यंजन पश्चात् लेखन :—/, ा, ी, ो, ौ, / व्यंजनों के पश्चात् मिलाये जाते है तथा व्यंजन के पश्चात् ही उच्चारण भी होता है।

(ख) व्यंजन पूर्व :—/ ि / व्यजन अथवा व्यंजन गुच्छ पूर्व लिखा जाता किन्तु उच्चारण व्यंजन अथवा गुच्छ के पश्चात् होता है।

(ग) व्यंजनों के ऊपर :—/ ॆ, ॆ / व्यंजनों के ऊपर लिखे जाते है । उच्चारण व्यंजन पश्चात् होता है ।

(घ) व्यंजनों के नीचे:—/ ु, ू, / र् / व्यंजन ध्वनिग्राम को छोड़कर अन्य समस्त व्यंजनों के नीचे लिखे जाते है । / र् / के साथ ये क्रमशः / रु, रू, / रूप में लिखे जाते हैं ।

(२) /र्/ के /ॅ, ्, ् / प्रतीक है । / ॅ/ व्यंजनों के ऊपर लिखा जाता है किन्तु उच्चारण व्यंजन के पूर्व होता है । / ् / का प्रयोग व्यंजन के नीचे किया जाता है तथा उच्चारण व्यंजन पश्चात् होता है । मूर्द्धन्य व्यंजनों में व्यंजनों के नीचे / ्/ का प्रयोग होता है ।

(३) व्यंजनान्त व्युत्पादक पूर्वप्रत्यय (उपसर्ग) के व्यंजन से प्रारम्भ होने वाले किसी मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक में जुड़ने पर तथा व्यंजन से प्रारम्भ होने वाले व्युत्पादक परप्रत्यय के व्यंजनान्त मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक में जुड़ने पर, व्युत्पादक प्रत्यय तथा मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पादक प्रत्यय तथा व्युत्पन्न प्रातिपदिक के मध्य अल्पविवृति का प्रवेश हो जाता है । यह एक सामान्य नियम है, अतः इसको ध्वनिग्रामिक प्रतिलेखन में नहीं लिखा गया है ।

१. ध्वनिग्रामिक अध्ययन

१.० यह पहले कहा जा चुका है कि हमारे अध्ययन की सीमाएं पदग्रामिक संरचना (Morphological construction) तक ही सीमित हैं। इसी कारण ध्वनिग्रामिक प्रणाली (Phonemic System) का अध्ययन करते समय हम पदग्रामिक संरचना की सीमा तक के ही ध्वनिग्रामों (Phonemes) का विवेचन प्रस्तुत करेंगे, वाक्य धरातल (Synthetic level) के खंडेतर ध्वनिग्राम (Supra Segmental Phonemes) हमारे विवेचन से इतर की वस्तु होंगे।

१.०१ बुलन्द शहर एवं खुरजा तहसील की बोलियों की ध्वनिग्रामिक प्रणाली में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि इस क्षेत्र की समस्त बोलियों मे समान ध्वनिग्राम प्रयुक्त होते हैं। बोलीगत विभिन्नताओं का कारण ध्वनिग्राम-क्रम-गठनात्मक प्रणाली (Phonotactic System) तथा पदग्रामिक प्रणाली (Morphological System) है, जिसका आगे अध्ययन किया जायेगा।

१.०२ अपने अध्ययन की सीमाओं के अनुसार इस क्षेत्र की ध्वनिग्रामिक प्रणाली में २९ व्यंजन, १० स्वर, १ अनुनासिकता (Nasalisation) एवं १ विवृत्ति (Juncture) है। इस प्रकार कुल ४१ ध्वनिग्रामों का समूह प्राप्त है जिनमें ३९ (स्वर एवं व्यंजन) खंड ध्वनिग्राम (Segmental Phonemes) एवं २ (अनुनासिकता तथा विवृत्ति) खंडेतर ध्वनिग्राम (Supra-Segmental Phonemes) हैं।

१.१ सर्वप्रथम हम खंड ध्वनिग्रामों का विवरण प्रस्तुत करेंगे :

१० स्वरों में ४ अग्रस्वर (Front Vowels) ५ पश्चस्वर (Back-Vowels) तथा १ केन्द्रीय स्वर (Central Vowel) है। २९ व्यंजनों में १६ स्पर्श (Stops), ४ स्पर्श-संघर्षी (Africatives), २ संघर्षी (Fricatives) ३ नासिक्य (Nasals), १ पार्श्विक (Lateral), १ लुंठित (Rolled), तथा २ अर्द्धस्वर (Semi-Vowels) हैं।

१.११ स्वर (Vowels)

स्वर ध्वनिग्रामों के प्रधान सहस्वनों को मानस्वर (Cardinal Vowels)

के सन्दर्भ में लक्षित करते हुए, हम उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते है :—

१.१११

संवृत
ई
इ
अर्ध संवृत
ए
अर्ध विवृत
ऐ
विवृत
ऊ
उ
ओ
औ
अ
आ

१.११२ इन प्रधान सहस्वनों को रचना सम्बन्धी संगति की दृष्टि से इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :—

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्चस्थानीय	ई		ऊ
कम उच्चस्थानीय	इ		उ
मध्य स्थानीय	ए	अ	ओ
निम्न स्थानीय	ऐ	आ	औ

१.१२ व्यंजन ध्वनिग्रामिक गठन (Consonantal Phonemic Structure)

उन्तीस व्यंजन ध्वनियाँ परस्पर भिन्न एवं भाषा के अन्दर महत्त्वपूर्ण ध्वनियाँ (distinguished sounds) है। इनका कारण कुछ सीमित उच्चारणगत भिन्नताएँ (Articulatory-differences) है। ये उच्चारणगत भिन्नताएँ ही विशेष लक्षण (distinctive features) हैं। ये लक्षण इस प्रकार संयोजित हैं कि प्रत्येक ध्वनि दूसरी ध्वनि से विशेष लक्षण रखती है अर्थात् प्रत्येक ध्वनि प्रत्येक अन्य ध्वनि से कम से कम एक विशेष लक्षण की भिन्नता अवश्य रखती है।

इन विशेष लक्षणों के आधार पर समस्त व्यंजन ध्वनियाँ कुछ वर्गों में शृंखलाबद्ध की जा सकती है।

१.१२१ महाप्राण तथा अल्पप्राण (Aspiration Versus Non-aspiration)

भाषा के अन्दर कुछ वर्गों की ध्वनियों मे अल्पप्राण तथा महाप्राण के आधार पर ही व्यतिरेक (contrast) मिलता है। उदाहरणस्वरूप इस प्रकार का युग्म (Pair) अल्पप्राण । क् । और महाप्राण । ख् । का है।

कुछ भाषा-शास्त्रियों ने ध्वनिप्रक्रियात्मक (Phonological) विवेचन मे महाप्राण ध्वनियों को अल्पप्राण ध्वनि धन/ह्/के गुच्छ (cluster) रूप में प्रस्तावित किया है। "ए मैनुअल आफ फोनीलॉजी" में चार्ल्स हाकैट ने इसी प्रकार का प्रस्ताव रखते हुए कहा है :

"प्रायः यह कहा जाता है कि संस्कृत तथा हिन्दुस्तानी जैसी कुछ अन्य आधुनिक भाषाओं में चार प्रकार की स्पर्श ध्वनियाँ है :—अघोष, सघोष, अल्पप्राण तथा महाप्राण परन्तु उभय नाम्नी स्थितियों में महाप्राण (सघोष हो या अघोष) प्रकट ही / ह् / ध्वनिग्राम है जो अन्यत्र पुनर्घटित होता है। केवल द्विमार्गीय ढंग का व्यतिरेक रह जाता है।"[१]

किन्तु उच्चारण और भाषा के साँचे (Pattern) दोनों ही दृष्टिकोणों से अघोष महाप्राण एवं घोष महाप्राण, अघोष अल्पप्राण तथा घोष अल्पप्राण से पृथक् ध्वनिग्रामिक, इकाई के रूप मे है। चार्ल्स हाकेट के मत का खंडन प्रो० विलियम ब्राइट ने अपने लेख "भारत की भाषाओं मे महाप्राण व्यंजन"[२] में सबल

---

१ "Sanskrit and certain modern languages such as Hindustani, are often said to have four types of stops : Voiceless and Voiced, intersecting unaspirated and aspirated. But in both named cases the Aspiration (be it voiceless or voiced) is rather patently simply the phoneme / h / which recurs elsewhere : this leaves just a two way manner contrast."

—Charles F. Hockett—"A Manual of Phonology", 1955, P. 107.

इस सम्बन्ध में जॉन गम्पर्ज के विचार मिलाइए। द्रष्टव्य :—

Conversational Hindi-Urdu—by John Gumperz and June Rumery—The Sounds of Hindi-Urdu—pp. XXVI.

२. दे०, हिन्दी अनुशीलन, धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक, भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग। १९६० ई०, पृ० १६—२०।

तर्कों द्वारा कर दिया है, इसलिए इस सम्बन्ध में, यहाँ कुछ लिखना, उन तर्कों की ही पुनरावृति होगी।

भाषा के निम्न विपरीत युग्मों के ध्वनिग्रामों की भिन्नता केवल "प्राण" के आधार पर है, युग्म का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे से केवल "प्राण" के आधार पर भिन्न है। "प्राण" के आधार पर व्यंजन युग्म इस प्रकार हैं :—

अल्पप्राण / प् ब् त् द् ट् ड् च् ज् क् ग्

महाप्राण / फ् भ् थ् ध् ठ् ढ छ् झ् ख् घ् /

भाषा की समस्त प्रणाली में इन व्यंजनों को छोड़ कर महाप्राणत्व विशेष लक्षण नहीं रह गया है।

कुछ भाषा-शास्त्री / म् /, / न् /, / ल् /, एवं / र् / ध्वनिग्रामों के महाप्राण ध्वनि रूप । म्ह्, न्ह्, ल्ह्, र्ह्, / मानते हैं, किन्तु यहां । ह् । ध्वनिग्राम की संहिति को गुच्छ (cluster) के रूप में मानना उचित होगा। यों इस क्षेत्र की बोलियों का विश्लेषण करते समय इस प्रकार को कोई समस्या ही उत्पन्न नहीं होती है क्योंकि यहाँ म्+ह्, न्+ह्, ल्+ह्, एवं र्+ह् के गुच्छ ही उपलब्ध नहीं होते हैं। अर्थात किन्हीं भी दो उच्चारणों (utterances) में । म् । न् । । ल् । । र् । के महाप्राणत्व से व्यतिरेक (contrast) नही मिलता है।

१.१२२ (Voiced Versus Voiceless)

अल्पप्राण महाप्राण की भांति ही घोष अघोष का भेद भी कुछ व्यंजनों को विरोधी युग्मों (opposed-pairs) में संगठित करता है। घोष के आधार पर व्यंजन युग्म निम्न प्रकार हैं :

अघोष / प् फ् त् थ् ट् ठ् च् छ् क् ख्

घोष / ब् भ् द् ध् ड् ढ् ज् झ् ग् घ् ।

भाषा के अन्दर कुछ व्यंजन इस प्रकार की कोटि में आते है जो सामान्यत: घोष हैं किन्तु जो अघोष व्यंजनों के युग्म बनाने में असमर्थ हैं। ये ध्वनियाँ निम्न हैं :

नासिक्य । म् । । न् । ।ङ् ।

पार्श्विक । ल् ।

लुँठित । र् ।

अर्द्धस्वर । व् । एवं । य् ।

१.१२३ उच्चारण प्रयत्न एवं स्थान की दृष्टि से

ध्वन्यात्मक (Phonetic) आधार पर व्यंजनों के उच्चारण प्रयत्न एवं

स्थान (Place and Manner of Articulation) के आधार पर वर्गीकरण को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया जा सकता है :—

	द्वयोष्ठ्य	दन्त्य	वत्स्यं	मूर्द्धन्य	वत्स्यं-तालव्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प् ब् फ् भ्	त् द् थ् ध्		ट् ड् ठ् ढ्		क् ग् ख् घ्	
स्पर्श-संघर्षी					च् ज् छ् झ्		
नासिक्य	म्		न्			ङ	
पार्श्विक			ल्				
लुंठित			र्				
सघर्षी			स्				ह्
उत्क्षिप्त							
अर्द्धस्वर	व्				य्		

१.१२४ रचना सम्बन्धी संगति (Structural-Symmetry) की दृष्टि से ।

यदि हम व्यंजन ध्वनिग्रामों की ध्वन्यात्मक स्थिति को छोड़कर उनके वितरण और साँचे को लक्ष्य करके, उनका पुनर्वर्गीकरण करें तो ऊपर की तालिका का निम्न रूप होगा :—

प् ब् त् द् ट् ड् च् ज् क् ग्
फ् भ् थ् ध् ठ् ढ् छ् झ् ख् घ्

म् न् ङ्
न् ... ल्
र्
स् ह
व् य्

इस तालिका में एक ओर दन्त्य एवं वर्त्स्य व्यंजनों को तथा दूसरी ओर स्पर्श एवं स्पर्शसंघर्षी व्यंजनों को एकत्र रूप में देखा गया है।

हिन्दी की बोलियों के स्पर्श-संघर्षी व्यंजनों को स्पर्श वर्ग में ही अन्तर्भुक्त करने का प्रस्ताव रखते हुए श्री ग्लीसन महोदय ने लिखा है :—

"अँग्रेजी भाषा के अन्तर्गत तो स्पर्श-संघर्षी व्यंजनों के वितरण (Distribution) में अनेक भिन्नतायें हैं किन्तु हिन्दी की बोलियों में ऐसा नहीं है। दो ध्वन्यात्मक ध्वनिरूपों (Phonetic sound types) का साँचा बहुत सी दृष्टियों से एक है। इसलिए स्पर्श-संघर्षी व्यंजनों को एक अलग वर्ग में न रखकर स्पर्श वर्ग की ही ध्वन्यात्मक दृष्टि से भिन्न एक शाखा मान लेना संगत है।[१]

१.१३ ध्वनिग्रामों का वितरण एवं सहस्वनों के सम्बन्ध में वक्तव्य (Distribution of Phonemes and Allophonic Statement)

इस प्रकरण के अन्तर्गत हम प्रत्येक स्वर एवं व्यंजन ध्वनिग्राम का वितरण बताते हुए परिपूरक वितरण (Complementary Distribution) के आधार पर प्रत्येक ध्वनिग्राम के सदस्य सहस्वनों (Allophones) का विवरण प्रस्तुत करेंगे। पुनः अगले प्रकरण में स्वल्पान्तर युग्म (Minimal pairs) एवं उप स्वल्पान्तर युग्म (Analogous pairs) के आधार पर ध्वनिग्राम द्वारा उच्चारणों में व्यतिरेक प्रदर्शित करेंगे।

१.१३१ सर्वप्रथम हम स्वर ध्वनिग्रामों का वितरण एवं उनके सहस्वन प्रस्तुतकर रहे हैं :

(१) ।ई। यह संवृत अग्रस्वर है। इस ध्वनिग्राम के दो सहस्वन हैं जिनका वितरण इस प्रकार है:—

[ई] शब्द की आदि, मध्य यथा व्यंजन पश्चात् अन्तिम स्थिति में आता है। यथा :—

[ईख, महीना, बोली]

[ई[१]] यह [ई] की अपेक्षा शिथिल ह्रस्व तथा ईषतपश्च है। यह शब्द की अन्तिम स्थिति में स्वर पश्चात् आता है। यथा :—

[गाई[१], गई[१]]

(२) /इ/—यह ध्वनिग्राम /ई/ ध्वनिग्राम की अपेक्षा कम उच्चस्थानीय संवृत्त पश्चाकृष्ट ह्रस्व अग्रस्वर है: वितरण के आधार पर इसके दो सहस्वन है।

---

१. Gleason, H. A.—'An Introduction to Descriptive Linguistics', Page 355, Revised Edition, 1961.

[इ] यह अक्षरात्मक (Syllabic) कम उच्चस्थानीय सवृत अग्रस्वर है। यह शब्द की आदि स्थिति मे, मध्य स्थिति मे व्यजन पश्चात् तथा स्वर संयोगो मे एवं शब्द की अन्तिम स्थिति मे आता है। यथा।

[इन्होने, भूबलिया, काइ]

[इ̯] यह अनक्षरात्मक (Non-syllabic) कम उच्चस्थानीय संवृत अग्रस्वर है। शब्द की मध्य स्थिति मे स्वर बाद आकर सध्यक्षर (Diphthong) का रूप धारण करता है। यथा।

[गइ̯या, मइ̯या, भइ̯या]

(३) /ए/ यह अर्द्ध सम्वृत अग्रस्वर है। इस ध्वनिग्राम के दो सहस्वन [ए एँ] है जिनका वितरण इस प्रकार है :—[एँ] यह अग्र अर्द्ध सम्वृत्त तथा [ए] की अपेक्षा ह्रस्व स्वर है। यह /ह्/ के पूर्व / क्—ह् क् अ (क्) /, स्थिति मे आता है यथा / चेह्रा / ।

[ए]—अग्र अर्द्ध सम्वृत्त दीर्घ स्वर है। अन्यत्र शब्द की प्रत्येक स्थिति मे आ सकता है। यथा :— / एक्, बहोतेरे /

(४) / ऐ/—अर्द्ध विवृत अग्रस्वर है। इसके /ए/ की भाँति दो सहस्वन [ऍ] एव [ऐ] हैं जिनका वितरण क्रमशः [एँ] एवं [ए] की भाँति है।

यथा :—[ऍ] [कैह्ना]

[ऐ] [ऐसा, कैसा, सबै]

(५) /अ/ यह अर्द्ध विवृत पश्चस्वर है। शब्दो की अन्तिम स्थिति मे साधारणतः /अ/ का उच्चारण नही होता है किन्तु अन्त्य मे जब व्यजनगुच्छ (consonant cluster) आता है तब इस स्वर का निस्तार (release) हो जाता है। यथा :—/खर्च// इस ध्वनिग्राम के दो सहस्वन [अ] तथा [अ̯] है जिनका वितरण /इ/ ध्वनिग्राम के सहस्वनों की ही भाँति है।—

[अ] [अचम्भौ, कम्]

[अ̯] सुअ̯रिया]

(६) /ऊ/ यह संवृत पश्चस्वर है। इस ध्वनिग्राम के भी /ई/ ध्वनिग्राम की भाँति दो सहस्वन हैं :

[ऊ] शब्द की आदि, मध्य तथा व्यंजन पश्चात अन्तिम स्थिति मे आता है। यथा :—

[ऊन्, खूब्, सबकू]

[ऊ'] यह [ऊ] की अपेक्षा शिथिल ह्रस्व तथा ईषत् अग्र है। यह शब्द की अन्तिम स्थिति मे स्वर पश्चात आता है। यथा ·

[नाऊँ लाऊँ, खाऊँ]

(७) /उ/—यह /ऊ/ की अपेक्षा कम उच्चस्थानीय सवृत पश्चस्वर है इसके दो सहस्वन [उ] तथा [उ़] है जिनका वितरण /इ/ तथा /अ/ ध्वनिग्राम के सहस्वनो की ही भाँति है। यथा ·

[उ] [उप्पर्, बुरी, बिच्छु]

[उ़] [कडुवा]

(८) [ओ] यह अर्द्धसंवृत पश्चस्वर है तथा शब्द को प्रत्येक स्थिति मे आ सकता है। यथा :

/ओस्, खोपरी, लिख्खो/

(९) [औ] यह अर्द्धविवृत पश्चस्वर है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति मे आ सकता है यथा :

/औरत्, चौपार्, झाडौ/

(१०) /आ/ यह विवृत पश्चस्वर है। यह भी शब्द की प्रत्येक स्थिति मे आ सकता है। यथा ·

/आयबे, आबादी, रूपइया/

१.१३२ व्यंजन ध्वनिग्रामों का वितरण एवं उनके सहस्वनः

(११) /प्/ ध्वनिग्राम /प्/ का एक ही सहस्वन [प] है जो अल्पप्राण, अघोष, द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति मे आ सकता है। यथा :

/पंचात्, उप्पर्, पाप्/

(१२) /फ्/ ध्वनिग्राम /फ्/ के दो सहस्वन है :

[फ्] यह महाप्राण अघोष, द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है। यह शब्द की आदि स्थिति मे केन्द्रीय तथा पश्चस्वरो के पूर्व तथा शब्द की मध्य स्थिति मे व्यंजन और स्वर के मध्य आता है। यथा :

[फल्, फोड़ा, कप्फन्]

[फ'] यह महाप्राण, अघोष, दन्त्योष्ठ्य, स्पर्श व्यजन है। ये [फ्] के वितरण को छोड़कर अन्य सभी स्थितियो मे आता है। यथा :

[फि'साद्, सफ'र्, अफ'सर्, आफि'स्, साफ्']

(१३) /ब्/ ध्वनिग्राम /ब्/ का एक ही सहस्वन [ब्] है जो अल्पप्राण घोष, द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है तथा प्रत्येक स्थिति मे आ सकता है। यथा :

/बद्माश्, सबन्, आबादी, कब्/

(१४) /भ्/ ध्वनिग्राम /भ्/ का भी एक ही सहस्वन [भ्] है। यह महाप्राण,

घोष, द्वयोष्ठ्य, स्पर्श व्यंजन है तथा शब्द को प्रत्येक स्थिति में आ सकता है। यथा :—

/भारी, अचम्भौ, लाभ्/

(१५) /त्/ ध्वनिग्राम /त्/ का एक ही सहस्वन [त्] है जो अघोष, अल्पप्राण, दन्त्य, स्पर्श व्यंजन है। यथा :

/ताला, लता, लात्/

(१६) /थ्/ ध्वनिग्राम /थ्/ का एक ही सहस्वन [थ्] है जो अघोष, महाप्राण, दन्त्य स्पर्श व्यंजन है। यथा :

/थाल्, माथा साथ्/

(१७) /द्/ ध्वनिग्राम /द्/ का भी एक ही सहस्वन [द्] है जो घोष, अल्पप्राण, दन्त्य, स्पर्श व्यंजन है। यथा :

/दाल्, दर्द ~ दरद्, उम्मीद्/

(१८) /ध्/ ध्वनिग्राम /ध्/ का एक ही सहस्वन [ध्] है जो घोष, महाप्राण, दन्त्य, स्पर्श व्यंजन है। यथा :

/धाक्, कन्धा, लाध्/

(१९) /ट्/ ध्वनिग्राम /ट्/ का एक ही सहस्वन [ट्] है जो अल्पप्राण, अघोष, मूर्द्धन्य स्पर्श व्यंजन है। यथा :

/टाट्, टट्टू, कलट्टर, घन्टा, खाट्/

(२०) /ठ्/ ध्वनिग्राम /ठ्/ का एक ही सहस्वन /ठ्/ जो अल्पप्राण घोष, मूर्द्धन्य, स्पर्श व्यंजन है। यथा :

[ठोक्, बैठो, लठ्ठ, साठ्]

(२१) [ड्] इस ध्वनिग्राम के दो सहस्वन हैं :

[ड्] यह अल्पप्राण, घोष, मूर्द्धन्य, स्पर्श व्यंजन है।

[ड़्] यह अल्पप्राण, घोष, मूर्द्धन्य, उत्क्षिप्त व्यंजन है।

इन दोनों सहस्वनों के वितरण पर विशद दृष्टिपात करने की आवश्यकता है क्योंकि दोनों द्विस्वरान्तर्गत (Intervocally) आते है। कुछ भाषा शास्त्रियों ने इसीलिए हिन्दी का विश्लेषण करते समय इन्हें एक ध्वनिग्राम के दो सहस्वन न मानकर पृथक ध्वनिग्राम माना है।[१]

---

(१) डाक्टर उदयनारायण तिवारी : "हिन्दी के ध्वनिग्राम"। 'हिन्दुस्तानी' —भाग २१, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद। पुनर्मुद्रित—"भाषाशास्त्र की रूपरेखा"—लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

किन्तु निम्नलिखित कारणवश हम इन्हें एक ही ध्वनिग्राम के दो सहस्वन मान रहे है।

(१) पृथक् ध्वनिग्राम मान लेने पर भाषा के साँचे को बहुत आघात पहुँचता है।

(२) कोई भी दो ऐसे स्वल्पान्तर युग्म उपलब्ध नही हुए हैं जिनमे केवल /ड़, ड़्/ के कारण व्यतिरेक पाया जाता हो।

(३) तीसरा कारण 'ध्वनिग्राम' सम्बन्धी यह सिद्धान्त है कि भिन्न ध्वनियाँ जो केवल भिन्न ध्वनिग्रामिक परिवेश में आती हैं अर्थात् एक रूप ध्वनिग्रामिक परिवेश (Identical phonemic environment) मे नही आतीं, सदैव अव्यतिरेकी वितरण (non-contrastive distribution) मे होती है।[1]

[ड़्] शब्द के आदि में, मध्य में व्यंजन और स्वर के मध्य में एवं संयुक्त व्यंजनों में आता है। इस वातावरण में इसका [ड़्] के साथ कोई व्यतिरेक नहीं मिलता है। [ड़्] शब्द के अन्त्य में आता है एवं इस स्थिति में इसका [ड़्] मे कोई व्यतिरेक नहीं मिलता है।

समस्या यह है कि दोनों सहस्वन शब्द के मध्य में द्विस्वरान्तर्गत आते हैं। प्राप्त सामग्री के आधार पर हमें शब्दों के दो प्रकार के वर्ग मिले है जिनमें [ड़्] सहस्वन द्विस्वरान्तर्गत आ रहा है:

(१) देशी शब्द

(२) अंग्रेजी से गृहीत शब्द।

खंड (Segmental) ध्वनिग्रामों के क्रम मे उपलब्ध देशी शब्द निम्न हैं:

(अ) आडम्बर।

(आ) निडर

(इ) लौडा

(उ) गाँडु

इनमें अन्तिम दो शब्दों में खंडेतर ध्वनिग्राम। अनुनासिकता।

---

१ Archibald A. Hill—Introduction to Linguistic Structures—1958, Page 50.

का प्रवेश है। इसके अतिरिक्त चारों शब्दों में अल्प विवृति का भी प्रवेश है। यथा:

(अ) आ+डम्बर

(आ) नि+डर्

(इ) लौं+डा

(उ) गां+डु

अंग्रेजी से गृहीत शब्द तीन हैं :

(१) रेडियो

(२) सोडा~सोड़ा

(३) रोड्~रोड़्

अन्तिम दो शब्दो में [ड्] एवं [ड़्] मुक्त परिवर्तन (free-variation) में है। समस्या केवल / रेडियो / शब्द की है। इसके दो निदान सम्भव हैं :

[१] या तो इसको अपवाद स्वरूप अंग्रेजी से गृहीत शब्द को कोटि में अंकित कर लें।

[२] अथवा इसमें भी अल्प विवृति का प्रवेश मान लें। भाषा की पद्धति (System) एवँ लाघव (economy) को लक्ष्य में रख कर हम दूसरे निदान को पसन्द करेंगे। इस विवेचन के बाद अपने निष्कर्षो को हम सूत्र रूप में इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं :/ड्/

[ड्]—शब्द के आदि में, मध्य में व्यंजन और स्वर के मध्य तथा संयुक्त व्यंजनों के एक सदस्य के रूप में आता है।

यथा [डलिया] [कुन्डल्] [लड्डू] [गड्ढो] [नि+डर]

[ड़्] अन्यत्र आता है।

यथा [सड़क्] [पड़ोस्] [थप्पड़्] [मेड़्]

/ओ/ ध्वनिग्राम के बाद, तथा अनुनासिक स्वरों के बाद दोनों सहस्वन मुक्त परिवर्तन में आते हैं। यथा :

[सोडा~सोड़ा]

[रोड्~रोड़्]

[कोडा~कोड़ा]

[रांड्~रांड़्]

[सांड्~सांड़्]

[लौंडा~लौंड़ा]

(२२) /ढ्/ ध्वनिग्राम /ढ्/ के दो सहस्वन हैं :

[ढ़] यह महाप्राण घोष मूर्द्धन्य स्पर्श व्यंजन है। यह शब्द की आदि स्थिति मे एवं व्यंजन गुच्छों मे दूसरे सदस्य के रूप में आता है यथा :—

[ढक्कन्, बुड्ढा, गड्ढा, ठन्ढक]

[ढ्] यह महाप्राण घोष मूर्द्धन्य उत्क्षिप्त व्यंजन है। [ढ़] के वितरण के अतिरिक्त, अन्यत्र आता है।

[मढ़इया, बाढ्, माढ्]

अनुनासिक स्वरों के बाद आने पर दोनों सहस्वन मुक्त-परिवर्तन में वितरित होते हैं। यथा :—

[माँढ़,-माँढ्]

(२३) / च् / ध्वनिग्राम /च्/ का एक ही सहस्वन [च्] है। यह अल्पप्राण अघोष, वत्स्य, तालव्य, स्पर्श-संघर्षी व्यंजन है। शब्द की प्रत्येक स्थिति मे आ सकता है। यथा :—

/ चाक्, चल्, कच्चा, सच् /

(२४) / छ् / ध्वनिग्राम /छ्/ का एक ही सहस्वन [छ्] है। यह महाप्राण, अघोष, वत्स्र्य-तालव्य, स्पर्श संघर्षी व्यंजन है :

/ छाक्, छल्, कच्छा, रीछ् /

(२५) / ज् / ध्वनिग्राम / ज् / का एक ही सहस्वन [ज्] है जो घोष, अल्पप्राण, वत्स्र्यतालव्य, स्पर्श संघर्षी व्यंजन है :—

/ जाट्, जल्, बन्जर, रोज् /

(२६) / झ् / ध्वनिग्राम / झ् / का एक ही सहस्वन [झ्] है जो घोष, महाप्राण, वत्स्र्यतालव्य, स्पर्श संघर्षी व्यंजन है :—

/ झान्, झन्झट्, बोझ् /

(२७) / क् / ध्वनिग्राम / क् / का एक ही सहस्वन [क्] है जो अघोष, अल्पप्राण, कंठ्य, स्पर्शव्यंजन है :—

/ काउ; सिकरी, सुरक् /

(२८) / ख् / ध्वनिग्राम / ख् / का एक ही सहस्वन [ख्] है जो अघोष, महाप्राण, कठ्य, स्पर्श व्यंजन है :—

/ खाउ, बिखरी, रख् /

(२९) / ग् / ध्वनिग्राम / ग् / का एक ही सहस्वन [ग्] है जो घोष, अल्पप्राण, कंठ्य, स्पर्श व्यंजन है :—

/ गाम्, बिगर, साग् /

(३०) / घ् / ध्वनिग्राम / घ् / का एक ही सहस्वन [घ्] है जो घोष,

महाप्राण, कंठ्य स्पर्श व्यंजन है :

/ घाम्, बघर्रा, बाघ् /

(३१) / म् / ध्वनिग्राम /म्/ का एक ही सहस्वन [म्] है। यह द्वयोष्ठ्य नासिक्य व्यंजन है :—

/ माली, रूमाल्, काम् /

(३२) /न्/ ध्वनिग्राम /न्/ के तीन सहस्वन हैं :—

[ञ] यह वत्स्यंतालव्यनासिक्य व्यंजन है। इसका वितरण बहुत सीमित है। यह केवल व्यंजन गुच्छों में अपने वर्गीय (चवर्गीय) व्यंजनों के पूर्व आता है। यथा :—

[चञ्चल्]

[ण्] यह मूर्द्धन्य नासिक्य व्यंजन है। यह शब्द की माध्यमिक स्थिति में आता है :—

[प्रणाम्, रणवीर्]

[न्] यह वत्स्यं नासिक्य व्यंजन है तथा [ञ्] के वितरण के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी आ सकता है। [ण्] के साथ यह मुक्त परिवर्तन नें वितरित होता है :—

[नयी, दिनन्, सब्न्]

[ण्~न्] [प्रणाम्~प्रनाम्, रणवीर्~रनवीर्]

रूपतालिका में इन सहस्वनों के वितरण को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :—

	आदि में	मध्य में	द्विस्वरान्तर्गत	अन्त्य में
ञ्	×	।। चवर्ग के पूर्व	×	×
ण्	×	×	।।	×
न्	।।	×	।।	।।

(३३) /ङ्/ ध्वनिग्राम /ङ्/ का एक ही सहस्वन [ङ्] है जो कंठ्य नासिक्य व्यंजन है। इसका वितरण सीमित है। यह शब्द के आदि मे कभी नहीं आता है। केवल शब्द की माध्यमिक स्थिति में व्यंजन-गुच्छों में अपने वर्गीय (कवर्गीय) व्यंजनों के पूर्व में तथा शब्द की अन्तिम स्थिति में आता है। यथा :—

/कङ्घा, पङ्खा, पलङ्/

वितरण के सापेक्षिक दृष्टिकोण से देखने पर /ङ्/ अपूर्ण या दोष-पूर्ण ध्वनिग्राम (Defective-phoneme) है।

(३४) /ल्/ ध्वनिग्राम /ल्/ का एक ही सहस्वन [ल्] है जो वर्त्स्य पार्श्विक व्यंजन है।

/लोटा, चिल्लाहट, चाल्/

(३५) /र्/ ध्वनिग्राम /र्/ का एक ही सहस्वन [र्] है जो वर्त्स्य लुठित व्यंजन है :—

/रास्ता, रोक्, खर्च~खरच्, उप्पर/

(३६) /स्/ ध्वनिग्राम /स्/ का एक ही सहस्वन [स्] है जो वर्त्स्य, अघोष, संघर्षी ऊष्म व्यंजन है :

/सास्, मस्त्, नक्सा/

विभिन्न वक्ता इस ध्वनि को अन्य प्रकार से भी बोलते हैं और इस ध्वनि की जगह तालव्य [श्] का भी कभी कभी उच्चारण कर देते हैं, किन्तु यह भेद व्यक्तिगत (idiolect) भिन्नता में परिगणित होना चाहिए, सहस्वनिक भिन्नता में नहीं।

(३७) /ह्/ ध्वनिग्राम /ह्/ के दो सहस्वन है :—

[ह्] यह काकल्य अघोष संघर्षी व्यंजन है। यह शब्द की आदि स्थिति तथा माध्यमिक स्थिति में व्यंजन तथा स्वर अथवा स्वर तथा व्यंजन के मध्य आता है। यथा :—

[हर्, हैजा, माह्वार्]

[ह्] काकल्य घोष संघर्षी व्यंजन है। यह द्विस्वरान्तर्गत रूप में तथा शब्द की अन्तिम स्थिति में आता है। यथा :—

[मह्ीना, माह्]

प्रायः शब्द के अन्त में [ह्] का लोप भी हो जाता है और स्वरध्वनि सुनाई पड़ती है। वस्तुतः ऐसी दशा में घोषत्व इसको स्वरध्वनि में परिवर्तित कर देता है।

(३८) /व्/ ध्वनिग्राम /व्/ के दो सहस्वन हैं :—

[व्] द्व्योष्ठ्य सघोष अर्द्धस्वर व्यंजन है। आदि व्यंजन गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में आता है :—[द्वारा, क्वार]

[व्] दन्त्योष्ठ्य सघोष अर्द्धस्वर व्यंजन है। अन्यत्र आता है :—

/वैसा, जवान्, ताव्/

(३९) /य्/ ध्वनिग्राम /य्/ का एक ही सहस्वन [य्] है जो तालव्य अघोष अर्द्धस्वर व्यंजन है :—

/यार्, स्यार, मूबलिया/

स्वर पश्चात् आने तथा उसके साथ सन्निहित् होने पर [य्] तथा [व्] सन्ध्यक्षर का निर्माण करते हैं, जिसका विवेचन सन्ध्यक्षर प्रकरण (२ २) में किया जायगा।

१.१४ स्वल्पान्तर युग्म तथा उपस्वल्पान्तर युग्म (Minimal Pairs and Analogous Pairs)

१.१४१ स्वर

/इ/ /ई/
/मिल्/
/मील्/
/ए/ /ऐ/
/मेल्/
/मैल्/
/उ/ /ऊ/
/बुरा/
/बूरा/
/ओ/ /औ/
/मोल्/
/मौल्/
/अ/ /आ/
/कम्/
/काम्/
/आ/ /ई/
/घोड़ा/ /घोड़ी/
/अ/ /आ/ /ओ/ /औ/
/बल्/
/बाल्/
/बोल्/
/बौल्/
/इ/ /ई/ /ओ/ /औ/

/खिल्/
/खील्/
/खोल्/
/खौल्/
/इ/ /ई/ /ए/ /ऐ
/मिल्/
/मील्/
/मेल्/
/मैल्/
/उ/ /ऊ/ /ओ/ /औ/
/लुट्/
/लूट्/
/लोटा/
/लौटा/
/सुख्/
/सूख्/
/सोख्/
/सौख्/
/सुना/
/सूना/
/सोना/
/सौना/
/ए/ /ऐ/ /ओ/ /औ/
/मेल्/
/मैल्/
/मोल्/
/मौल्/

१.१४२ व्यंजन

(१) स्पर्श व्यंजन

/अ/ कंठ्य स्पर्श व्यंजन

/क/ /करी/ /काय्/ /सिकरौ/ /रोक्/ /तक्/
/ख/ /खरी/ /खाय्/ /बिखरौ/ /रख्/

/ग्/ /गेरी/ /गाय्/ /रोग्/

/बाग्/

/घ्/ /घरी/ /बाघ्/

/आ/ तालव्य स्पर्श । स्पर्श संघर्षी । व्यंजन

/च/ /चल्/ /चाल्/ /मचली/ /काँच्/ /कीच्/

/छ/ /छल्/ /छाल्/ /मछली/ /रीछ्/

/ज्/ /जल्/ /जाल्/ /मांज्/

/रोज्/

/झ/ /झल्/ /झाल्/ /मझली/

/बोझ्/

/इ/ मूर्द्धन्य स्पर्श व्यंजन

/ट्/ /टाट्/ /लट्टु/ /काट्/ /खाट्/

/ठ्/ /ठाट्/ /काठ्/ /साठ्/

/ड/ /डाट्/ /डाल्/ /लड्डु/ [मोड़्]

/ढ/ /ढाल्/ [कोढ़्]

/ई/ दन्त्य स्पर्श व्यंजन

/त्/ /ताल्/ /तान्/ /काता/ /बात्/

/थ्/ /थाल्/ /थान्/ /मांथा/ /साथ्/

/द्/ /दाल्/ /दान्/ /सादा/ /पाद्/

/ध्/ /धान्/ /बाँदा/ /बाँध्/

/उ/ द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन

/प्/ /पल्/ /पाप्/ /पाप्/

/फ्/ /फल्/ /साफ्/

/ब्/ /बल्/ /बाप्/ /बात्/ /चाब्/

/भ्/ /भात्/ /लाभ्/

/२/ नासिक्य व्यंजन

/न्/ /नाँना/ /नथ्/ /नाली/ /पलन्/ /सन्/

/म्/ /माँमा/ /मथ्/ /माली/ /कलम्/

/ङ/ /पलङ/ /सङ/

/३/ लुंठित, पार्श्विक, संघर्षी

/र्/ /राल्/ /मार्/

/ल्/ /लाल्/ /माल्/

/त्/	/ताला/	/बात्/
/स्/	/साला/	/बास्/
/स्/	/सोई/	/माँस/
/र्/	/रोई/	/मार्/
/स्/	/साथ्/	/मांस्/
/ह/	/हाथ्/	/माँह्/

/४/ अर्द्धस्वर

/य्/	/याके/
/व्/	/वाके/
/य्/	/गाय्/
/इ/	/गाइ/
/व/	/वू/ वह
/ब्/	/बू/ दुर्गन्ध

केवल स्वर एवं स्वर सहित /य्/ मे तथा /इ/ सहित एवं रहित उच्चारो में व्यतिरेक

/पारा/
/प्यारा/
/गइया/
/गया/
/भइया/
/भया/

१.२ खंडेतर ध्वनिग्राम (Supra-Segmental Phonemes)

इन ध्वनिग्रामों को खंडेतर ध्वनिग्राम इसलिये कहा जाता है क्योंकि ये मूल खंड ध्वनिग्रामों के ऊपर रचना की एक अतिरिक्त परत (layer) के समान प्रतीत होते है।

हमारी आलोच्य भाषा के अन्दर अनुनासिकता (Nasalisation) एवं विवृत्ति (Juncture) खडेतर ध्वनिग्राम हैं।

१.२१ अनुनासिकता

अनेक निरनुनासिक स्वरों को अनुनासिक कर देने से व्यतिरेक हो जाता है इसलिये अनुनासिकता भाषा मे ध्वनिग्रामिक है।

यथा :—

/बास्/ तथा /बाँस्/

/सास्/ तथा /साँस्/

अनुनासिकता ध्वनिग्राम ।*। के ६ सहस्वन हैं जिनका वितरण इस प्रकार है :—

[*ङ] यह सहस्वन ङ मिश्रित अनुनासिकता है तथा /ग्/ एवं /घ्/ व्यंजनों के पूर्व आता है। यथा :—

[हुँ –ङ् गा]   [hũ–ŋga]

[*ञ्] यह सहस्वन ञ् मिश्रित अनुनासिकता है तथा /ज्/ एवं /झ्/ व्यंजनों के पूर्व आता है। यथा :—

[झाँ –ञ् झ्]   [Jhã–ɲJh]

[*ण्] यह सहस्वन ण् मिश्रित अनुनासिकता है तथा /ड्/ एवं /ढ्/ व्यंजनों के पूर्व आता है। यथा :—

[खाँ –ण् ड्]   [Khã–ɳḍ]

[*न्] यह सहस्वन न् मिश्रित अनुनासिकता है तथा /द्/ एवं /ध्/ व्यंजनों के पूर्व आता है। यथा :—

[बाँ न् ध्]   [bãn dh]

[*म्] यह सहस्वन म् मिश्रित अनुनासिकता है तथा /ब्/ एवं /भ्/ व्यंजनों के पूर्व आता है। यथा :—

[सँ म भल्]   [Sɔ̃–m bhəl]

[*] यह सहस्वन अमिश्रित अनुनासिकता है तथा इसका विवरण ५ सहस्वनों के वितरण को छोड़कर अन्यत्र है। यथा :—

[खीँचा, काँसा, मौँका]

१.२२ विवृत्ति

विवृत्ति के कई उपभेद हैं। प्रत्येक उच्चार विवृत्ति के एक प्रकार को संजोए रहता है। विवृत्ति को दो मुख्य वर्गों में बाँटा जा सकता है :—

पहला वर्ग :—

बाहरी विवृत्ति (Terminal Junctures)—इस वर्ग के तीन उपवर्ग हैं :

(१) /|/

(२) /||/

(३) /|||/

कोई भी वाक्य या वाक्यांश इन तीनों /|, ||, |||/ मे से किसी एक के बिना समाप्त नही हो सकता है। किन्तु हम इनका वर्णन नही करेंगे क्योंकि हमारे अध्ययन की समाप्त सीमा पदग्रामिक संरचना तक है।

दूसरा वर्ग

आन्तरिक विवृत्ति (Internal Juncture) या अल्प विवृत्ति (Plus Juncture)

यह विवृत्ति प्रस्तुत क्षेत्र की बोलियो में ध्वनिग्रामिक है। एक उच्चारण को पूरा एक साथ उच्चरित करे एव यदि उसके किन्ही दो ध्वनिग्रामों के मध्य थोड़ा सा विराम देकर बोले और यदि उन दोनो उच्चारणो मे व्यतिरेक पाया जाता है तो वहाँ यह अल्प विवृत्ति [+] ध्वनिग्रामिक हो जाती है। यथा :—

/खाली/ /खा + ली/

/बता + साले/ /बतासा + ले/

/वह चलावै औ/ /वह चल् + आवै औ/

१.३ **अविशेष लक्षण** (Non-distinctive features)

इस प्रकरण के अन्तर्गत हम भाषा के उन लक्षणो पर विचार करेंगे जो राग तत्त्व लक्षण (Prosodic features) हैं, किन्तु ध्वनिग्रामिक नही हैं।

१.३१ **दीर्घता** (length)

पहले भाषा विज्ञानी [आ, ई, ऊ] को क्रमश: [अ, इ, उ] के दीर्घ रूप मानते थे, इस मत से दीर्घता ध्वनिग्रामिक मानी जाएगी, किन्तु इस मत का निराकरण डाक्टर उदयनारायण तिवारी ने अपने लेख 'हिन्दी के ध्वनिग्राम'[1] में कर दिया है। वस्तुत: उपर्युक्त स्वरों मे केवल उच्चारण काल की मात्रा का ही भेद नही। उनके उच्चारण स्थान मे भी भेद हैं जो मान-चित्र मे दिखाया जा चुका है।

---

१ दे० हिन्दुस्तानी 'हिन्दी के ध्वनिग्राम' पृ० १४-१५, भाग २१, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद। पुनर्मुद्रित—"भाषाशास्त्र की रूपरेखा"—लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

स्वरों में मात्राकाल वातावरण के अनुसार, बोलने वाले की गति के अनुसार बदलता रहता है। कुछ साधारण नियम बताये जा सकते हैं :—

(१) शब्द में आदि के स्वरों का मात्राकाल शब्दान्त के स्वर से अधिक होता है।

(२) एकाक्षर शब्दों के स्वरों का मात्राकाल अनेकाक्षर शब्दों के स्वरों से अधिक होता है।

(३) एकाक्षर स्वरान्त शब्द एकाक्षर व्यंजनान्त शब्द से मात्राकाल में अधिक होता है।

(४) अनुनासिक स्वर निरनुनासिक स्वरों से दीर्घ होते हैं।

(५) व्यंजन-गुच्छ से पूर्व आए हुए स्वरों की दीर्घता अन्य स्थान के स्वरों के मात्राकाल की अपेक्षा कम होती है।

१.३२ बलाघात (Stress)

विश्व की किसी भी भाषा का कोई अक्षर आघात शून्य नहीं होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक भाषा में उच्चारों की शृंखला में आघातों की भिन्नता मिलती है। इस शृंखला में सभी अक्षरों में आघात समान रूप में नहीं पड़ता है। किन्तु प्रत्येक भाषा में आघातों की भिन्नतायें इस प्रकार संयोजित नहीं होती हैं कि उच्चारों में व्यतिरेक उत्पन्न कर सकें।

प्रस्तुत क्षेत्र की बोलियों में बलाघात के कारण दो उच्चारों में कहीं व्यतिरेक नहीं आया है इस कारण यहां बलाघात ध्वनिग्रामिक नहीं है।

शब्दों में अक्षर क्रम से प्राप्त बलाघात सम्बन्धी कुछ सामान्य नियम नीचे दिये जा रहे हैं :—

१. एकाक्षर

ग॑ाम्

२. द्वयाक्षर

(अ) प्रथम अक्षर का स्वर दीर्घ हो एवं अन्तिमाक्षर का स्वर यदि लघु हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर पड़ता है। यथा :—

ब॑ाइस्

(आ) अन्तिमाक्षर का स्वर यदि दीर्घ हो और प्रथम अक्षर का स्वर यदि ह्रस्व हो, तो बलाघात अन्तिमाक्षर पर पड़ता है। यथा :—

किस॑ान

इस नियम का एक अपवाद यह है कि यदि शब्द में द्विस्वरान्तर्गत व्यंजन-गुच्छ

हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पड़ता है। भले ही प्रथम अक्षर का स्वर ह्रस्व और अन्तिमाक्षर का स्वर दीर्घ हो। यथा :—

प'त्ता

(इ) यदि दोनों अक्षरों के स्वर दीर्घ हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर पड़ता है :—

लौ'टा

[३] त्रयाक्षर एवं चतुरक्षर

इनमें बलाघात अन्तिम दो अक्षरों मे से किसी एक पर होता है। सामान्य नियम द्वयाक्षर की भाँति ही होते है।

१.४ सुर (Pitch)

सुर, स्वरतंत्रियों (vocal cards) के खिचाव और उनमें उत्पन्न घोष या कम्पन के आरोह अवरोह के क्रम पर निर्भर करता है। सुर की भिन्नताएँ आकस्मिक नही होती, वे बोली के गठन के अग के रूप में होती हैं।"[१]

सुर के विभिन्न धरातलो (Pitch levels) को विभिन्न प्रकार से अंकित किया जाता है। यथा :—

रेखाओं द्वारा, बिन्दु द्वारा, अंको द्वारा।

आधुनिक भाषाशास्त्री प्रायः [१] से [४] अंकों द्वारा सुर के चार स्तरों को प्रदर्शित करते है। [१] अंक निम्नतम धरातल के लिए एवं [४] उच्चतम सुर धरातल के लिए। यथा :—

२ ३ १
मोहन + आज + घर + गयो।।।

सुर के विभिन्न धरातलों द्वारा उच्चारो में व्यतिरेक आ जाता है। बाहरी विवृत्तियाँ भी सुर धरातलों को चिन्हित करती है। हमने बोलियों का ध्वनिग्रामिक अध्ययन करते समय सुर धरातलों पर कार्य नहीं किया है, क्योकि हमारे अध्ययन की सीमा पदग्रामिक संरचना तक ही सीमित है।

---

१. W. Nelson Francis—The Structure of American English, pp. 113-114.

२. ध्वनिग्राम क्रम गठनात्मक अध्ययन

०.२ इस अध्याय में पूर्व वर्णित ध्वनिग्रामों के क्रम की गठनात्मक पद्धति का अध्ययन तथा विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा ।[१]

२.०१ शब्द रचना पद्धति

इस क्षेत्र की बोलियों में एकाक्षर से लेकर चतुराक्षर तक के शब्द पाये जाते हैं। द्वयक्षर शब्दों की संख्या सर्वाधिक है।

भाषा के अन्दर दो ध्वनियाँ (ध्वनिग्रामशास्त्र की दृष्टि से ध्वनिग्राम हैं) ऐसी हैं जो कभी व्यंजन की भाँति एवं कभी स्वर की भाँति आती हैं। ध्वनिग्रामिक अध्ययन प्रस्तुत करते समय इन्हें व्यंजनों के 'अर्द्धस्वर' वर्ग के अन्तर्गत रखा गया था। भाषा के वितरण के आधार पर, जैसा विस्तार से व्यंजन-गुच्छ एवं संध्यक्षर प्रकरण के अन्तर्गत विवेचन किया जायेगा, इन दो । य् व् । ध्वनि-को स्वर पश्चात (Post-Vocalic) आने पर अनक्षरात्मक स्वर एवं स्वर पूर्व (Pre-Vocalic) आने पर व्यंजन विशेषताओं से युक्त माना गया है।

भाषा के वितरण के आधार पर शब्द की प्रत्येक स्थिति में दो स्वर संयोजित हो सकते हैं अर्थात् शब्द की आदि, मध्य एवं अन्त्य स्थिति में, स्वर + अल्पविवृत्ति + स्वर का क्रम रह सकता है। शब्द रचना प्रणाणी के अनुसार तीन स्वर संयोजित नहीं हो सकते हैं। उसका कारण यह है कि जिन शब्दों में तीन स्वर ध्वनिग्रामों का क्रम रहता है उनमें एक स्वर (मध्य स्वर) अनक्षरात्मक बनकर पूर्व स्वर के साथ गुच्छ रूप में संध्यक्षर (Diphthong) का निर्माण करता है।

इसी प्रकार, शब्द की प्राथमिक एवं माध्यमिक स्थिति में व्यंजन ध्वनिग्राम गुच्छ का निर्माण करते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि शब्द की अन्तिम स्थिति में व्यंजन गुच्छ नहीं पाए जाते हैं, क्योंकि जब किसी भी शब्द का अन्त

---

१ आगे सम्पूर्ण पुस्तक में "+" चिह्न अल्पविवृत्ति को नहीं, अपितु दो ध्वनिग्रामों अथवा पद अथवा शब्द रूपों के क्रम को चिह्नित करेगा। जिस स्थान पर अल्पविवृत्ति ध्वनिग्राम का अर्थ स्पष्ट करना होगा, वहाँ '+' चिह्न का प्रयोग विशेष उल्लेख के साथ होगा।

व्यंजन गुच्छ में होता है, तब स्वर का निस्तार (release) अवश्य हो जाता है यही कारण है कि इस क्षेत्र के अन्तर्गत स्वर पश्चात् विवृति पूर्व व्यंजन-गुच्छ के उदाहरण नहीं मिलते हैं।

२.०२ अक्षर स्वरूप

इस क्षेत्र की बोलियों में निम्न प्रकार से एक अक्षर का स्वरूप[1] निर्धारित किया जा सकता है :—

[१] अ कोई भी स्वर ध्वनिग्राम अक्षर रचना कर सकता है :—

ई, थी

ऊ, वह

ऐ, हे

ए, थे

आ~औ,=था

आ । उं, आऊँ

ओ, वह

[२] अक् स्वर+व्यंजन

अब्, अब

आज्, आज

रुक्, रुक

ईख्, ईख

उम् । दा, उम्दा

[३] क् अ व्यंजन+स्वर

जा, जा

बो~गो, वह

का+टा, काटा

[४] क् अ क् व्यंजन+स्वर+व्यंजन

हर्, हल्

सब्, सब

पेड्, पेड

धन्, धन

लङ/गे, ओर

१. स्वर के लिए "अ" एवं व्यंजन के लिए "क्" चिन्ह प्रयोग किये जा रहे हैं।

[५] क् अ अ — व्यंजन + संध्यक्षर

गइ / या [गइ् / या], गैया

भइ् / या [भइ् / या], भैया

[६] क् क् अ — व्यंजन गुच्छ + स्वर

क्या / री, क्यारी

ग्या / रह्, ग्यारह

[७] क् क् अ क् — व्यंजनगुच्छ + स्वर + व्यंजन

क्वार्, क्वार

ज्वाल / खेडा, ज्वालखेड़ा

स्यार्, स्यार

इस प्रकार इस क्षेत्र की बोलियों में उपर्युक्त ७ प्रकार के स्वर व्यंजन क्रम से एक अक्षर की संरचना हो सकती है। समस्त प्रकार के अक्षरों में स्वर ही अक्षर विधान के केन्द्र हैं अर्थात् प्रत्येक अक्षर में किसी न किसी स्वर की सत्ता अवश्य वर्तमान रहती है।

२.०३ शब्द एवं अक्षर संरचना :—

इस क्षेत्र की बोलियों में, जैसा हम पूव देख चुके हैं, शब्द एक अक्षर का भी हो सकता है और उसका निर्माण

[१] केवल स्वर, [२] स्वर + व्यंजन [३] व्यंजन + स्वर

[४] व्यंजन + स्वर + व्यंजन [५] व्यंजन + संध्यक्षर

[६] व्यंजन-गुच्छ + स्वर अथवा [७] व्यंजन-गुच्छ + स्वर + व्यंजन के क्रम से हो सकता है।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब शब्द एक अक्षर से अधिक अक्षरों का होता है, तब शब्द के आक्षरिक विभाजन (Syllabic Division) के क्या नियम होते हैं। इस सम्बन्ध में कुछ नियम निर्धारित किये जा सकते है :—

[१] प्रत्येक मूलस्वर, अक्षर की आदि, मध्य एवं अन्त्य स्थिति में आ सकता है किन्तु संध्यक्षर अक्षर की केवल अन्त्य स्थिति में ही प्राप्य हैं।

[२] जब व्यंजन अथवा व्यंजन-गुच्छ शब्द को प्रारम्भिक स्थिति में आते हैं, तो वे अपने परवर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होकर अक्षर बनाते हैं अर्थात् शब्द की प्रारम्भिक स्थिति में यदि व्यंजन या व्यंजन-गुच्छ हो, तो शब्द के प्रथम अक्षर का स्वरूप 'क् अ' अथवा 'क् क् अ' होता है।

[३] जब व्यंजन शब्द की अन्तिम स्थिति मे आता है, तब अपने पूर्ववर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होकर अक्षर की रचना करता है, तब शब्द के अन्तिम अक्षर का स्वरूप 'अक्' अथवा 'क अ क् होता है।

[४] यदि शब्द के मध्य में द्विस्वरान्तर्गत कोई व्यजन आता है, अर्थात् जब 'अ क् अ' का क्रम होता है, तब व्यंजन परवर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होकर अक्षर निर्माण करता है। यथा :—

अ / के / ला

किन्तु यदि 'अ क् अ' क्रम मे खंडेतर ध्वनिग्राम विवृत्ति का भी प्रवेश हो जाता है, तो नियम इस प्रकार होता है :—

यदि विवृत्ति का प्रवेश व्यंजन के परवर्ती स्वर के बाद होता है, अर्थात् यदि 'अ क् अ'+ का क्रम होता है तब व्यंजन परवर्ती स्वर के साथ ही मम्बद्ध होकर अक्षर निर्माण करता है, किन्तु इसके विपरीत यदि विवृत्ति का प्रवेश व्यंजन तथा उसके परवर्ती स्वर के मध्य होता है अर्थात् यदि 'अ क् + अ' का क्रम होता है, तो इस नियम का पालन नही होवा और ऐसी स्थिति मे व्यजन अपने पूर्ववर्ती स्वर के साथ, सम्बद्ध होकर अक्षर निर्माण करता है। दोनों स्थितियो को इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है :—

च / ला / ता
चल् +/ आ / वा।

[५] जब शब्द के मध्य मे कोई व्यंजन-गुच्छ आता है, तब व्यंजन-गुच्छ का पूर्ववर्ती सदस्य पूर्ववर्ती स्वर के साथ, तथा परवर्ती सदस्य परवर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होता है। दूसरे शब्दों मे, द्विस्वरान्तर्गत जब दो व्यंजनों का गुच्छ होता है, तब आक्षरिक विभाजन सदैव व्यंजन गुच्छ के एक सदस्य के बाद होता है। यथा:—

कच् / चा
मक / का
उप् / पर्

[६] अ क् +क् क् अ। स्थिति मे आक्षरिक विभाजन अल्पविवृत्ति के अनुसार होता है और इस प्रकार अल्पविवृत्ति से पूर्व वाला व्यंजन अपने पूर्ववर्ती स्वर के साथ तथा अल्प विवृत्ति के पश्चात् वाला व्यंजन-गुच्छ अपने परवर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होकर अक्षर-रचना करता है। यथा :

सि / क न्+/ द्रा / बाद्

२.२·१ स्वर संयोग

स्वर संयोग से तात्पर्य स्वर + स्वर से है, जिसके मध्य अल्प विवृत्ति का भी प्रवेश हो सकता है। दूसरे शब्दों में एक साथ एक से अधिक स्वरों की मध्यान्तर्गत अल्पविवृत्ति सहित सम्भावित उपस्थिति को स्वर संयोग कहते हैं। इस क्षेत्र की बोलियों की रचना प्रणाली की दृष्टि से केवल दो स्वरों का संयोग हो सकता है। तीन स्वर संयोजित नहीं हो सकते हैं अर्थात् 'स्वर + स्वर + स्वर' का क्रम नहीं मिलता है। जब तीन स्वर ध्वनिग्राम एक साथ आते हैं, तब ध्वन्यात्मक दृष्टि से उनमें निम्न परिवर्तन हो जाता है :—

'मध्य स्वर पूर्व स्वर के साथ सम्बद्ध होकर गुच्छ रूप में सन्ध्यक्षर का निर्माण करता है। यथा :—

गइआ ~ गइया। [गइ॒आ ~ गइ॒या]

इस क्षेत्र की बोलियों में शब्द की प्रत्येक स्थिति में स्वर संयोग के उदाहरण समान रूप से प्राप्त हैं, अर्थात् विवृत्ति पश्चा, दो व्यंजनों के मध्य तथा विवृत्ति पूर्व दो स्वरों का सयोग पाया जाता है। यथा :—

विवृत्ति पश्चात । । + आई ।

विवृत्ति पूर्व । । आई + ।

दो व्यंजनों के मध्य । लिआवेगा ~ लिआवैगो ।

यद्यपि सभी स्वरों के संयोग के उदाहरण मिलते हैं किन्तु ये प्रत्येक क्रम से संयोजित नहीं होते हैं। इस सम्बन्ध में निम्न नियम हैं :—

(१) स्वर अपने ही साथ संयोजित नहीं होते हैं अर्थात अ + अ, आ + आ इत्यादि प्रकार से स्वर संयोग के उदाहरण उपलब्ध नहीं हैं।

(२) स्वर अपने दीर्घ स्वरों के साथ संयोजित नहीं होते हैं अर्थात् अ + आ, इ + ई, उ + ऊ, ए + ऐ तथा ओ + औ के स्वर-संयोगों के उदाहरण प्राप्त नहीं हैं।

(३) स्वर-संयोगों के पहले सदस्य के रूप में कोई भी स्वर ध्वनिग्राम आ सकता है, किन्तु स्वर-संयोगों में । अ, इ उ । स्वर ध्वनिग्राम द्वितीय सदस्य के रूप में प्रतिबन्धित रूप में आते हैं :—

[क] अनुनासिक बनकर

/ अं , इं , उं /

यथा :— / आउंगा ~ आउंगो /

इस उदाहरण में यद्यपि /उं/ एक अक्षर का निर्माण कर रहा है, किन्तु यथार्थतः यह स्वर-संयोग का उदाहरण नहीं है। इसका कारण यह है कि

अनुनासिकता एक खंडेतर ध्वनिग्राम है। इस कारण यह केवल दो स्वरो का ही संयोग नहीं, अपितु स्वर के साथ एक खडेतर ध्वनिग्राम का भी संयोग है।

' [ख] यदि शब्द के अन्तिम अक्षर के रूप में आवे। इस स्थिति मे ये व्यंजन-पूर्व आकर अक्षर निर्माण करते है। यथा :—

[सूअर] [Su/ər]

यह उदाहरण निश्चित रूप से दो स्वरों के संयोग का है।

२.११ स्वर संयोगों का समान सांचा

सर्वप्रथम हम ऐसे स्वर-संयोगों का वर्णन करेंगे, जो सातो केन्द्रों मे उपलब्ध होते है, तत्पश्चात् ऐसे स्वर-संयोग का विवेचन करेंगे, जो विशिष्ट केन्द्रों मे ही उपलब्ध होते हैं।

२.१११ प्राथमिक स्थिति में स्वर संयोग

इस स्थिति में प्राप्त सामग्री के आधार पर निम्नलिखित दो स्वर संयोग-रूप मे आते है। इनमें स्वर-संयोग का पहला सदस्य स्वर ध्वनिग्राम / आ / होता है।

/ आ+ई – / / आई /
/आ + ए / / आए /

२.११२ माध्यमिक स्थिति में स्वर-संयोग

इस स्थिति में निम्नलिखित स्वर संयोग उपलब्ध है :—

/ –ऊ+अ– / / सूअर /
/ –उ+आ– / / कुआर /

२.११३ अन्तिम स्थिति में स्वर संयोग ×

इस स्थिति मे निम्नलिखित स्वर संयोग उपलब्ध है :—

/ –ए+ई / / –ओ+ई /
/ –अ+ई /
/ –अ+ए /
/ –आ+ऊ /
/ –आ+ए /
/ –आ+ई /

× प्राथमिक स्थिति के विवृत्ति पूर्व के स्वर-संयोग के उदाहरण को इस स्थिति में भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

उदाहरण सहित ये निम्न प्रकार है :—

/ – ए + ई /	/हमारेई /
/ —अ + ई /	/ गई /
/ —अ + ए /	/ रए /
/ —आ + ई /	/ मिठाई/
/ —आ + ए /	/ खाए /
/ —आ + ऊ /	/ ताऊ /
/ —ओ + ई /	/ कोई /

२.१२ वैशिष्ट्य लक्षण

इस प्रकरण के अन्तर्गत हम ऐसे स्वर-संयोगों का वर्णन करेंगे, जिनके वितरण में क्षेत्रगत विभिन्नताएँ हैं।

२.१२१ प्राथमिक स्थिति में स्वर-संयोग

/आ + ऐ—/ /आऐगा/ केवल बुलन्द० केन्द्र में प्राप्त

/आ + ओ—/ /आओगे/ केवल स्या० केन्द्र में प्राप्त
/आ + औ—/ /आऔगे/ स्या० के अतिरिक्त अन्य केन्द्रों में

२. १२२ माध्यमिक स्थिति में स्वर-संयोग

—इ + आ—/ / लिआवेगा ~ लियावैगौ ~ लियावैगौ। स्या० अगौ० बुलन्द० तथा शि० केन्द्रों में प्राप्त
— ऐ + आ —/ /लैआवेगौ/ खुर० जे० तथा पहा० केन्द्रों में प्राप्त

/—आ + औ —/[१] /लाऔगे/ स्या० केन्द्र को छोड़कर अन्य सभी केन्द्र में प्राप्त

/—आ + ऐ—/१ /जाऐगा/ अगौ० तथा स्या० केन्द्रों को छोड़कर अन्य सभी केन्द्रों में प्राप्त

२.१२३ अन्तिम स्थिति में स्वर-संयोग

/—इ + आ/[२] /बढिया/ स्या०, अगौ० तथा जे० केन्द्रों को छोड़कर अन्य सभी केन्द्रों में प्राप्त

---

१. (आ+औ) के मध्य स्याना केन्द्र में (व्) का आगम हो जाता है। इसी प्रकार (आ+ऐ) के मध्य भी अगौ० तथा स्याना केन्द्रों में '(व्) का आगम हो जाता है।

२. (इ+आ) के मध्य स्याना० अगौ० तथा जे० केन्द्रों में (य) व्यंजन ध्वनि ग्राम का प्रवेश हो जाता है।

/—ऐ+आ/ /रैवैआ/ बुलन्द० में ही प्राप्त

/—ऐ+ओ/ /रैओ, रेवैओ रेबैओ/, शि० खुर० जे० तथा पहा० केन्द्रों में प्राप्त

/—अ+औ/ /कऔ/ बुलन्द०, शि०, खुर० तथा पहा० केन्द्रों में प्राप्त

/—आ+ऐ/ /जाऐ/ अगो० केन्द्र को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र उपलब्ध

/—आ+औ/ /जाऔ/ बुलन्द०, शि०, खुर० तथा पहा० केन्द्रों मे

/—आ+ओ/ /जाओ/ स्या०, अगो० तथा जे० केन्द्रो में

/—ओ+ए/ /सोए/ जे० केन्द्र को छोड़कर अन्यत्र

/—ओ+ऐ/ /होऐ/ स्या० तथा अगो० को छोड़कर अन्यत्र

/—उ+ई/ /हुई/ खुर० को छोड़कर अन्यत्र

/—उ+आ/ /हुआ/ अगो० तथा बुलन्द० केन्द्रों में प्राप्त

/—उ+औ/ /हुऔ/ शि०, जे० तथा पहा० केन्द्रों मे प्राप्त

२. २ संध्यक्षर

यह पहले कहा जा चुका है कि स्वर-संयोग मे स्वर + स्वर का क्रम रहता है एवं दोनों स्वर दो अक्षर का निर्माण करते हैं। इसके विपरीत जब दो स्वर साथ साथ आने पर भी एक ही अक्षर का निर्माण करते हैं, तब वहाँ स्वर एक अखंड इकाई संध्यक्षर का निर्माण करते है। 'वस्तुत: पूर्ण स्वरीय गुच्छ (True Vocalic Cluster) ही संध्यक्षर है।[१]

प्रत्येक उच्चरित शब्द के अन्तर्गत कम से कम एक ऐसी ध्वनि अवश्य होती है, जो सापेक्षिक दृष्टि से अन्य ध्वनियों से अधिक मुखर होती है। ध्वनियों की अधिक मुखरता परम्परागत मुखरता, दीर्घता, बलाघात या विशेष सुर लहर अथवा इन के संयोग के कारण हो सकती है। प्रत्येक ध्वनि जो मुखरता की चोटी पर प्रवेश करती है, अक्षरात्मक कहलाती है। प्रत्येक वाक्य अथवा वाक्यांश में उतने ही अक्षर होते हैं जितनी अक्षरात्मक ध्वनियाँ होती है। दूसरे शब्दों में एक अक्षर उन ध्वनियों के क्रम को कहते हैं जिनके अन्तर्गत एक अक्षरात्मक ध्वनि होती है। सामान्यत: अक्षर की अक्षरात्मक ध्वनि स्वर ही होती है किन्तु व्यंजन भी अक्षरात्मक हो सकते है।[२]

---

१. Archibald A. Hill—Introduction to Linguistic Structure, Page 444.

२. Daniel Jones—An Outline of English Phonetics, Page 55-56, 1962.

यह पहले ही कहा जा चुका है कि प्रस्तुत क्षेत्र की बोलियों में केवल स्वर ही अक्षर केन्द्रक हैं। जब दो स्वर साथ साथ आकर दो अक्षरों का निर्माण करते हैं तो वह अवस्था उन स्वरों के संयोग की होती है। संध्यक्षर में दो स्वरों की अपनी अपनी स्वतन्त्र सत्ता नही रह जाती है। वस्तुतः ध्वन्यात्मक स्तर पर, संध्यक्षर दो स्वरों का संयोग न होकर दो स्वरांशो का एकीकरण होता है। संध्यक्षर एक स्वतन्त्र स्वर श्रुति ध्वनि (Independent Vowel Glide) के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसका उच्चारण वायु के एक झोंके में होता है तथा जबड़ा केवल एक बार हिलता है। स्वर-संयोग में स्वरों के बीच उच्चारण का उतार-चढ़ाव रहता है "किन्तु सन्ध्यक्षर में वाग्यन्त्र एक स्वर स्थान से दूसरे स्वर की दिशा में सीधे मार्ग से जाते हैं।"[१] इनके मध्य, गिराव के पश्चात् चढ़ाव अथवा चढ़ाव के पश्चात् गिराव नही होता है। प्रारम्भ से अन्त तक गिराव अथवा चढ़ाव की गति में एकरूपता रहती है।

इस प्रकार ध्वन्यात्मक स्तर पर संध्यक्षर एक स्वतन्त्र स्वर श्रुति है एवं एक अविभाज्य अखंडित ईकाई है किन्तु ध्वनिग्रामिक स्तर पर, ध्वन्यात्मक अखंडित इकाई, खंडित की जा सकती है।

संध्यक्षर के स्वरांशों में कौन-सा अंश अधिक मुखर है, इस आधार पर संध्यक्षर दो प्रकार के हो जाते हैं :—

[१] आरोही सन्ध्यक्षर (Rising Diphthong)

[२] अवरोही सन्ध्यक्षर (Falling Diphthong)

जब सन्ध्यक्षर का प्रारम्भिक अंश उसके अन्त की अपेक्षाकृत-कम मुखर होता है, तब आरोही सन्ध्यक्षर कहलाता है। इसके विपरीत जब सन्ध्यक्षर का आरम्भ वाला अंश अधिक मुखर होता है, तो उसको अवरोही सन्ध्यक्षर के नाम से पुकारते हैं।

इस क्षेत्र की भाषा के ढाँचे एवं गठन के अनुसार सन्ध्यक्षर का निर्माण निम्न प्रकार से होता है :—

[१] शब्द के अन्तिम अक्षर में स्वर+य् अथवा व् स्वर श्रुतियों के क्रम के रूप में।

[२] स्वर+अ़, इ़, उ़ में से कोई एक स्वर।

[१] स्वर+य् अथवा व् स्वर श्रुतियों का क्रम

१. Daniel Jones—An Outline of English Phonetics, Page 58.

स्वर धन य् अथवा व् स्वर श्रुति के रूप में अवरोही सन्ध्यक्षर का निर्माण होता है। यहाँ यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि जब /य्/ अथवा व् ध्वनिग्राम स्वर पूर्व स्थिति (Pre-vocalic Position) में आते हैं, तो क्या उस स्थिति को आरोही सन्ध्यक्षर के रूप में नहीं माना जा सकता है? भाषा के गठन एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से इस स्थिति में आई हुई [य्] अथवा [व्] श्रुति को अर्द्धस्वर[1] रूप में मानना अधिक संगत है। स्वर पूर्व स्थिति में [य्] एवं [व्] अबाध रूप से व्यंजन-गुच्छ (Consonant Cluster) रूप में भी आते हैं। इस कारण [य्] अथवा [व्] धन स्वर क्रम को अर्द्धस्वर अर्थात् व्यंजन धन स्वर के क्रम रूप में ही गठित किया गया है।

जिन स्थितियों में /य्/ अथवा /व्/ ध्वनिग्राम अर्द्धस्वर रूप में आते हैं, उन्हें इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है :—

[१] शब्द की प्रारम्भिक स्थिति में व्यंजन रूप में आते हैं यथा :—

/यार्/

[२] शब्द की प्रारम्भिक स्थिति के व्यंजन गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में आते हैं। यथा :—

/प्यार्/

[३] किन्हीं दो स्वरों अथवा सन्ध्यक्षर धन स्वर के मध्य रूप में आते हैं :—

/पुलिया/
/भइ्या/

[४] किसी व्यंजन के पश्चात् आते हैं। यथा :—

/नप्वाय्/

इस प्रकार इन स्थितियों में /य्/ एवं /व्/ ध्वनिग्राम व्यंजन वर्ग के

---

१ "एक घोष श्रुति ध्वनि (स्वर श्रुति) जिसके उत्पादन में वाग्यंत्र अपेक्षाकृत कम मुखरता वाले ह्रस्व रूप स्वर, उच्चरित करके तुरन्त दूसरी समान अथवा अधिक मुखर ध्वनि की ओर परिवर्तित होते हैं, अर्द्धस्वर कहलाती है। यह उल्लेखनीय है कि ऐसी ध्वनियाँ निम्न कारणवश व्यंजन रूप में मानी जानी चाहिए :—

(१) अपनी श्रुति प्रकृति के कारण, (२) अपनी ह्रस्वता के कारण, (३) आगे आने वाले स्वर की तुलना में बलाघात के अभाव के कारण।

Daniel Jones—An Outline of English Phonetics, 1962, pp. 24-25.

अर्द्धस्वर रूप में वितरित हैं। इन स्थितियों में इन्हें व्यंजन रूप में मान लेने पर हमारा शब्द एवं अक्षर संरचना सम्बन्धी यह नियम भी ठीक बैठ जाता है :—

यदि शब्द के मध्य में द्विस्वरान्तर्गत कोई व्यंजन आता है अर्थात् 'अ क् अ' का क्रम रहता है, तो व्यंजन अधिकांशतः परवर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होकर अक्षर निर्माण करता है। यथा :—

/पुलिया/

[२] स्वर + अ इ उ में से कोई एक

जिन स्थितियों में /अ, इ, उ/ स्वर ध्वनिग्राम अक्षर संरचना नहीं कर पाते हैं, उन स्थितियों में ये अनक्षरात्मक बनकर सन्ध्यक्षर रूप में प्रवेश पाते हैं।

शब्द की निम्न स्थितियों में /अ, इ, उ/ स्वर ध्वनिग्राम अक्षर संरचना कर सकते हैं :—

[१] शब्द की प्राथमिक स्थिति में आकर

/अब्/ /उम्दा/

(२) शब्द की माध्यमिक एवं अन्तिम स्थिति में व्यंजन अथवा व्यंजनगुच्छ पश्चात् आकर (/अ/ शब्द की अन्तिम स्थिति में व्यंजन पश्चात् नहीं आता है, व्यंजन गुच्छ के बाद आता है)।

/कुऱ्/ /कुली/ /मिल्/ /कुआर/

(३) शब्द की माध्यमिक एवं अन्तिम स्थिति में स्वर पश्चात् ये प्रतिबन्धित रूप में ही अक्षर संरचना कर पाते हैं। प्रतिबन्धित रूप निम्न प्रकार निर्देशित किये जा सकते हैं :—

(क) अनुनासिक बनकर। आउंगी।

/आ / उं / गी/

(ख) शब्द के अन्तिम अक्षर की अक्षरात्मक ध्वनि रूप में अर्थात् जब शब्द की अन्तिम स्थिति में व्यंजन पूर्व आकर अक्षर का निर्माण करें :—

/सूअर/ /सू । अ्र/

इन अवस्थाओं के अतिरिक्त अन्य अवस्थाओं में /अ, इ, उ/ स्वर के साथ संयोजित रूप में नहीं आते हैं, अपितु अनक्षरात्मक बनकर संध्यक्षर रूप में आते हैं।

सभी केन्द्रों में प्राप्त संध्यक्षरों को निम्न रूप में प्रदर्शित कर सकते हैं :—

/आय्/ /काय्/ /खाय्/ /छोराय्/

/आव्/ /पाव्/ /ताव्/

/अइ/ /गइया/ /मइया/ /मढइया/

/उइ/ /चुइया/
/उअ/ /सुअरिया/
/अउ/ /कउवा/
/आउ/ /टिकाउ/

इन्हें ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन में इस प्रकार अंकित किया जा सकता है : —

[आ य्] [काय्] [खाय्] [छोराय्]
[आ व्] [पाव्,] [ताव्]
[अ इ्] [गइ्या] [मइ्या] [मढइ्या]
[उ इ्] [चुइ्या]
[उ अ्] [सुअ्रिया]
[अ उ्] [कउ्वा]
[आउ्] [टिकाउ्]

भाषा में अन्य प्रकार के स्वर धन स्वर क्रम स्वरसंयोग के उदाहरण है।

२.३ **व्यंजन-गुच्छ** (Consonant Cluster)

व्यंजन-गुच्छ से तात्पर्य व्यंजनों की उस उपस्थिति मे है, जहाँ दो या दो से अधिक व्यंजन इकट्ठे आयें और उनके बीच कोई स्वर ध्वनिग्राम अथवा खण्डेतर ध्वनिग्राम न आ पाये।

व्यंजन गुच्छ शब्द की किस स्थिति में है, इसका निर्णय अल्प विवृत्ति द्वारा होता है। उदाहरणार्थ—अगर हमें "कच्चा" उच्चार में /—च्च्- /व्यजन-गुच्छ मिलता है, तब यह मध्य व्यंजन-गुच्छ अथवा द्विस्वरान्तर्गत व्यंजन-गुच्छ है, क्योंकि गुच्छ के पहले और बाद में कोई विवृत्ति नहीं है। अगर / कच्चा/ उच्चार को कोई वक्ता या भाषा समुदाय। क+च्चा। रूप में उच्चरित करता है, तो उस व्यक्ति या भाषा समुदाय द्वारा उच्चरित रूप में यह गुच्छ / च्च् / आदि अथवा विवृत्ति पश्चात् स्वर पूर्व रूप में माना जायेगा। इसके विपरीत यदि [कच्च्+आ] रूप में उच्चारण होता है, तो प्राप्त गुच्छ [— अच्च्।] अन्त्य अथवा स्वर पश्चात् विवृत्ति पूर्वरूप में माना जायेगा।

इस क्षेत्र की बोलियों की ध्वन्यात्मक प्रणाली के अनुसार व्यंजन शब्द की अन्तिम स्थिति में गुच्छ निर्माण नहीं करते हैं। दूसरे शब्दों में विवृत्ति पूर्व व्यंजन-गुच्छ भाषा के अन्दर नहीं मिलते हैं। इसका कारण यह है कि जब स्वर धन व्यंजन-गुच्छ का क्रम होता है, तो [अ] स्वर ध्वनिग्राम का अवश्यम्भावी रूप से निस्तार हो जाता है।

प्राप्य व्यंजन-गुच्छों को हम दो भागों में बाँटकर वर्णित कर सकते हैं :—

(१) आदि अथवा विवृत्ति पश्चात् स्वर पूर्व व्यंजन गुच्छ

(२) द्विस्वरान्तर्गत व्यंजन गुच्छ

२.३१ विवृत्ति पश्चात् स्वर पूर्व व्यंजन गुच्छ (Post Junctural Prevocalic Consonant Clusters)

सर्वप्रथम हम व्यंजन-गुच्छों का वर्णन विवृत्ति पश्चात् स्वर पूर्व गुच्छों से करेंगे। सामान्य रूप से इस वर्ग को शब्द की प्राथमिक स्थिति के नाम से भी अभिहित कर सकते हैं। इस स्थिति में प्राप्त व्यंजन गुच्छ भी दो प्रकार के हैं। एक ऐसे हैं, जो सभी केन्द्रों में प्रयुक्त होते हैं तथा दूसरे वे हैं, जो विशिष्ट केन्द्रों में ही उपलब्ध हैं। इन्हीं आधारों पर हम इस स्थिति के व्यंजन गुच्छों को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं :—

२.३११ समान सांचा

/प्य्—/
/ध्य्—/
/ज्व्—/
/क्य्—/ /क्व्—/
/ग्य्—/
/न्य्—/ /न्ह्—/
/म्य्—/

उदाहरण सहित इन्हें इस रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है :—

स्पर्श + अर्द्धस्वर /य्/
/प्य्—/ /प्यास्/
/ध्य्—/ /ध्यान्/
/क्य्—/ /क्यारी/
/ग्य्—/ /ग्यारह्/
नासिक्य + अर्द्धस्वर /य्/
/न्य्—/ /न्यार्/
/म्य्—/ /म्यान्/
स्पर्श + अर्द्धस्वर /व्/
/ज्व्—/ /ज्वार्/
/क्व्—/ /क्वार्/

नासिक्य +संघर्षी व्यंजन / ह् /
/ न्ह् — / / न्हाई /

२.३१२ वैशिष्ट्य लक्षण

स्पर्श+अर्द्धस्वर / य् /
/ त्य्—/ / त्याग् / जे० केन्द्र को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध
/ ज्य्—/ / ज्यादा / जे० केन्द्र को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध
संघर्षी +अर्द्धस्वर / य् /
/ स्य् — / / स्यार् / अगौ०, बुलन्द०, शि०, तथा पहा० केन्द्रों में उपलब्ध
स्पर्श+अर्द्धस्वर / य् /
/ द्व् — / द्वार् / केवल बुलन्द० केन्द्र में उपलब्ध
/ ग्व्—/ / ग्वाला / केवल बुलन्द० केन्द्र० मे उपलब्ध
संघर्षी +अर्द्धस्वर / व् /
/ स्व् - / / स्वाद् / स्या० को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध

२.३२ द्विस्वरान्तर्गत व्यंजन-गच्छ (Intervocally Consonant Clusters)

द्विस्वरान्तर्गत व्यंजन गुच्छों का अर्थ ऐसे गुच्छों से है जिनके तुरन्त पूर्व या तुरन्त पश्चात् कोई विवृत्ति नहीं आती है तथा जिनके मध्य किसी स्वर अथवा खंडेतर ध्वनिग्राम का प्रवेश नहीं होता है। उदाहरणार्थ, यदि किसी भाषा में प्रयुक्त 'उप्पर' तथा 'कम्बल' उच्चारों को क्रमशः / उप्पर् / तथा / कम्बल् / रूप में उच्चरित किया जाता है तो निश्चित रूप से इन उच्चारों में प्रयुक्त। / प्प् / एवं / म्ब् / द्विस्वरान्तर्गत या मध्य व्यंजन गुच्छ है, क्योंकि गुच्छके पूर्व या पश्चात कोई विवृत्ति नहीं है तथा मध्य में भी किसी विवृत्ति अथवा खंडेतर ध्वनिग्राम का प्रवेश नहीं हो रहा है।

प्रस्तुत क्षेत्र की बोलियों का विवेचन करते समय यह मान लिया गया है कि द्विस्वरान्तर्गत रूप में जब दो व्यंजन ध्वनिग्रामों का क्रम होता है तो उनके मध्य से आक्षरिक विभाजन होता है। 'शब्द एवं अक्षर संरचना' प्रकरण में तत्सम्बन्धी निम्न नियम है :

'जब शब्द के मध्य में कोई व्यंजन-गुच्छ आता है, तब गुच्छ का पूर्ववर्ती व्यंजन पूर्ववर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होता है। दूसरे शब्दों में द्विस्वरान्तर्गत जब दो व्यंजन आते हैं, तब आक्षरिक विभाजन सदैव एक व्यंजन के बाद से होता है।

यहाँ यह समस्या उठायी जा सकती है कि द्विस्वरान्तर्गत यदि दो व्यंजन

ध्वनिग्रामों के मध्य से आक्षरिक विभाजन होता है, तो इस स्थिति के दो व्यजन ध्वनिग्राम क्रम को आदि एवं अन्त्य तत्त्वो में खडित रूप मे माना जाए अथवा गुच्छ रूप में ही स्वीकृत किया जाए।

इस समस्या का निदान यह है कि आक्षरिक-विभाजन कोई ध्वनिग्राम नहीं है, इस कारण द्विस्वरान्तर्गत दो व्यंजन ध्वनिग्राम क्रम निश्चित रूप से गुच्छ का निर्माण करते है, भले ही इसके सदस्य व्यंजन, जिनमे इसका निर्माण हुआ है, भिन्न अक्षरों के साथ सम्बद्ध हो, अर्थात् व्यंजन-गुच्छ का एक सदस्य एक अक्षर के साथ तथा गुच्छ का दूसरा सदस्य दूसरे अक्षर के साथ आ सकता है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यदि द्विस्वरान्तर्गत दो व्यंजन ध्वनिग्रामों के मध्य अल्पविवृत्ति का प्रवेश होता है, तो उन व्यंजन ध्वनिग्रामों के क्रम को गुच्छ रूप में स्वीकृत न कर आदि एवं अन्त्य तत्त्वों मे खडित माना गया है।

यथा :—

[बना] - निर्मित

[बन + ना] = निर्माण

[बन्ना] = वर्

यहाँ दूसरे तथा तीसरे उच्चारों में द्विस्वरान्तर्गत आए हुए ध्वनिग्रामों की स्थिति को निम्न रूप में, स्पष्ट किया जा सकता है :—

[बन् + ना] = [—न् + न् —]

[बन्ना] = [— न्न —]

यहाँ [— न् + न्—] गुच्छ रूप में न होकर शब्द के आदि एवं अन्त्य तत्त्वों में खन्डित रूप में है तथा /—न्न्—/ पूर्ण रूप से द्विस्वरान्तर्गत व्यंजन-गुच्छ रूप में है।

इस सामान्य वर्णन के पश्चात् अब हम द्विस्वरान्तर्गत आए हुए व्यंजन-गुच्छों का वर्णन सुविधानुसार दो मुख्य भागों मे बाँटकर वर्णित कर सकते है :—

/१/ व्यंजन द्वित्व गुच्छ

/२/ भिन्न व्यंजन-गुच्छ

२.३२१ व्यंजन द्वित्व गुच्छ

इसके अन्तर्गत एक ही व्यंजन ध्वनिग्राम दो बार बिना किसी स्वर अथवा

खंडेतर ध्वनिग्राम के मध्यस्थ आए आता है ।[१] इन गुच्छों का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है :—

२ः३२११ समान सांचा

स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम | स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम

/—प्प्—/ /थप्पड़्/ /लप्पर्/

/—ब्ब्—/ /बब्बू/ /डिब्बा/

/—त्त्—/ /लत्ता/ /छत्ता/

/—द्द्—/ /गद्दा/ /नद्दी/

/—ट्ट्—/ /मट्टी/ कलट्टर्/

/—ठ्ठ्—/ /लठ्ठा/ /अठ्ठारे/

/—ड्ड्—/ /अड्डा / /लड्डू /

/—च्च्—/ /कच्चा ~कच्चौ/ /बच्चा/

/—ज्ज्—/ /सज्जा/ /लज्जा/

/—क्क्—/ /चक्कर्/ /पक्की/

/—ग्ग्—/ /बग्गी/ /लग्गा/

नासिक्य व्यंजन ध्वनिग्राम | नासिक्य व्यंजन ध्वनिग्राम

/—म्म्—/ /उम्मीद्/ /जिम्मेदार्/

/—न्न्—/ /गवन्नर्/ /मुन्ना/

सघर्षी व्यंजन ध्वनिग्राम+संघर्षी व्यंजन ध्वनिग्राम

/—स्स्—/ /किस्सा/ /हिस्सा/

पार्श्विक व्यंजन ध्वनिग्राम+पार्श्विक व्यंजन ध्वनिग्राम

/—ल्ल्—/ /हल्ला/ /चिल्लाहट्/ ।

लुंठित व्यंजन ध्वनिग्राम+ लुंठित व्यंजन ध्वनिग्राम

/—र्र्—/ /बघर्रा/ /कर्रा/

२.३२१२ वैशिष्ट्य लक्षण

स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम+स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम

/—छ्छ्—/ /बिछ्छु/ /मछ्छर्/ /अगी०, स्या०, खुर० तथा जे० में उपलब्ध ।

---

१. इस स्थिति को कुछ भाषा-शास्त्रियों ने गुच्छ के रूप में स्वीकार नहीं किया है । /—त्त—/ स्थिति को कुछ विद्वान् 'व्यंजन दीर्घता', कुछ 'व्यंजन द्वित्व', कुछ 'व्यंजन-अनुक्रम' तथा कुछ 'व्यंजन संयोग' के नाम से पुकारते हैं; मैंने इसे व्यंजन द्वित्व गुच्छ के नाम से पुकारा है ।

/--ख्ख—/ /लिख्खो, लिख्खी/ /स्या० बुलन्द० शि० सुर० में उपलब्ध/

२.३२२ भिन्न व्यंजन-गुच्छ

इसके अन्तर्गत दो भिन्न व्यंजन ध्वनिग्राम एक साथ आते हैं। इन गुच्छों का वर्णन निम्न प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं :—

२.३२२१ समान सांचा

२.३२२ स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम | व्यंजन ध्वनिग्राम

स्पर्श | स्पर्श

/—प्त्—/	/कप्तान्/
/—प्ट्—/	चप्टा, चप्टी/
/—प्क्—/	/चुप्का/
/—ब्भ—/	/भब्भड्/
/—ब्द्—/	/अब्दुल्/
/—ब्ट्—/	/निब्टा/
/—ब्ज्—/	/कब्जे/
/—ब्क्—/	/दुब्का/
/—त्थ्—/	/कत्था/
/—ट्ठ्—/	/ पट्ठा /
/—ट्क्—/	/ मट्का /
/—ड्ढ्—/	/ गड्ढा /
/—च्क्—/	/ हिच्की /
/—ग्घ्—/	/ बग्घी /

स्पर्श+नासिक्य

/—त्म्—/	/ आत्मा /
/—प्न्—/	/ सप्ना /

स्पर्श+संघर्षी

/—फ्स्—/	/ अफ्सर /
/—क्स्—/	/ नक्सा /
/—ख्स्—/	/ सख्स /

स्पर्श+लुंठित

/—त्र्—/	/ पत्रा /

२.३२२१२ संघर्षी व्यंजन ध्वनिग्राम+व्यंजन ध्वनिग्राम

संघर्षी+स्पर्श

/—स्ब्—/	/ कस्बा /
/—स्त्—/	/ रस्ता /
/—स्क्—/	/ चस्का/
/—स्ग्- /	/ पेस्गी /

संघर्षी+नासिक्य

/—स्म्—/	/ चस्मा /
/—स्न—/	/ बिस्ना /

२.३२२१३ नासिक्य व्यंजन ध्वनिग्राम+व्यंजन ध्वनिग्राम

नासिक्य+स्पर्श

/—म्प्—/	/ चम्पी /
/—म्फ्- /	/ जम्फर्/
/—म्ब्—/	/ कम्बल्/
/—म्द्—/	/ उम्दा /
/—म्ध्--/	/ सम्धी /
/—म्ट्—/	/ चीम्टा /
/—म्च्—/	/ चम्चा /
/—म्क्—/	/ झूम्का /
/—न्ब्—/	/ कुन्बा /
/—न्त्—/	/ जन्ता /
/—न्ध्—/	/ कन्धा /
/—न्द्—/	/ पसन्द /
/—न्ट्—/	/ घन्टा /
/—न्ठ्—/	/ कन्ठी /
/—न्ड्—/	/ डन्डा /
/—न्च्—/	/चन्चल्/
—न्ज्—/	/गन्जी /
/—ङ्-क्—/	/सङ्का/
/—ङ्-ख्—/	/ पङ्खा/
/—ङ् ग्—/	/सङ्ग /

/- ङ् घ् -/ / कङ्घा/

नासिक्य | संघर्षी

/—न्स् -/ / जिन्स /

नासिक्य + पार्श्विक

/—म्ल्—/ / गम्ला /

२.३२२१४ पार्श्विक व्यंजन ध्वनिग्राम + व्यंजन ध्वनिग्राम

पार्श्विक | स्पर्श

/—ल्ब्—/ / मल्बा /

/—ल्थ्—/ / पल्थी /

/—ल्द्—/ / हल्दी /

/—ल्ट्—/ / पल्टा /

/—ल्ड्—/ / डाल्डा /

/—ल्छ्—/ / कल्छी /

पार्श्विक + संघर्षी

/—ल्स्—/ / कल्सा /

पार्श्विक + अर्द्धस्वर

/—ल्व्—/ / सिल्वार् /

२.३२२१५ लुंठित व्यंजन ध्वनिग्राम + व्यंजन ध्वनिग्राम

लुंठित + स्पर्श

/—र्प—/ / खुर्पी /

/—र्फ्—/ / बर्फी /

/—र्त—/ / पर्ता /

/—र् थ्—/ / अर्थी /

/—र्द्—/ /मुर्दे/

/—र्च्—/ खर्चा/

/—र्छ्—/ /बर्छी/

/—र्ज्—/ /दर्जी/

/—र्क्—/ /सिर्की/

/—र्ख्—/चर्खा/

/—र्ग्—/ /मुर्गी/

लुंठित + संघर्षी

/—र्स्—/ /कुर्सी/

लुंठित +नासिक्य

/—र्म्—/ /सुर्मा/

लुंठित+अर्द्धस्वर

/—र्व्—/ /कर्वा चौथ्/

२.३२२२ वैशिष्टय लक्षण

स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम +स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम

/—प्फ्—/ /कप्फ्न्/ जे० को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध

/—प्च्—/ /उप्चार् / बुलन्द०, अगी० शि० तथा पहा० मे उपलब्ध ।

/—द् क्—/ /बुद्का/ जे० को छोड़कर अन्यत्र

/—च्छ्—/ /मच्छर्/ बुलन्द० शि० तथा पहा० में उपलब्ध

संघर्षी व्यंजन ध्वनिग्राम+व्यंजन ध्वनिग्राम

संघर्षी+स्पर्श

/—स्प् –/ /निस्पत्/ स्या०, अगी० तथा खुर० में उपलब्ध

/–स्थ्—/ /अस्थान्/ अगी०, बुलन्द० शि०, खुर०, तथा पहा० में

/—स्द्—/ /तस्दीक्/ बुलन्द० शि० खुर० तथा पहा० मे उपलब्ध

/—स्च—/ /मिस्चर्/ स्या०, अगी०, बुलन्द०, शि० तथा पहा० मे

संघर्षी +पार्श्विक

/—स्ल्—/ /कस्ला/ जे० को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध ।

संघर्षी+अर्द्धस्वर

/—स्व्—/ /रिस्वत्/ बुलन्द०, शि०, जे०, तथा पहा० में .

नासिक्य व्यजन ध्वनिग्राम+स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम

/– म्भ्—/ /अचम्भा/ जे० को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध

/—न्ढ्—/ /ठन्ढ/ बुलन्द०, शि०, तथा पहा० में

/—न्छ्—/ /पन्छी/ अगी०, बुलन्द०, शि० जे०, पहा० में

/—न्झ्—/ /झन्झट्/ जे० को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध

/—न्ख—/ /कन्खी/ जे० को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध

पार्श्विक व्यंजन ध्वनिग्राम+स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम

/—ल्प्—/ /सुल्पा/ जे० में उपलब्ध

/—ल्फ्—/ /सुल्फा/ जे० को छोड़कर अन्यत्र उपलब्ध

लुंठित व्यंजन ध्वनिग्राम |-स्पर्श व्यंजन ध्वनिग्राम

/ र् घ् / /कर्घा/ स्या०, अगो०, जे० तथा पहा० में

२.२३२ निष्कर्ष

इस क्षेत्र की बोलियों में प्राप्त द्विस्वरान्तर्गत व्यंजन गुच्छों से यह सामान्य निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस क्षेत्र की बोलियों मे व्यंजन-गुच्छ के प्रथम सदस्य के रूप में घोष महाप्राण व्यंजन ध्वनिग्राम/भ्, ध्, ढ्, झ्, घ् /तथा अर्द्धस्वर /व्, य्/ तथा व्यंजन-गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में कंठ्य नासिक्य व्यंजन ध्वनिग्राम /ङ/ तथा वत्र्यं तालव्य अर्द्धस्वर व्यंजन ध्वनिग्राम /य्/ कभी नहीं आते हैं ।

३. सन्धि विचार (MORPHOPHONEMICS)

३. 'प्रत्येक उच्चार ध्वनिग्रामिक गठन (Phonemic-Structure) एवं व्याकरणिक गठन (Grammatical Structure) को संजोए रहता है। उच्चार का ध्वनिग्रामिक गठन अपनी भाषा के ध्वनिग्रामिक सांचे (Phonemic-Pattern) अथवा गठन (Structure) के स्वरूप को तथा उसका व्याकरणिक गठन भाषा के व्याकरणिक सांचे या गठन को किसी न किसी रूप में प्रतिबिम्बित करता है। ध्वनिग्रामिक गठन और व्याकरणिक गठन के मध्य जो पारस्परिक सम्बन्ध होता है वह सम्बन्ध उस भाषा के सन्धि के सांचे (Pattern of Morphophonemics) को किसी न किसी सीमा तक प्रतिबिम्बित करता है।'[1]

वस्तुतः पद या पदग्रामों की इकाईगत ध्वन्यात्मक स्थिति, और उनके यौगिक रूप की ध्वन्यात्मक स्थिति में जो अन्तराल एवं वैभिन्य होता है, उस वैभिन्य के कारणों का एवं वैभिन्य के गठन का अध्ययन ही सन्धि विचार है। दूसरे शब्दों में पदग्रामिक इकाइयों में, सन्धिगत अवस्था में हुए ध्वन्यात्मक परिवर्तनों का अध्ययन, संधि विचार का क्षेत्र है। पदग्रामिक संरचना में जब दो से अधिक पदों (Morphs) का योग होता है तो यौगिक प्रक्रिया में प्रायः अग्रगामी पद की अन्तिम ध्वनि तथा अनुगामी पद की आरम्भिक ध्वनि में कुछ परिवर्तन हो जाया करता है। इन परिवर्तनों के कारण ध्वन्यात्मक, पदग्रामिक और कभी कभी कुछ ही शब्दों की अपनी विशिष्टताओं के कारण शब्दकोषीय हुआ करते है। दूसरे शब्दों में ध्वन्यात्मक परिवर्तन ध्वन्यात्मक, पदग्रामिक अथवा शब्दकोषीय रूपों में किसी एक अथवा एक से अधिक कारणों से होते हैं।

प्रस्तुत अध्याय में हम पदग्रामिक संरचना तक की सन्धि, अर्थात् पदग्रामिक संरचना में आए हुए दो या दो से अधिक पदों की संहिति में हुए ध्वन्यात्मक परिवर्तनों पर विचार करेंगे :

३.१ व्युत्पादक प्रत्यय सन्धि विचार

३.११ पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग) सन्धिविचार

३.१११ ध्वन्यात्मक एवं पदग्रामिक रूप से प्रतिबन्धित :

[१] 'क् अ क्' क्रम वाले एकक्षरीय उच्चार में यदि स्वर /आ/ होता है

---

1. C. F. Hockett—A Course in Modern Linguistics, page 142.

तो {नि—} पूर्व प्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया में, उच्चार मे निम्न ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाते हैं :

[क] आ>अ

[ख] अन्तिम व्यंजन का द्वित्व रूप हो जाता है।

[ग] अन्तिम व्यंजन यदि महाप्राण होता है तो अल्पप्राण हो जाता है। यथा :

नि—+—काम्>निकम्म्—+—आ^1>निकम्मा

नि—+—हाथ्>निहत्—+—आ^1<निहत्ता

[२] 'क् अ क्' क्रम वाले एकक्षरीय उच्चार में यदि स्वर /अ/ होता है तो उसमें {दु—} पूर्वप्रत्यय जोड़ने पर /अ/ स्वर का लोप हो जाता है :

दु—+—बल्>दुब्ल्—+—आ^1>दुब्ला

३.११२ पदग्रामिक एवं शब्दकोषीय रूप से प्रतिबन्धित

[३] यदि [जन्] मूल प्रातिपदिक में {स^2—} पूर्व प्रत्यय जोड़ा जाता है तो मूल प्रातिपदिक के आदि व्यंजन का द्वित्व रूप हो जाता है :

स^2—+—जन्>सज्जन्

[४] बीस्, तीस्, चालिस्; पचास, साठ~साट्, सत्तर, अस्सी (पूर्णांक गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणों) मे जब पूर्वप्रत्यय {उन्—} जोड़ा जाता है तो संख्यावाचक विशेषणों में, क्रमशः निम्न प्रकार से ध्वन्यात्मक परिवर्तन होते हैं :

बीस्>निस्=उन्—+—बीस्>उन्निस्

तीस्>तिस्=उन्—+—तीस्>उन्तिस्

चालिस्>तालिस्=उन्—+—चालिस्<उन्तालिस्

पचास्>चास्=उन्—+—पचास्>उन्चास्~

उडन्चास (उन्>उडन्)

साठ्~साट्>सठ्~सट्=उन्—+—साठ्>उन्सठ्

सत्तर्>हत्तर्=उन्—+—सत्तर>उन्हत्तर

अस्सी>आसी=उन्—+—अस्सी>उनासी

[५] अगौता केन्द्र में जब ।—ङ्गै~ङ्गै मूल अव्यय प्रातिपदिक में /.इ—/ व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय जुड़ता है तो पूर्वप्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया मे इ>न्यू में परिवर्तित हो जाता हैं। यह ध्वन्यात्मक परिवर्तन केवल अगौ० केन्द्र तक ही सीमित है। यथा :

इ—+—ङ्गै>न्यूङ्गै

[६] स्या० तथा अगौ० केन्द्रों में जब काल सूचक मूल प्रातिपदिक ।ब्। में ।क्—। व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय जुड़ता है तो ब्>द् में परिवर्तित हो जाता है:

क्—+—ब्>कद्

३.१२ व्युत्पादक परप्रत्यय सन्धिविचार

३.१२१ ध्वन्यात्मक रूप मे प्रतिबन्धित

[७] "अ क् अ क्" अथवा "क् अ क् अ क्" क्रम वाले द्वयक्षरीय उच्चारों मे यदि दूसरे अक्षर का स्वर ।अ। होता है तो स्वर से प्रारम्भ होने वाले परप्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया मे दूसरे अक्षर के स्वर ।अ। का, लोप हो जाता है :

दूसर्—+—आ दूस्रा
करम्—+—ई> कर्मी
अट्क्—+—आव्>अट्काव्
काजर्—+—औटा> कज्रौटा

[८] ईकारान्त मूल प्रातिपदिक मे जब /इ/ से आरम्भ होने वाला व्युत्पादक परप्रत्यय जोड़ा जाता है तो ईकारान्त प्रातिपदिक व्यंजनान्त हो जाता है :

डाढी—+—इयल्> डढियल्

३.१२२ ध्वन्यात्मक एवं पदग्रामिक रूप से प्रतिबन्धित :

[९]—{आर्,—औना,—आर्,—आरी,—आवन्,—आस्—इआ,—इया,—ऊ,—ऐल्,—ची,—हारी} व्युत्पादक परप्रत्ययों के जुड़ने पर आकारान्त प्रातिपदिक व्यंजनान्त हो जाते है यथा :

बिछा—+—औना> बिछौना
जूआ—+—आरी> जुआरी
बिछा—+—आवन्> बिछावन्
खजाना—+—ची> खजान्ची
लम्बा—+—ऊ>लम्बू
गुस्सा—+—ऐल्> गुस्सैल्। आदि

[१०] {ऐत्} परप्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया में स्वरान्त प्रातिपदिक व्यंजनान्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि प्रातिपदिक के अन्त्य मे स्वर पूर्व व्यंजन का द्वित्व रूप होता है तो एक ही व्यजन शेष रह जाता है। यथा :

लठ्ठ—+—ऐत्>लठैत्
डाँका—+—ऐत्>डकैत्

[११] {—इया} परप्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया में प्रातिपदिक के अन्त्य के व्यंजन गुच्छ के प्रथम सदस्य का लोप हो जाता है। यथा :

बुड्ढ—+—इया>बुढिया

[१२] एकारान्त प्रातिपदिक में जब {—ल्} परप्रत्यय जोड़ा जाता है तो प्रातिपदिक व्यंजनान्त हो जाता है :

आगे—+—ल्>अग्ल्+आ>अग्ला

[१३] एकारान्त प्रातिपदिक में जब {—आडी} पर प्रत्यय जोड़ा जाता है तो प्रातिपदिक व्यंजनान्त हो जाता है :—

आगे—+—आडी>अगाडी
पिछे—+—आडी>पिछाडी

[१४] {— अक्कड्, — आई, — आर्, — आरी, -- आस्~यास्, — आरिन्, — आडी — आवा, — एर्, —ऐत्, — औती, — औरा, — औड्, — औना, — पा, —ड्, — सार्, —हारी, —ईच्, —इयल्, —ईल्, —उआ, —डी, —आ} इत्यादि

व्युत्पादक परप्रत्यय जिन प्रातिपदिकों में जुड़ते हैं, उन प्रापितदिकों के प्रथम अक्षर के स्वरों में निम्न प्रकार से परिवर्तन हो जाता है :

ई, ए>इ
ऊ, ओ>उ
आ>अ

यथा :

पी—+—अक्कड्>पिअक्कड्
मीठा—+—आई>मिठाई
भीख्—+—आरी>भिकारी
मीठा—+—आस्>मिठास्
पीछे—+—आडी>पिछाडी
पीसना—+—हारी>पिसन्हारी
खेल्—+—आरी>खिलारी
खेल्—+—औना>खिलौना
घूम्—+—अक्कड्>घुमक्कड्
ऊँचा—+—आई>उँचाई
जूआ—+—आरी>जुआरी
भूल्—+—आवा>भुलावा
बूढा—+—आपा>बुढापा
दूध्—+—आर्>दुधार्
धो—+—आई>धुआई
सोना—+—आर्>सुनार्

बोल्—+—आवा बुलावा
मोटा— —आपा मुटापा
घोड़ा—+—सार घुड़सार्
चाम्—+—आर् चमार्
चाम्—+—आरिन् चमारिन्
आगे—+—आड़ी अगाड़ी
काम्—+—एर् कमेर्
डाँकू—+—ऐत् डकैत्
काट्—+—औती कटौती
काजर्—+—औटा कजरौटा
हाथ्—+—औड हथौड़्—+—आ हथौडा
चाम्—+—ड् चम्ड+आ चम्डा
पानी—+—हारी पनिहारी
बाग्—+—ईच् बगीच्—+आ बगीचा
डाढ़ी—+—इयल् डढ़ियल्
गाठ्—+—ईल् गँठील्+—आ गठीला
भाड़्—+—उआ भडुआ
भाडग—+—डी भडगडी

(१५) मूल धातुओ मे जब सकर्मक धातु परप्रत्यय {-ϕ}[1] जोड़ा जाता है तो मूल धातु के स्वरों में निम्न प्रकार का ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाता है :

इ>ए
ऊ>ओ
अ>आ

यथा :

बिक्—+—ϕ१>बेच्
फूट्—+—ϕ१>फोड़्
कट्—+—ϕ१>काट्

---

१ शून्य {—ϕ'} परप्रत्यय के स्थान पर इसको मध्य प्रत्यय योजना के रूप में सैद्धान्तिक दृष्टि से स्वीकार किया जा सकता है, किन्तु चूंकि इस क्षेत्र की बोलियों में मध्य प्रत्यय योजना अपवाद स्वरूप है, इसी कारण इसकी विवेचना शून्य परप्रत्यय के रूप में की गयी है।

(१६) जब मूल धातुओं में प्रेरणार्थक परप्रत्यय {—आ} अथवा द्विगुणित प्रेरणार्थक परप्रत्यय {—वा} जोड़ा जाता है तो मूल धातुओं मे निम्न प्रकार से ध्वन्यात्मक परिवर्तन होता है :

(क) 'क् अ क्' क्रम स्वर वाले एकक्षरीय उच्चार में आ तथा ऊ दीर्घस्वर क्रमशः ह्रस्वस्वर अ तथा उ में बदल जाते हैं।

यथा :

आ>अ
जाग्—+—आ> जगा
जाग्—+—वा> जग्वा
ऊ>उ
घूम्—+—आ>घुमा
घूम्—+—वा>घुम्वा

(ख) 'क् अ' क्रम वाले एकक्षरीय उच्चार के स्वरों में निम्न परिवर्तन हो जाते हैं :

आ>इल्~अव्
ई>इल्
ए>इल्~इव्
ओ>उल्~उव्

इन स्वरों के ध्वन्यात्मक परिवर्तनों के सम्बन्ध में एक ओर प्रतिबन्धन है, वह यह कि यदि 'क् अ' क्रम वाली धातु में व्यंजन /ग्/ अथवा /ल्/ है तो उसके आगे का स्वर सदैव स्वर+ व् में परिवर्तित होता है।

यथा :

खा—+—इला>खिला
गा—+—वा>गवा
पी—+—आ>पिला
दे—+—आ>दिला
सो—+—आ<सुला
ले—+—आ>लिवा

[१७] कंठ्य अघोष महाप्राण से अन्त होने वाले प्रातिपदिक अथवा धातुओं में जब {– आरी, – तर, —ठा} परप्रत्यय जोड़े जाते हैं तो महाप्राण>अल्पप्राण में परिवर्तित हो जाता है। यथा:

भीख्—+—आरी>भिकारी

सीख् + तर् सीक्तर्

सूख + ठा सूक्ठा

३.१२३ पदग्रामिक एवं शब्द कोषीय रूप में प्रतिबन्धित :

आगे के ध्वन्यात्मक परिवर्तन शब्दकोषीय रूप में प्रतिबन्धित है। इनका विस्तृत अध्ययन तो शब्दकोष अध्ययन में सम्भव हो सकता है। सम्प्रति, इस प्रकार की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जा रहा है।

[१८] /य्/ का आगम

जब /पी/ धातु मे {—आस्} परप्रत्यय जोड़ा जाता है तो /य्/ का आगम हो जाता है :

पी- +-- आस् पियास्

[१९] /व/ का आगम

जब /बो/ धातु मे {—आई} परप्रत्यय जोड़ा जाता है तो /व्/ का आगम हो जाता है :

बो + आई बुवाई

[२०] अनुनासिकता का आगम

{क्रम द्योतक परप्रत्यय} के [व्] के पश्चात जब विशेषण स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक {ई³} जोड़ा जाता है तो {ई} अनुनासिक हो जाता है :

पांच् + - व् + - ईं पांचवीं

[२१] जब /ढक्/ धातु मे { -अन्} परप्रत्यय जोड़ा जाता है तो यौगिक प्रक्रिया मे धातु के अन्तिम व्यंजन /क्/ का द्वित्व रूप हो जाता है :

ढक् +—अन् > ढक्कन्

[२२] जब /चिल्ल/ /तङ्ग/ अकारान्त प्रातिपदिकों में क्रमशः { आहट्} तथा {- ई} परप्रत्यय जोड़े जाते हैं तो प्रातिपदिक व्यजनान्त हो जाते है :

चिल्ल- + —आहट् > चिल्लाहट्

तङ्ग—+—ई>तङ्गी

[२३] जब /पाच्/ /सात्/ तथा /आठ्/ गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणो मे {—गुन्} परप्रत्यय का योग होता है तो प्रातिपदिकों का आ > अ मे बदल जाता है। यथा :

पाँच्—+—गुन्>पंच्गुन्—+आ>पँचगुना

[२४] जब /इक्का/ में {वान्} परप्रत्यय जुड़ता है तो प्रातिपदिक का आ> ए मे परिवर्तित हो जाता है :

इक्का—+—वान्>इक्केवान्

[२५] जब /छै/ में /ट्/ परप्रत्यय जुड़ता है तो प्रातिपदिक का ऐ>अ में परिवर्तित हो जाता है :

छै—+—ट्>छट्

[२६] जब /दो/ में {—सर्} परप्रत्यय का योग होता है तो ओ>ऊ में परिवर्तित हो जाता है :

दो—+—सर्>दूसर्—+—आ>दूस्रा

[२७] जब /दो/ में {—गन्,—ऐर्,—हेर्,} प्रत्ययों का योग होता है तो ओ>उ में परिवर्तित हो जाता है :

दो—+—गन्>दुगन्

दो—+—ऐर्>दुऐर्

[२८] जब /तीन्/ में {—सर्} परप्रत्यय जोड़ा जाता है तो ईन्> ई मे परिवर्तित हो जाता है :

तीन्—+—सर्>तीसर्—+आ>तीस्रा

[२९] जब /तीन्/ में {—गुन्,—ऐर्,—हैर्} परप्रत्यय जोड़े जाते हैं तो ईन्>इ में परिवर्तित हो जाता है :

तीन्—+—गुन्>तिगुन्

तीन—+—ऐर्>तिऐर्—

तीन्—+—हैर्>तिहैर्—

[३०] जब /चार्/ में {—थ्} परप्रत्यय संयुक्त होता है तो आर्>औ में परिवर्तित हो जाता है :

चार्—+—थ्>चौथ्

[३१] जब /एक्/ में {—ल्} परप्रत्यय जुड़ता है तो एक्> पैह् में परिवर्तित हो जाता है :

एक्—+—ल्>पैहल्—

[३२] जब /एक्/ में {—ऐर्~हैर्} परप्रत्यय जुड़ते है तो एक्>इक् मे परिवर्तित हो जाता है :

एक्—+—ऐर्>इकैर्—

एक्—+—हैर्>इक्हैर्—

[३३] /राज्/ मे जब संज्ञा स्त्रीलिंग व्युत्पन्न परप्रत्यय {—ई^{3}} जोड़ा जाता है तो प्रातिपदिक का अन्तिम व्यंजन ज्>न् में परिवर्तित हो जाता है :

राज्—+—ई^{3}>रानी

[३४] /घाव्/ मे {–अल्} परप्रत्यय जुड़ने पर ़ य मे परिवर्तित हो जाता है

घाव्–|–अल् घायल

[३५] /गाँम्/ मे {–आर्} परप्रत्यय जुड़ने पर म् व् मे परिवर्तित हो जाता है

गाँम्–|–आर गवार्

[३६] /बिक/ मे सकर्मक धातु परप्रत्यय {–ϕ^{1}} जोड़ने पर प्रातिपदिक का क् च् मे परिवर्तित हो जाता है

बिक्–+–ϕ^{1} > बेच्

[३७] /फूट्/ मे सकर्मक धातु परप्रत्यय {–ϕ^{1}} जोड़ने पर ट् ड् मे परिवर्तित हो जाता है .

फूट्–|–ϕ^{1} फोड़्

३.२ संज्ञा विभक्ति संधि विचार

ध्वन्यात्मक एवं पदग्रामिक रूप से प्रतिबन्धित

[३८] अकारान्त, एकारान्त तथा औकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक मे जब कोई संज्ञा विभक्ति जुड़ती है तो विभक्ति प्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया मे संज्ञा प्रातिपदिक लघु रूप (Reduced form) मे आता है। यथा

सरूस–|–ओ सरूसों

दूबे–+–ओ दूबो

बुड्ढौ–|–ओ > बुड्ढो

[३९] आकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक मे जब {–अन्} विभक्ति जुड़ती है तो आकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक लघु रूप में आता है। यथा :

बच्चा–+–अन् > बच्चन्

बुड्ढा–|–अन् > बुड्ढन्

कुत्ता–|–अन् > कुत्तन्

[४०] आकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक मे जब /ओ/ रूप की कोई भी विभक्ति जुड़ती है तो दो विकल्प सम्भव है :

/क/ यदि संज्ञा प्रातिपदिक का ढाचा व्यंजन | स्वर (–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ मे से कोई एक) | व्यजन (मूर्द्धन्य व्यंजनो के अतिरिक्त) | स्वर /अ/ क्रम से है तो संज्ञा प्रातिपदिक अपने पूरे रूप मे आता है।

यथा :

मामा—+—ओं > मामाओं
चाचा—+—ओं > चाचाओं
दादा—+—ओं > दादाओं
काका—+—ओं > काकाओं
माला—+—ओं > मालाओ

/ख/ अन्य किसी भी प्रकार का आकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक, लघु रूप मे आता है ।

यथा :

बच्चा—+—ओं > बच्चों
लड्का—+—ओं > लड्कों
गाडा—+—ओं > गाडों
कन्धा—+—ओं > कन्धों
बुड्ढा—+—ओं > बुड्ढों
चिडिया—+—ओं > चिडियों

[४१] ईकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक में जब कोई संज्ञा विभक्ति जुड़ती है तो विभक्ति परप्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया मे ईकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक इकारान्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त स्या० केन्द्र मे ईकारान्त संज्ञा प्रातिपदिकों मे {—ओं} विभक्ति {—यों} मे परिवर्तित हो जाती है ।

यथा :

आद्मी—+—ओं > आद्मिओं ~ आद्मियों
बोली—+—ओं > बोलिओं ~ बोलियों
सारी—+—ओं > सारिओं ~ सारियों

[४२] ऊकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक में जब कोई संज्ञा विभक्ति जुड़ती है तो विभक्ति पर-प्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया में ऊकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक उकारान्त हो जाता है ।

यथा :

साधू—+—ओं > साधुओं

३.३ विशेषण तथा सर्वनाम विभक्ति सन्धिविचार

ध्वन्यात्मक एवं पदग्रमिक रूप से प्रतिबन्धित

[४३] आकारान्त अथवा औकारान्त विशेषण अथवा सर्वनाम प्रातिपदिको मे

जब {ए} विभक्ति पर प्रत्यय जुड़ता है तो आकारान्त अथवा ओंकारान्त प्रातिपदिक लघु रूप (Reduced form) में आता है।

यथा :

ऐसा—+—ए> ऐसे

अपना—+—ए> अपने

३.४ क्रिया विभक्ति सन्धि विचार

[४४] वर्तमान निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग की उत्तम पु० एकवचन द्योतक—ऊं, तथा उत्तम पु० बहुवचन एवं अन्य पु० बहुवचन द्योतक विभक्ति-- ऐं, जुड़ने पर एकारान्त प्रातिपदिक व्यंजनान्त हो जाते है।

यथा :

दे—+—ऊ> दूं

ले—+—ऊ>लूं

दे—+—ऐं दें

ले—+—ऐं लें

[४५] आकारान्त तथा ओकारान्त प्रातिपदिकों से, वर्तमान निश्चयार्थक काल द्योतकविभक्त वर्ग की मध्यम पु० एक वचन तथा अन्य पु० एकवचन द्योतक वि०—ऐ, जुड़ने पर निम्न क्षेत्रों में इस प्रकार ध्वन्यात्मक परिवर्तन होता है :

/क/ स्या० में प्रातिपदिक एवं विभक्ति के मध्य /ह/ का आगम होता है। (जब यह पदग्रामिक संरचना क्रिया वाक्याश मे /ह/ व्यजन मे आरम्भ होने वाली सहायक क्रिया के पूर्व जुड़ती है तो आगम /ह/ का लोप हो जाता है)।

यथा :

जा—+—ऐ>जाहै

/ख/ शि०, जे०, पहा०, अगो० में प्रातिपदिक और बिभक्ति के मध्य /ब्/ का आगम होता है।

यथा :

जा—+—ऐ>जाबै

/ग/ अगो० केन्द्र मे प्रातिपदिक और विभक्ति के मध्य /ब/ के साथ साथ /व्/ का भी आगम होता है। इस प्रकार इस केन्द्र मे दोनों मुक्त परिवर्तन की अवस्था में आते है।

यथा:

जा+ऐ>जाबै ~ जावै

[४६] आकारान्त तथा ओकारान्त प्रातिपदिको मे, वर्तमान निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग की उत्तम पु० बहुवचन तथा अन्य पु० बहुवचन द्योतक वि०—ऐं, जुडने पर, निम्न क्षेत्रो मे इस प्रकार ध्वन्यात्मक परिवर्तन होता है ,

/क/ स्या० मे प्र० एव विभ० के मध्य /ह्/ का आगम हो जाता है। जब यह पदग्रामिक सरचना क्रिया वाक्याश मे /ह्/ व्यजन से आरम्भ होनेवाली सहायक क्रिया के पूर्व जुडती है तो आगम /ह्/ का लोप हो जाता है।

यथा :

जा—+—ऐं>जाहैं

/ख/ शि०, जे०, पहा० मे प्रा० और विभ० के मध्य /म्/ का आगम होता हे :

जा—+—ऐं>जामैं

/ग/ अगो० में प्र० और विभ० के मध्य /व्/ का आगम होता है :

जा—+—ऐं>जावैं

[४७] पुल्लिग एक वचन भूत निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति—आ ~ —औ के जुडने पर एकारान्त तथा आकारान्त धातुओ के पश्चात् /य्/ का आगम होता है।

यथा :

ले—+—आ ~ औ>लिया ~ लियौ

जा—+—आ ~ औ>गया ~ गयौ

[४८] भूत निश्चयार्थक काल द्योतक वर्ग की किसी भी विभक्ति प्रत्यय के जुड़ने पर जा> ग मे बदल जाती है।

[४९] पुल्लिग भूत निश्चयार्थक काल द्योतक वर्ग की विभक्तिया जुड़ने पर —दे तथा—ले का स्वर ए>इ मे परिवर्तित हो जाता है। स्त्रीलिग भूत निश्चयार्थक काल द्योतक वर्ग की विभक्तिया जुड़ने पर—दे तथा—ले धातु व्यंजनान्त रूप मे परिवर्तित हो जाती है:

दे—+—ए>दिए

दे—+—आ>दिया

दे—+—ई>दी

ले—+—ई>ली

[५०] भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग मे से मध्यम पु० पुल्लिंग एकवचन एव अन्य पु० पुल्लिग एकवचन द्योतक विभ० तथा मध्यम पु०

स्त्रीलिंग एकवचन एवं अन्य पु० स्त्रीलिंग एकवचन द्योतक विभक्तियों को छोड़-कर अन्य किसी भी विभक्ति के जुड़ने पर निम्न धातुओं में ध्वन्यात्मक परिवर्तन होते हैं :

हो>ह्
ले ल्
दे द्

यथा :

हो—+—उङ्—ग्—आ>हुङ्गा
ले—+—उङ्—ग्—आ>लुङ्गा

[५१] व्यंजनान्त तथा ईकारान्त प्रातिपदिकों एवं स्वरान्त धातुओं—हो—ले तथा—दे/के परिवर्तित व्यंजनान्त रूप—ह्,—ल् तथा—द् में जब भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्तिवर्ग की पुल्लिंग उत्तम पु० बहुवचन एवं अन्य पुरुष बहुवचन तथा स्त्रीलिंग उत्तम पु० बहुवचन एवं अन्य पुरुष बहुवचन विभक्तियां जुड़ती है तो प्रातिपदिक एवं विभक्ति के मध्य /अ/ स्वर का आगम हो जाता है तथा ईकारान्त प्रातिपदिकों का ई इ में परिवर्तित हो जाता है। यथा :

चल्—+—ङ—ग्—ए>चलङ्गे
दे—+—ङ—ग्—ए>दङ्गे
कर्—+ङ्—ग्—ई>करङ्गी
पी—+—ङ—ग्—ई>पिअङ्गी

[५२] भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक वर्ग की मध्यम पुरुष पुल्लिंग बहुवचन द्योतक विभक्ति के जुड़ने पर निम्न धातुओं में इस प्रकार परिवर्तन होता है :

दे—+—औ—ग्—ए>दोगे
ले—+—औ—ग्—ए>लोगे

[५३] भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक वर्ग की उत्तम पु० पुल्लिंग बहुवचन तथा अन्य पु० पुल्लिंग बहुवचन द्योतक विभक्तियों के आकारान्त धातुओं के बाद जुड़ने पर मुक्त परिवर्तन की स्थिति में धातु एवं विभक्ति के मध्य /व्/ का आगम होता है यथाः

खा—+ङ् ग्—ए>खाङ्गे~खावङ्गे

[५४] भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक वर्ग की मध्यम पु० पुल्लिंग एकवचन एवं अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन द्योतक, तथा मध्यम पु० स्त्रीलिंग एकवचन एवं अन्य

पु० स्त्रीलिग एकवचन द्योतक, विभक्तियो के जुडने पर आकारान्त तथा एकारान्त —ले तथा—दे धातुओ मे इस प्रकार ध्वन्यात्मक परिवर्तन होते हे :

[क] आकारान्त धातुओ मे धातु और विभक्ति के मध्य मुक्त परिवर्तन की की अवस्था में /व्/ का आगम होता है।
यथा :

जा—+—ए—ग्—आ>जाएगा~जावेगा
जा—+—ए—ग्—ई>जाएगी~जावेगी

/ख/ एकारान्त धातु—ले तथा—दे मे यदि धातु तथा विभक्ति के मध्य /व/ का आगम हो जाता है तो विभक्ति वर्ग के आदि स्वर मे कोई परिवर्तन नही होता है। अन्यथा विभक्ति वर्ग के आदि स्वर का लोप हो जाता है।
यथा

दे—+—ऐ—ग्—आ>देवैगा~देगा
दे—+—ऐ—ग्—ई>देवैगी~देगी

[५५] वर्तमान आज्ञार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग की बहुवचन आदरार्थक विभक्ति—इए, जब धातुओ मे जुड़ती है तो निम्न धातुओ मे इस प्रकार ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाता है :

हो>हु=हो—+—इए>हुइए
ले>लीज्=ले—+—इए>लीजिए
दे>दीज्=दे—+—इए>दीजिए

[५६] जब आकारान्त धातुओ मे भविष्य आज्ञार्थककाल द्योतक विभक्ति वर्ग की एकवचन द्योतक विभक्ति—इयो जुड़ती है तो आकारान्त धातुए अकारान्त हो जाती हे। यथा :

खा—+—इयो>खइयो
जा—+—इयो>जइयो

[५७] भविष्य आज्ञार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग की एकवचन द्योतक विभक्ति—इयो के जुडने पर निम्नधातुओ मे इस प्रकार ध्वन्यात्मक परिवर्तन होता है

हो>हु=हो—+—इयो>हुइयो
ले>लि=ले—+—इयो>लीयो
दे>दि=दे—+—इयो>दीयो

[५८] इकारान्त रूपों मे जब भविष्य आज्ञार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग की एकवचन द्योतक विभक्ति {इयो} जुड़ता है तो धातु रूप का अन्तिम /इ/ तथा विभ० का आरम्भिक /इ/ यौगिक प्रक्रिया मे /ई/ के रूप मे परिवर्तित हो जाता है

ले— लि इयो लीयो

४. पदग्रामिक अध्ययन

४.१ व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना (Stem-formation)

४.०१ प्रत्यय

भाषा शास्त्र का प्रत्यय सम्बन्धी दृष्टिकोण सस्कृत व्याकरणों तथा हिन्दी के परम्परागत व्याकरणों मे अधिक व्यापक एवं विस्तृत है।

संस्कृत व्याकरणो तथा हिन्दी के परम्परागत व्याकरणों में उपसर्ग और प्रत्यय मे भेद किया जाता है। इन व्याकरणों के अनुसार उपसर्ग अव्यय शब्द है जो धातु अथवा शब्दधातु मे बनते है तथा उनमे पहले लगकर उनके अर्थ को घटा बढ़ा अथवा बदल देते है तथा प्रत्यय ऐसे आबद्ध रूप है जो मूल रूप अथवा प्रातिपदिक के पश्चात् लगकर उनके अर्थ को परिवर्तित कर देते है।

आधुनिक भाषाशास्त्र के अनुसार उपसर्ग एवं प्रत्यय दो भिन्न वस्तुएँ नहीं है अपितु उपसर्ग प्रत्यय सीमा के अन्तर्गत ही समाविष्ट है। वस्तुतः आधुनिक भाषा शास्त्र के अनुसार तो समस्त आबद्ध रूप (Bound Foims) ही प्रत्यय है। आबद्ध रूप (Bound Foims) को प्रत्यय का पर्यायवाची मान लेने पर इसकी सीमा के अन्तर्गत उपसर्ग (व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय) व्युत्पादक परप्रत्यय, विभक्तियां आदि सभी का समावेश हो जाता है। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री के० एल० पाइक ने प्रत्यय की परिभाषा इस प्रकार दी है :

"प्रत्यय वह पदग्राम है जो ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक रूप से उस पदग्राम के ऊपर निर्भर रहता है जिसमे यह जुड़ता है। सामान्यतः प्रत्ययो का अर्थ बहुत अधिक मूर्त नहीं होता है। यह पदग्राम अथवा पदग्रामों के समूह, (जिस पर यह आश्रित रहता है), के प्रकृत्यर्थ को परिवर्तित करता है।[1]

"प्रत्यय सम्बन्धी इस परिभाषा से प्रत्यय सम्बन्धी निम्न धारणाओं का स्पष्ट पता चलता है : (१) प्रत्यय ध्वन्यात्मक एव व्याकरणिक दोनो दृष्टियों से किसी अन्य पद के ऊपर निर्भर रहता है अर्थात् इसका स्वतन्त्र रूप मे प्रयोग

---

1. K. L. Pike—"Phonemics : A technique for reducing Languages to writing", Page 233.

नहीं होता है। दूसरे शब्दों में प्रत्यय आबद्धरूप है अर्थात् ऐसा उच्चार खंड, जिसका अर्थसहित स्वतन्त्र रूप मे कभी प्रयोग नही होता है।

(२) प्रत्यय का अर्थ बहुत अधिक मूर्त नही होता है। इसका अर्थ यह है कि इसकी स्वतन्त्र अर्थवान सत्ता नही होती है। इसके विपरीत यह मुक्तरूप (Free Forms) अथवा स्वतन्त्र रूप मे प्रयुक्त अर्थवान उच्चार खंडो के आश्रित प्रयुक्त होकर ही अर्थवान बनता है। यही कारण है कि इसकी अर्थवेत्ता अमूर्त ही होती है।

प्रत्ययों की कार्यक्षमता के आधार पर हम उन्हे दो प्रमुख भागों मे बाट सकते है :

१. व्युत्पादक प्रत्यय
२. विभक्ति प्रत्यय

पूर्व प्रत्यय सदा ही व्युत्पादक प्रत्यय होते है। पर प्रत्यय व्युत्पादक भी होते हैं एवं वैभक्तिक भी। व्युत्पादक परप्रत्यय किसी धातु, अथवा प्रातिपदिक के पश्चात जुड़कर दूसरे प्रकार की धातु अथवा प्रातिपदिक व्युत्पन्न करते है। इस प्रकार व्युत्पादक प्रत्यय (Derivative Affixes) वे प्रत्यय है जो 'किसी मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पश्चात लगकर दूसरे प्रकार के प्रातिपदिक व्युत्पन्न करते हैं'[1]।

व्युत्पादक (Derivative) एवं विभक्ति (Inflectional) प्रत्ययों के अन्तर को संक्षेप मे इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है :—

१. उपसर्ग सदैव ही व्युत्पादक प्रत्यय होते है किन्तु परप्रत्यय व्युत्पादक प्रत्यय भी होते हैं एवं विभक्ति प्रत्यय भी।
२. व्युत्पादक प्रत्यय मूल प्रातिपदिक, धातु अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक के पूर्व या पश्चात जुड़कर दूसरे प्रकार की धातु अथवा प्रातिपदिकों का निर्माण करते हैं किन्तु विभक्ति प्रत्यय व्याकरणिक रूपों की रचना करते है।
३. विभक्ति प्रत्यय जिन मूल प्रातिपदिक, व्युत्पन्न प्रातिपदिक अथवा धातु में जुड़ते हैं उनके सदैव अन्त में ही आते हैं। इस बात को इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि विभक्ति प्रत्ययों के आगे व्युत्पादक प्रत्यय कभी नही आ सकते, व्युत्पादक प्रत्ययों के आगे विभक्ति प्रत्यय आ सकते हैं।
४. प्रस्तुत क्षेत्र की बोलियों के अन्तर्गत व्युत्पादक एव विभक्ति प्रत्ययों मे वितरणगत (Distributional) भिन्नता भी पायी जाती है। व्युत्पादक प्रत्ययों

---

1. Francis W. Nelson—"The Structure of American English"

का वितरण अपेक्षाकृत सीमित है तथा भाषा के अन्दर इनका प्रयोग याद्दच्छिक रूप में होता है। इसके विपरीत, विभक्ति प्रत्ययो का वितरण बहुत अधिक होता है अर्थात् ये विस्तृत रूप वर्ग के निर्माता होते है तथा इनका भाषा के अन्दर प्रयोग नियमित रूप में होता है।

४.११ उपसर्ग। व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय।

इस क्षेत्र की बोलियों में व्युत्पादक पूर्व प्रत्ययो का प्रयोग धातु, मूलप्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के पूर्व उनके विभिन्न अर्थ एव उनकी विभिन्न विशेषताओं के द्योतन के लिए किया जाता है।

उद्गम स्रोत के आधार पर उपसर्गों (व्युत्पादक पूर्व प्रत्ययों) को दो भागों मे बाँट सकते है :

१ स्वदेशी

२. विदेशी

स्वदेशी उपसर्ग ऐसे पूर्व प्रत्यय है जो तद्भव अथवा देशी है तथा विदेशी उपसर्ग ऐमे पूर्व प्रत्यय है जिनका उद्गम स्रोत विदेशी भाषाओ से है।

आगे प्रस्तुत क्षेत्र की समस्त बोलियो में उपलब्ध समस्त उपसर्गों को इन्हीं कोटियों मे बाँटकर क्रमिक रूप से प्रत्येक का विवरण उदाहरण सहित प्रस्तुत किया जायेगा :

१.१११ स्वदेशी उपसर्ग। व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय।

४.११११ 'अभाव' अर्थद्योतक उपसर्ग

(१) अ—

मूल० प्रा० या धातु	उपसर्ग+मूल प्रा० या धातु	व्युत्पन्न प्रा०
पढ्	अ—+—पढ्>	अपढ्
थाह्	अ—+—थाह्>	अथाह्
लग्	अ—+—लग्>	अलग्

(२) अन्—

बन्	अन्—+—बन्>अन्बन्
जान्	अन्—+—जान्>अन्जान्
देखा	अन्—+—देख्>अन्देख्—+—आ'>अन्देखा

(३) नि—

काम्	नि—+—काम्>निकम्म्—+—आ'>निकम्मा
हाथ्	नि—+—हाथ्>निहत्त्—+—आ'>निहत्ता
रोग्	नि—+—रोग्>निरोग्

(४) निर्—

बल् निर्—+—बल् निर्बल्

४.१११२ "सहित" अर्थद्योतक उपसर्ग

(५) स[१]—

जीव् स[१]—+—जीव् सजीव्

रस् स[१]—+—रस् सरस्

४.१११३ "हीनता" अर्थद्योतक उपसर्ग

(६) औ—

गुन् औ—+—गुन् औगुन्

(७) क—

पूत् क—+—पूत् कपूत्

(८) कु—

रूप् कु—+—रूप् कुरूप्

कर्म कु—+—कर्म कुकर्म ई[१] कुकर्मी

[९] दु—

बल् दु—+—बल् दुब्ल—+—आ[१] दुब्ला

[१०] दुर्—

जन् दुर्—+—जन् दुर्जन्

गति दुर्—+—गति दुर्गति

दसा दुर्—+—दसा दुर्दसा

४.१११४ 'श्रेष्ठता' अर्थद्योतक उपसर्ग

[११] स[२]—

पूत् स[२]—+—पूत्>सपूत

जन् स[२]—+—जन्>सज्जन्

[१२] सु—

जान् सु—+—जान् सुजान्

काल् सु—+—काल्>सुकाल्

४.११११ 'अन्य अर्थ द्योतक' उपसर्ग

[१३] 'निकटवर्ती' अर्थद्योतक उपसर्ग—

{य्—} अ, आ तथा ऊ स्वरों के पूर्व आता है।

शि० खुर, तथा पहा० के अतिरिक्त अन्य केन्द्रों में 'ए' स्वर पूर्व भी आता है। यथा :

य्—+—अहां>यहां
य्—+—आं>यां
य्—+—ऊ>यू
य्—+—ए>ये

{हि—} अर्द्धस्वर पूर्व आता है :

हि—+—यां>हियां

{अ—} ओष्ठ्य स्पर्श व्यंजनों के पूर्व आता है :

अ—+—ब्>अब्

{इ—} दन्त्य स्पर्श, संघर्षी तथा नासिक्य व्यंजनों के पूर्व आता है। यथा:

इ—+त्>इत्+—ई[2]>इत्ती
इ—+—स>इस्
इ—+—न्>इन्
इ—+—त>इत
इ—+—ङ्घै>इङ्घै

{ø—} 'ऐ' स्वर के पूर्व आता है :

ø—+— ऐस् >ऐस्—+—आ>ऐसा

{ग्—} शि०, खुर०, पहा० मे 'ए' स्वर पूर्व आता है।

ग्—+—ए>गे

{ज्—} शि० में 'ए' स्वर पूर्व आता है। यह। ग्। के साथ मुक्त वितरण में आता है।

ज्—+—ए> जे

[१४] 'दूरवर्ती' अर्थ द्योतक उपसर्ग

{व्—} समस्त क्षेत्रों मे अ, आ तथा ऐ स्वरों के पूर्व। बुलन्द एवं जे० में इ, ऊ, ए, तथा ओ, के भी पूर्व। यथा :

व्—+—अहा>वहां
व्—+—आ>वां
व्—+—ऐसी>वैसी
व्—+—इन>विन्
व्—+—ऊ>वू

व्—+—ए>वे

व्—+—ओ>वो

{ग्—} शि०, खुर० तथा पहा० मे "ओ" तथा 'ए' के पूर्व आता है :

ग्—+—ए गे

ग्—+—ओ गो

{उ—} व्यजन पूर्व आता है।

यथा :

उ—+—त् उत्

उ—+—ड्घै उड्घै

उ—+—स्>उस्

उ—+—न् उन्

{ऊ~ओ—} स्या० तथा अगों० मे आता है।

यथा :

ऊ—+—ϕ ऊ

ओ—+—ϕ> ओ

(१५) 'प्रश्न वाचक' अर्थ द्योतक उपसर्ग—

{क्—} स्वर पूर्व आता है। यथा

क्—+—अहा>कहा

क्—+—आ>का

क्—+—ऐसी>कैसी

क्—+—औन्>कौन्

{क—} ओष्ठ्य स्पर्श व्यंजन तथा घोष दन्त्य स्पर्श व्यंजनों के पूर्व आता है।

क—+—ब्>कब्

क—+—द्>कद्

{कि—} अघोष दन्त्य स्पर्श, सघर्षी एव नासिक्य व्यंजनों के पूर्व आता है :

कि—+—त्>कित्

कि—+—ड्घै>किड्घै

कि—+—स्>किस्

(१६) 'सम्बन्धसूचक' अर्थ द्योतक उपसर्ग—

{ज्—} स्वर पूर्व आता है।

यथा :

ज्—+—अहां > जहां

ज्—+—आं > जां

ज्—+—ऐसी > जैसी

ज्—+—ओ > जो

ज्—+—आ > जा

ज्—+—इस् > जिस्

{ज—} ओष्ठ्य स्पर्श व्यंजनों के पूर्व आता है :

ज—+—ब्>जब्

{जि—} अघोष दन्त्य स्पर्श एवं नासिक्य तथा संघर्षी व्यंजनों के पूर्व आता है :

जि—+—त्>जित्

जि—+—न् > जिन्

जि—+—ङ्घै>जिङ्घै

जि—+—स्>जिस्

(१७) 'सहसम्बन्ध सूचक' अर्थ द्योतक उपसर्ग—

{त्—} अ तथा अनुनासिक आँ के पूर्व आता है :

त्—+—अहां>तहां

त्—+—आं>तां

{व्—} आ, इ, ए तथा ओ स्वरों के पूर्व आता है :

व्—+—आ>वा

व्—+—इस्>विस्

व्—+—ए>वे

व्—+—ओ>वो

{त} ओष्ठ्य स्पर्श व्यंजनों के पूर्व आता है :

त—+—ब्>तब्

{उ—} नासिक्य एवं संघर्षी व्यंजनों के पूर्व आता है :

उ—+—स्>उस्

उ—+—न्>उन्

[१८] 'चौथाई अधिक' अर्थद्योतक उपसर्ग {सवा—}

१ से ९९ तक की संख्याओं में से किसी भी संख्या के पूर्व जुड़ने पर उस संख्या+एक संख्या का चौथाई $^{1}/_{4}$ का भाव प्रकट होता है। सौ, दो सौ, तीन सौ आदि संख्याओं में जुड़ने पर सौ के चौथाई [२५] अधिक का भाव द्योतित कराता है।

दो सेर् सवा—+दो सेर्>सवा दो सेर्=२¼ सेर्
सौ सवा—+—सौ>सवा सौ १२५

[१९] 'आधा अधिक' अर्थद्योतक उपसर्ग {साडे—}

३ से ९९ तक की संख्याओ मे मे जिस सख्या के पूर्व जोडा जाता है तो उसमे संख्या+एक का आधा भाव प्रकट होता है :

चार् सेर्=साडे—+—चार् सेर साडे चार् सेर् ४½ सेर

[२०] 'चौथाई कम' अर्थद्योतक उपसर्ग {पौने—}

२ से ९९ तक की संख्याओ मे मे जिस संख्या के पूर्व जोडा जाता है तो उसमे उस संख्या मे एक चौथाई कम का भाव प्रकट होता है ।

चार्=पौने—+चार्>पौने चार्—३¾
पाँच्=पौने—+—पाँच्>पौने पाँच्—४¾

[२१] 'एक कम' संख्या अर्थद्योतकउपसर्ग— {उन्}

२०,३०,४०,५०,६०,७०,८०, मे मे जिस संख्या के पूर्व जोडा जाता है तो उससे उस संख्या मे एक कम का भाव द्योतित होता है । यथा :

बीस्=उन्—+—बीस्>उन्निस्
तीस्=उन्—+—तीस्>उन्तिस्
चालिस्=उन्—+—चालिस्>उन्तालिस्

४.११२

विदेशी उपसर्ग । व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय ।

४.११२१. 'अभाव अर्थद्योतक उपसर्ग

[२२] ना—

लायक् ना—+—लायक्>नालायक्
पसन्द ना—+—पसन्द>नापसन्द
समझ् ना—+—समझ्>नासमझ्

[२३] बिला—

कसूर् बिला—+—कसूर्>बिलाकसूर्

[२४] बे—

इमान् बे—+—इमान्>बेइमान्

चैन् बे—+—चैन्>बेचैन्

घर् बे—+—घर्>बेघर्

[२५] ला—

पता ला—+—पता>लापता

जबाब् ला—+—जबाब्>लाजबाब्

वारिस् ला—+—वारिस्>लावारिस्

४.११२२. 'हीनता' अर्थद्योतक उपसर्ग

[२६] बद्—

नाम् बद्—+—नाम्>बद्नाम्

चलन् बद्—+—चलन्>बद्चलन्

४.११२३. 'श्रेष्ठता' अर्थद्योतक उपसर्ग

[२७] खुस्—

बू खुस्—+—बू>खुस्बू

किस्मत् खुस्—+—किस्मत्<खुस्किस्मत्

४.११२४ 'अन्य 'अर्थद्योतक' उपसर्ग

[२८] अनुसार अर्थद्योतक उपसर्ग

ब—

दस्तूर् ब—+—दस्तूर्>बदस्तूर्

[२९] 'नकारात्मक अभाव द्योतक' उपसर्ग {गैर्—}

हाजिर् गैर्—+—हाजिर्>गैर्हाजिर्

सरकारी गैर्—+—सर्कारी>गैर्सर्कारी

[३०] 'प्रति' अर्थद्योतक उपसर्ग {फी—}

आदमी फी—+—आद्मी>फी आद्मी

[३१] 'अध्यक्ष' अर्थद्योतक उपसर्ग {हैड्—}

मास्टर् हैड्—+—मास्टर्>हैड्मास्टर्

४.१२ व्युत्पादक परप्रत्यय

ये वे प्रत्यय हैं जो किसी मूल प्रातिपदिक, व्युत्पन्न प्रातिपदिक अथवा धातु के पश्चात लगकर दूसरे प्रकार के प्रातिपदिक व्युत्पन्न करते है।

उद्गम स्रोत के आधार पर उपसर्गों की ही भाँति व्युत्पादक परप्रत्ययों को भी दो भागों में बाँटकर वर्णित कर सकते है :

१. स्वदेशी व्युत्पादक परप्रत्यय

२. विदेशी व्युत्पादक परप्रत्यय

स्वदेशी व्युत्पादक परप्रत्यय ऐसे व्युत्पादक परप्रत्यय हैं जो तत्सम, तद्भव अथवा देशी है तथा विदेशी व्युत्पादक परप्रत्ययो का स्रोत विदेशी भाषाओ मे है ।

आगे प्रस्तुत क्षेत्र की बोलियो मे उपलब्ध समस्त व्युत्पादक परप्रत्ययो को इस आधार पर विभाजित किया जायेगा कि वे किस रूपतालिका के प्रातिपादिक व्युत्पन्न करते है ।

४.१२१. सज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना (Noun Stem Formation)

संज्ञा व्युत्पादक परप्रत्यय सज्ञा प्रातिपदिक (मूल तथा व्युत्पन्न), विशेषण प्रातिपदिक (मूल तथा व्युत्पन्न) धातु (मूल क्रिया प्रातिपदिक) तथा व्युत्पन्न क्रिया प्रातिपदिको के पश्चात जुड़कर सज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिको का निर्माण करते है । निम्नलिखित व्युत्पादक परप्रत्ययो के सयोग मे सज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिको की रचना होती है ·

४.१२११ स्वदेशी व्युत्पादक प्रत्यय

[१]—ϕ इसको धातुओ मे जोड़कर, संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है । यथा

बोल् + ϕ > बोल्

दिखा + ϕ > दिखा

[२]—अक् विशेषणो मे जोड़कर सज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है । यथा ·

ठढ्—+—अक्>ठढक्

[३]—अक्कड् धातु रूपो मे जोड़ा जाता है। इससे 'आदत वाला' अर्थ द्योतित होता है । यथा :

पी—+—अक्कड्>पिअक्कड्

घूम्—+—अक्कड्>घुमक्कड्

[४]—अत् धातु रूपों मे जोड़कर भाववाचक सज्ञाएँ बनायी जाती हैं :

खप्—+—अत्>खपत्

बच्—+—अत्>बचत्

[५] —अन्[१] धातु मे इसके जोड़ने से भाववाचक संज्ञाएं निर्मित होती है :

खेल्—+—अन्[१]>खेलन्

चल्—+—अन्[१]>चलन्

[६] अन्[२] धातु में इसके जोड़ने से अन्य प्रकार के संज्ञा प्रातिपदिक बनते हैं :

ढक्—+—अन्[२] > ढक्कन्

बेल्—+—अन्[२] > बेलन्

[७] अन्[३] संज्ञा प्रातिपदिकों में इसके जोड़ने से स्त्रीलिंग व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण होता है:

सुहाग्—+—अन्[३] > सुहागन्

भङ्ग—+—अन्[३] > भङ्गन्

[८] —अन्त धातुओं में जोड़कर भाववाचक संज्ञाएं बनायी जाती हैं :

रट्—+—अन्त > रटन्त

गढ़्—+—अन्त > गढन्त (मनगढन्त)

[९] —आ धातु में जोड़कर भाववाचक संज्ञायें बनायी जाती हैं :

बन्—+—आ > बना

[१०] —आ[१] संज्ञा मूल प्रातिपदिकों के पश्चात पुलिंग संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण करता है। यथा :

घोड्—+—आ[१] > घोडा

माम्—+—आ[१] > मामा

[११] —आई इसको धातु; विशेषण तथा संज्ञाओं में जोड़ने से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है :

धातुओं में :

लड्—+—आई > लडाई

चुग्—+—आई > चुगाई

धो—+—आई > धुआई

ढो—+—आई > ढुआई

बो—+—आई > बुआई

विशेषणों में :

चतुर्—+—आई > चतुराई

मीठा—+—आई > मिठाई

ऊंचा—+—आई > ऊंचाई

संज्ञाओं में :

पंडित्—+—आई > पंडिताई

[१२]—आई' कुछ सज्ञाओं मे इसके जोड़ने मे जातिवाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है :

ठन्ड—+—आई' ~ ठन्डाई

[१३]—आई' संज्ञा मूल रूपो में जोड़ने मे स्त्रीलिंग संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिदिकों का निर्माण होता है·

लोग्—+—आई' - लुगाई

[१४]—आक् धातुओ मे जुड़कर 'प्रवृत्ति" का द्योतन करता है :

लड्—+—आक् लडाक्

[१५]—आका

धातुओं मे {आका, ~—आकु} जोड़कर संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है जिसमे "वाला" अर्थ द्योतित होता है :

लड्—+—आकु लडाकु

पढ्—+—अक्कु पढक्कु

[१६]—आत् सज्ञा मूल प्रातिपदिको के पश्चात् जुड़कर स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपादिकों का निर्माण करता है। यथा :

पंच्—+—आत्>पंचात्

बर्—+—आत्>बरात्

[१७]—आर् संज्ञा मूल प्रातिपदिकों के पश्चात् जुड़कर दूसरे प्रकार के पुल्लिङ्ग व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण होता है जिनसे कार्य करने वाला अथवा उस स्थान का अथवा उसका स्वामी अर्थ द्योतित होते हैं :

सोना—+—आर्>सुनार्

लोहा—+—आर्>लुहार्

चाम्—+—आर्>चमार्

गाम्—+—आर्>गंवार्

[१८]—आरा धातु के पश्चात् जुड़कर भाववाचक सज्ञाएँ बनती है :

निबट्—+—आरा>निबटारा

[१९]—आरी संज्ञा मूल प्रातिपदिको के पश्चात् जुड़कर दूसरे प्रकार की पुल्लिग व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण करता है जिनसे "कार्य वाहक" के अर्थ का द्योतन होता है :

भीख्—+—आरी>भिखारी

जूआ—+—आरी>जुआरी

खेल—+—आरी>खिलारी

[२०]—आरिन्~आरन् संज्ञा मूल प्रातिपदिकों के पश्चात् जुड़कर स्त्रीलिंग व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण करता है :

चाम्—+—आरिन्~आरन्>चमारिन्~चमारन्

[२१]—आस् विशेषण एवं धातुओं के पश्चात् जुड़कर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण करता है :

मीठा—+—आस्>मिठास्

पी—+—आस्>पिआस्

[२२]—आडी इसका संयोग विशेषणों में किया जाता है तथा उससे संज्ञा रूप प्राप्त किये जाते हैं :

आगे—+—आडी>अगाडी

पीछे—+—आडी>पिछाडी

[२३]—आव् इस प्रत्यय को धातु में जोड़कर संज्ञाएं बनायी जाती हैं जिससे किसी प्रकार के कार्य का अर्थ द्योतित होता है :

अटक्—+—आव्>अट्काव्

पड्—+—आव्>पडाव्

मिल्—+—आव् मिलाप्

[२४]—आवा~आवौ इस प्रत्यय को धातु में जोड़कर भाववाचक संज्ञाएं बनायी जाती हैं {—आवा} स्या० अगौ०, तथा बुलन्द० केन्द्रों में तथा {—आवौ} अन्य केन्द्रों में व्यवहृत होता है। यथा :

भूल—+आवा~आवौ>भुलावा~भुलावौ

बोल्—+आवा~आवौ>बुलावा~बुलावौ

[२५]—आवन् इस प्रत्यय को भी धातु में जोड़कर भाववाचक संज्ञाएं बनायी जाती हैं :

बिछा—+—आवन्>बिछावन्

पहिर्—+—आवन्>पहिरावन्

[२६]—आवट् इस प्रत्यय को धातु में जोड़ने से भाववाचक संज्ञाएं बनती हैं :

लिख्—+—आवट्>लिखावट्

मिल—+—आवट्>मिलावट्

रुक्—+—आवट्>रुकावट्

[२७]—आल् संज्ञा प्रातिपदिकों में इसका संयोग करके अन्य संज्ञा रूपों की प्राप्ति की जाती है :

ससुर्—+आल्>ससुराल्

[२८]—आहट् धातु तथा विशेषणों में इस प्रत्यय को संयुक्त करके भाववाचक संज्ञाएं बनायी जाती है :

लिख्—+—आवट् लिखावट्

चिल्ल्—+आहट्>चिल्लाहट्

गरम्—+—आहट् >गर्माहट्

नरम्—+—आहट् >नरमाहट्

[२९]—आनी धातु तथा संज्ञा प्रातिपदिकों में जोड़कर संज्ञाएं बनायी जाती हैं। यह स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण करता है। यथा :

कह्—+—आनी>कहानी

सेठ्—+आनी>सेठानी

[३०]—आना~आनौ धातुओं में संयुक्तकर संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है {आना}—स्या० अगौ० तथा बुलन्द० तथा {—आनौ} अन्यत्र व्यवहृत होता है।

यथा :

बज्+आना~आनौं बजाना~बजानौं

बन्+आना~आनौ बनाना~बनानौं

[३१]—इन् इसको संज्ञा मूल प्रातिपदिकों अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के पश्चात् जोड़कर स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना की जाती है। यथा :

तेल्—+—इन्>तेलिन्

धोब्—+—इन्>धोबिन्

चमार्—+—इन्>चमारिन्

कहार्—+—इन्>कहारिन्

[३२]—इआ इसे संज्ञा एवं विशेषण प्रातिपदिकों के पश्चात् जोड़कर संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न किए जाते हैं :

दुख्—+—इआ>दुखिआ

काला—+—इआ>कालिआ

[३३]—इया इसको संज्ञा मूल प्रातिपदिकों के पश्चात् जोड़कर स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना की जाती है :

कुत्—+—इया>कुतिया

चिड्—+—इया>चिडिया

बुड्ढ—+—इया>बुढिया

[३४]—ई संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया प्रातिपदिकों में इसका संयोग कर भाववाचक संज्ञाएं बनायी जाती हैं।

यथा :

चोर्— —ई > चोरी
लाल्— —ई > लाली
हंस्— —ई > हंसी

[३५]—ई[1] इसको संज्ञा प्रातिपदिकों के पश्चात् जोड़कर संज्ञा पुलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिको की रचना की जाती है :

धोब्—+—ई[1] > धोबी
तेल्—+—ई[1] > तेली

[३६]ई[2]— संज्ञा प्रातिपदिकों के पश्चात् जोड़कर संज्ञा स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना की जाती है :

छोर्—+—ई[2] > छोरी
घोड़्—+—ई[2] > घोड़ी

[३७]—उआ इसको धातुओं में जोड़ा जाता है। यथा :

टहल्—+—उआ > टहलुआ

[३८]—ए संज्ञा मूल प्रातिपदिकों में इस प्रत्यय का संयोग कर पुल्लिग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना की जाती है। यथा

दूब्—+—ए > दूबे
चौब्—+—ए > चौबे

[३९]—एर् संज्ञा प्रातिपदिकों मे जोड़कर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है :

काम्—+—एर् > कमेर्

भाववाचक संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में पुल्लिग प्रातिपदिक परप्रत्यय / आ[1] / तथा स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय / ई[2] / जोड़कर क्रमशः संज्ञा

जिन संज्ञा मूल प्रातिपदिकों में {ई[1]} परप्रत्यय लगाकर पुलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना की जाती है उन मूल प्रातिपदिकों में स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना के लिए {—इन्} पर प्रत्यय जोड़ा जाता है। इसके विपरीत जिन संज्ञा मूल प्रातिपदिकों के पश्चात् {—ई[2]} जोड़कर स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना की जाती है, उन मूल प्रातिपदिकों में पुलिंग व्युत्पन्न प्रतिपादिकों की रचना के लिए {—आ[1]} पर प्रत्यय जोड़ा जाता है।

पुलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों तथा संज्ञा स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना की जाती है। यथा :

काम्—+—एर्—+—आ' कमेरा
काम्—+—एर्—+—ई' कमेरी

[४०]—एल् संज्ञा प्रातिपदिको मे इसका संयोग कर संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है। यथा :

सौत्—+—एल्>सौतेल्
सौत्—+—एल्—+— आ'> सौतेला
सौत्—+—एल्—+— ई'> सौतेलो

[४१]—ऐत् संज्ञा प्रातिपदिकों मे इसका संयोग कर संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है। यथा:

लठ्ठ—+—ऐत् लठैत
डाकू—+—ऐत्> डकैत्

[४२]—औ शि०, खु०, तथा पहा० केन्द्रो मे सज्ञा मूल प्रातिपदिकों के पश्चात् इस प्रत्यय को जोड़कर पुलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक की रचना की जाती है। यथा :

छोर्—+—औ >छोरौ
बछ्ड—+—औ बछडौ

[४३]—औता इसका क्रिया शब्दो मे संयोग किया जाता है। यथा:

समझ्—+—औता> समझौता

[४४]—औती इसका धातु तथा सज्ञा शब्दो मे सयोग किया जाता है :

काट्—+—औती>कटौती
बाप्—+—औती>बपौती

[४५]—औत्री क्रिया शब्दों मे इसका संयोग कर भाववाचक संज्ञाओ का निर्माण किया जाता है :

बढ्—+— औतरी>बढौत्री

[४६]—औटा इसे संज्ञा शब्दों मे जोड़ा जाता है। यथा:

काजर्—+—औटा> कज्रौटा

[४७]—औड् इसका संज्ञा शब्दो मे संयोग किया जाता है :

हाथ्—+—औड्>हथौड्
हाथ्—+—औड्+आ'>हथौडा
हाथ्—+औड्+ई'>हथौडी

[४८]—औना धातुओं में सयोगकर संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है :

बिछा—+—औना > बिछौना

खेल्—+—औना खिलौना

[४९]—पा ~ पौ इन प्रत्ययों को विशेषण अथवा संज्ञा प्रातिपदिकों में जोड़कर संज्ञाएं बनायी जाती हैं। {पा} स्या०, अगौ० तथा बुलन्द० केन्द्रों में एवं {पौ} अन्यत्र व्यवहृत होता है। यथा :

मोटा—+पा ~ पौ > मुटापा ~ मुटापौ

बूढा—+पा ~ पौ > बुढापा ~ बुढापौ

[५०]—पन् इसको संज्ञा मूल अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में जोड़ा जाता है। यथा:

लडक्—+—पन् > लडक्पन्

गंवार्—+—पन् > गंवार्पन्

चमार्—+—पन् > चमार्पन्

चमार्—+—पन्+आ > चमार्पना

चमार्—+—पन्+ई[२] > चमार्पनी

[५१]—ती विशेषण एवं क्रियाओं मे इसे जोड़कर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है। यथा :

भर्—+—ती > भर्ती

बह्—+—ती > बह्ती

ज्यादा+ती > ज्यास्ती

[५२]—तर् इसे क्रियाओं में जोड़ा जाता है तथा इससे 'वाले' का अर्थ द्योतित होता है। यथा :

सीख्—+—तर् > सीक्तर्

[५३]—ड् संज्ञा मूल प्रातिपदिकों में इस प्रत्यय को संयुक्त करके अन्य संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का रूप प्राप्त किया जाता है। यह प्रत्यय अकेला कभी नहीं आता है। इसके साथ या तो पुल्लिग व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय /आ[१]/ आता है अथवा स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय /ई[२]/ आता है। यथा :

चाम्—+—ड्+आ[१] > चम्डा

दाम्—+—ड्+ई[२] > दम्डी

[५४]— ना इसको धातुओं मे संयुक्त किया जाता है। यथा :

पाल्—+—ना > पाल्ना

ढक्—+—ना>ढक्ना

[५५]—नी इसको धातुओ में जोड़कर भाववाचक सज्ञाएं बनायी जाती हैं।

कर्—+—नी करनी

भर्—+—नी भर्नी

[५६]—नी^ इसको सज्ञा प्रातिपदिकों मे जोड़कर स्त्रीलिग व्युत्पन्न प्राति-पदिको को रचना की जाती है। यथा :

चाद्—+—नी> चाद्नी

मंथ्—+—नी>मथ्नी

[५७]—लु सज्ञा प्रातिपदिको मे इसे जोड़कर अन्य संज्ञा प्रातिपदिक बनाये जाते है :

किर्पा—+—लु>किर्पालु

दया—+—लु>दयालु

[५८]—वट् इसको प्रेरणार्थक क्रियाओ मे जोड़कर भाववाचक संज्ञाओं की रचना की जाती है। यथा :

लिखा—+—वट् >लिखावट्

[५९]—वा प्रेरणार्थक क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिको में इसे जोड़कर भाव-वाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है :

बुला—+—वा>बुलावा

दिखा—+—वा>दिखावा

[६०]—वान् संज्ञा प्रातिपदिको मे इसे संयुक्त कर अन्य संज्ञा प्रातिपदिकों का रूप प्राप्त किया जाता है :

गाडी—+—वान्>गाडीवान्

इक्का—+—वान्>इक्केवान्

[६१]—वार् धातुओ मे इसे जोड़कर संज्ञा शब्दो का निर्माण किया जाता है। यथा :

रख्—+—वार्>रखवार्

[६२]—वारा इसको धातुओं मे जोड़कर भाववाचक सज्ञाओं का निर्माण किया जाता है :

बट्—+—वारा>बट्वारा

[६३]—वाल् संज्ञा मूल प्रातिपदिकों मे इसे जोड़कर संज्ञा व्युत्पन्न प्राति-पदिको का रूप सम्पन्न किया जाता है। यह परप्रत्यय अकेला कभी नहीं आता है। इसके साथ या तो / आ[१] /अथवा/ ई[२]/ व्युत्पादक परप्रत्यय आता है :

गाडी—+—वाल्>गाडीवाल्

गाडी+वाल्+आ[1]>गाडीवाला

गाडी+वाल्+ई[2]>गाडीवाली

[६४]—सार् इसकी संज्ञा मूल प्रातिपदिकों में जोड़ा जाता है :

घोड्—+—सार्>घुडसार्

[६५]—साला संज्ञा मूल प्रातिपदिकों मे जोड़ा जाता है :

गउ—+—साला>गउसाला

[६६]—हट् विशेषणों मे इसे जोड़कर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है :

चिक्ना—+—हट्>चिक्नाहट्

[६७]—हारी इसकी संज्ञाओं में जोड़ा जाता है तथा "वाली" का अर्थ द्योतित होता है। यह परप्रत्यय स्त्रीलिग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना करता है। यथा :

पानी—+—हारी>पनिहारी

४.१२२१ विदेशी व्युत्पादक परप्रत्यय

ये परप्रत्यय संज्ञा मूल प्रातिपदिकों मे ही जोड़े जाते है। संज्ञा मूल प्रातिपदिकों में जुड़कर ये संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण करते हैं। यथा :

[६८]—ईचा

बाग्—+—ईचा>बगीचा

[६९]—कार्

जान्—+—कार्>जान्कार्

पेस्—+—कार्>पेस्कार्

[७०]—खाना

छापा—+—खाना>छापाखाना

कैद्—+—खाना>कैद्खाना

[७१]—खोर्

सूद्—+—खोर्>सूद्खोर्

हराम्—+—खोर्>हराम्खोर्

[७२]—खोरी

हवा—+—खोरी>हवाखोरी

[७३]—गिरी

कुली—+—ग़िरी कुलीगिरी

राज्—+—गिरी राज्गिरी

[७४]—ची

ख़जाना—+—ची ख़जान्ची

अफीम्—+—ची अफीम्ची

तबला—+—ची तबल्ची

[७५]—जाद्

हराम्—+—जाद् >हरामजाद्–

[७६]—दान्

पीक्—+—दान् > पीक्दान्

पान्—+—दान्>पान्दान्

[७७]—दानी

मच्छर्—+—दानी मच्छर्दानी

[७८]—दार्

लेन्—+—दार् लेन्दार्

देन्—+—दार् देन्दार्

[७९]—नवीस्

नकल्—+—नवीस्>नकल्नवीस्

नक्सा—+—नवीस्>नक्सानवीस्

[८०]—पोस्

मेज्—+—पोस्>मेज्पोस्

[८१]—बाज्

नकल्—+—बाज्>नकल्बाज्

रंडी—+—बाज्>रंडीबाज्

[८२]—बाजी

रंडी—+—बाजी>रंडीबाजी

[८३]—बन्द्

बिस्तर्—+—बन्द>बिस्तर्बन्द

कमर्—+—बन्द>कमर्बन्द

[८४]—बन्दी

चक्—+—बन्दी>चक्बन्दी

नाका—+—बन्दी>नाकाबन्दी

[८५]--वार्

माह्—+—वार्>माह्वार्

उम्मीद्—+—वार्>उम्मीद्वार्

४.१२२ विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना

(Adjective stem formation)

विशेषण व्युत्पादक परप्रत्यय विशेषण, संज्ञा तथा क्रिया मूल एवं व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के पश्चात् जुड़कर विशेषण प्रातिपदिकों का निर्माण करते हैं। संज्ञा व्युत्पादक परप्रत्ययों में से /—अक्कड्,—आका—एल्—ऐत्—तर्, तथा—लु/ परप्रत्यय विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की भी रचना करते हैं।
यहाँ हम उन पर विचार नही करेंगे क्योंकि संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना ।४.१२१। प्रकरण के अन्तर्गत उनका उदाहरण सहित विवरण दिया जा चुका है। शेष अन्य विशेषण व्युत्पादक परप्रत्यय इस प्रकार हैं :

४.१२२१ स्वदेशी व्युत्पादक परप्रत्यय

[८६] {—अनिश्चित समूहवाची सख्या द्योतक परप्रत्यय} अनिश्चित समूहवाची संख्या का द्योतन कराने के हेतु गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषणों में —अन्, —ओं, —इयों को जोड़ा जाता है :—

दस्—+—इयों>दसियों

पचास्—+—अन्>पचासन्

पचास्—+—ओं>पचासों

[८७]—अल् संज्ञा शब्दों में जोड़ा जाता है :

घाव्—+—अल्>घायल्

[८८] {पुल्लिग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक द्योतक परप्रत्यय} विशेषण मूल प्रातिपदिकों के पश्चात—आ ~ —औ जोड़कर पुल्लिग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है :

अच्छ्—+—आ>अच्छा

[८९]—आउ यह धातुओं मे जोड़ा जाता है :

बिक्—+—आउ>बिकाउ

चल्—+—आउ>चलाउ

[९०]—आर् संज्ञा मे जोड़ा जाता है :

दूध्—+—आर्>दुधार्

[९१] {—अनिश्चित संख्यावाची द्योतक परप्रत्यय} गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण /एक/ के बाद अनिश्चित भाव प्रकट करने के लिए—आद्~ आध् तथा अन्य निश्चित गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणों के पश्चात् अनिश्चय का भाव प्रकट करने के हेतु—एक जोड़ा जाता है। यथा :

एक्—+—आद्~आध एकाद्~एकाध

चार्—+—एक् चार एक्

[९२]—इयल् क्रिया एवं संज्ञा मे जोड़ा जाता है। यथा

मर्—+—इयल् मरियल्

अड्—+—इयल अडियल्

डाढी—+—इयल् डढियल्

[९३]—इआ क्रिया एवं संज्ञा मे जोड़ा जाता है :

बढ़्—+—इआ बढिआ

घट्—+—इआ घटिआ

दूध् —+—इआ दूधिआ

[९४]—ई१ संज्ञा में जोड़ा जाता है :

रेशम्—+—ई१ >रेश्मी

गुन्—+—ई१ > गुनी

[९५]—ई२ विशेषण मूल प्रातिपदिकों के पश्चात जोड़कर विशेषण स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना की जाती है :

अच्छ्—+—ई२ >अच्छी

पहल्—+—ई२ >पहली

[९६]—ईल् संज्ञा में जोड़ा जाता है :

रंग्+ईल् > रगील् + आ१ > रंगीला

[९७]—उआ संज्ञा मे जोड़ा जाता है :

भाँड्—+—उआ > भँडुआ

[९८]—ऊ संज्ञा, विशेषण एवं क्रिया मे जोड़ा जाता है :

पेट्—+—ऊ पेटू

लम्बा—+—ऊ >लम्बू

सो—+—ऊ सोऊ

[९९]—एर् संज्ञा मे जोड़ा जाता है :

दिल्—+—एर् > दिलेर्

[१००]—ऐल् संज्ञा एवं क्रिया मे जोड़ा जाता है :

गुस्सा—+—ऐल्>गुस्सैल

रख—+—ऐल्>रखैल्

[१०१]—ओड़् धातुओं में जोड़ा जाता है:

हंस्—+—ओड़्>हंसोड़्

[१०२]{—गुणात्मक संख्या द्योतक परप्रत्यय}

गुणात्मक संख्या प्रातिपदिकों का निर्माण गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषणों में निम्नलिखित सहपदग्रामों के योग से होता है :

{—ऐर्} एक तथा दो के पश्चात

एक्+ऐर्>इकैर्+आ^{1} >इकैरा

दो+ऐर्>दुऐर्+आ^{1} >दुऐरा

{—हैर्} तीन तथा चार के पश्चात

तीन्+हैर्>तिहैर्+आ^{1} >तिहैरा

चार्+हैर्>चौहैर्+आ^{1} >चौहैरा

[१०३] {—परिणाम द्योतक गुणात्मक संख्या पर प्रत्यय}

दो से दस तक की गणनात्मक निश्चित संज्ञावाचक विशेषणों में जोड़ा जाता है जिससे परिणाम रूप में गुणात्मक संख्या का द्योतन होता है। यथा :

{—गन्} दो तीन तथा चार सख्याओं के पश्चात

दो +गन्>दुगन्+आ>दुगना

{—गुन्} पाँच से दस तक की सख्याओं के पश्चात

पाँच्—+—गुन्>पंच्गुन्—+—आ^{1} >पंच्गुना

[१०४] {—क्रम द्योतक पर प्रत्यय}

इसको पूर्णांक गणनात्मक निश्चित सख्यावाचक विशेषणों के पश्चात जोड़ा जाता है। इससे क्रम द्योतक निश्चित संख्यावाचक विशेषण प्रातिपदिकों का निर्माण होता है। इसके सहपदग्रामों का विवरण इस प्रकार है :

{—ल्} एक के पश्चात

एक्+ल्>पैहल्>+—आ^{1}—पैहला

{—सर्} दो तथा तीन संख्याओं के पश्चात

दो—+—सर्>दूसर्—

तीन—+—सर्>तीसर्—

{—थ्} चार संख्या के पश्चात

चार्—+—थ्>चौथ्

{—ट्} छै के पश्चात

छै—+—ट्>छट्

{—व्} अन्य संख्याओं के पश्चात

पाँच्—+—व्>पाँचव्—

सात्—+—व्>सातव्—

आठ्—+—व्>आठव्—

नौ—+—व्>नौव्—

दस्—+—व्>दसव्—

[१०५]—ठ् धातुओं में जोड़ा जाता है। यह हीनता द्योतक परप्रत्यय है:

सूख्—+—ठ्>सूक्ठ+आ[१] >सूक्ठा

[१०६]—डी संज्ञा में जोड़ा जाता है :

भाङ्ग—+—डी>भङ्गडी

[१०७]—त् धातुओं में जोड़ा जाता है :

चल्—+—त्>चलत्—+—आ[१] >चल्ता

गा—+—त्>गात्—+—आ[१] >गाता

[१०८]—ल् अव्ययों में जोड़ा जाता है :

आगै—+—ल्>अगल्+आ[१]>अग्ला

पीछै—+—ल>पिछल्+आ[१] >पिछ्ला

४.१२२२ विदेशी व्युत्पादक पर प्रत्यय

[१०९]—खोर् संज्ञा में जोड़ा जाता है:

घूस्—+—खोर्>घूस्खोर्

हराम्—+—खोर्>हराम्खोर्

४.१२३ सर्वनाम व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना (Pronoun Stem Formation)

सर्वनाम व्युत्पादक परप्रत्यय निजवाचक सर्वनाम मूल प्रातिपदिक। अपन–। के पश्चात जुड़कर पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग अर्थ का उद्घाटन कराते हैं :

[११०]—आ पुल्लिग द्योतक

अपन्—+—आ~औ>अपना~अपनौ

[१११]—ई स्त्रीलिंग द्योतक

अपन्—+—ई>अपनी

४.१२४ क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना (Verb Stem Formation)

क्रिया व्युत्पन्न पर प्रत्यय मूल धातु, संज्ञा तथा विशेषणों के पश्चात जुड़ कर क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना करते हैं। निम्नलिखित व्युत्पादक परप्रत्ययों के योग में क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना होती है :

[११२]—ϕ मूल धातुओं में इसे जोड़कर सकर्मक धातुओं की रचना की जाती है। इस परप्रत्यय के जोड़ने पर मूल धातुओं के स्वरों में परिवर्तन हो जाता है : *

मर्—+—ϕ>मार्
कट्—+—ϕ>काट्
बिक्—+—ϕ>बेच्
फूट्—+—ϕ>फोड़्

[११३]—आ[१] मूल धातुओं में इसे जोड़कर प्रेरणार्थक रूपों की रचना की जाती है :

मर्—+—आ[१]>मरा
जाग्—+—आ[१]>जगा
तैर्—+—आ[१]>तैरा
दौड़्—+—आ[१]>दौड़ा
खा—+—आ[१]>खिला
गा—+—आ[१]>गवा
दे—+—आ[१]>दिला
ले—+—आ[१]>लिवा
पी—+—आ[१]>पिला
सो—+—आ[१]>सुला
रो—+—आ[१]>रुवा

---

*/ कट्/सेकाट्/का विवेचन रूप-शून्य (Absence of the Form)परप्रत्यय {—ϕ} की सहायता से किया गया है। यह प्रक्रिया आन्तरिक ध्वनि-परिवर्तन को पर- प्रत्यय की सहायता से विवेचन करने की है।

इसका विवेचन मध्य-प्रत्यय-योजना द्वारा भी सम्भव है। कट्/एवं/काट्/ जैसे रूपों में मूल पदग्राम {क—ट्} को माना जा सकता है जो क्रमरहित पद (Discontinuous Morph) है। इस {क्—ट्} मूलपदग्राम में मध्य प्रत्यय {—अ—} के संयोग से/कट/तथा {—आ—} के योग से/ काट/जैसी रचनाएं व्युत्पन्न मानी जा सकती हैं।

[११४]—वा मूल धातुओं में जोड़कर द्विगुणित प्रेरणार्थक रूप की रचना की जाती है :

भर्—+—वा भर्वा
पढ़्—+—वा पढ़्वा
घूम्—+—वा घुम्वा
जाग्—+—वा जग्वा
तैर्—+—वा तैर्वा
दौड़्—+—वा दौड़्वा
खा—+—वा खिल्वा
गा—+—वा>गव्वा
पी—+—वा पिल्वा
दे—+—वा>दिल्वा
सो—+—वा>सुल्वा
रो—+—वा>रुल्वा

[११५]—आ[२] संज्ञा एवं विशेषणों में जोड़ा जाता है :

खट्खट्—+—आ[२] खट्खटा
मोटा—+—आ[२]>मुटा
खन्खन्—+—आ[२]>खन्खना
कट्कट्—+—आ[२]>कट्कटा

४.२ संज्ञा

४.२१ संज्ञा रूपतालिका (Noun Paradigm) में संज्ञा मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के पश्चात् वचन तथा कारक के अनुसार विभक्तियाँ जुड़ती हैं। संज्ञा विभक्ति पर प्रत्ययों (Noun Inflectional Suffixes) के धरातल पर लिंग भेद नही पाया जाता है । यथा :

चमार्—+—अन्>चमारन्
खाट्—+—अन्>खाटन्
चौपार्—+—ओं चौपारों
खाट्—+—ओं>खाटों
मामा—+—न्>मामान्
माला—+—न्>मालान् आदि ।

४.२११ लिंग निर्णय वाक्य—धरातल पर और कभी कभी केवल सन्दर्भ मात्र से

होता है। संज्ञा लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के लिंग का निर्णय संज्ञा मूल प्रातिपदिकों में जुड़े हुए लिंग द्योतक व्युत्पादक प्रत्ययों से भी हो जाता है। इस प्रकार केवल उन्हीं व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के लिंग का निर्णय विभक्ति जुड़ने के पूर्व हो सकता है जिनकी रचना लिंग व्युत्पादक पर-प्रत्ययों (Gender Derivative Suffixes) द्वारा हुई हो, शेष अन्य मूल अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के लिंग का निर्णय केवल वाक्य धरातल अथवा सन्दर्भ मात्र से ही हो सकता है। संज्ञा विभक्तिपर प्रत्ययों के धरातल पर लिंग भेद नहीं पाया जाता है, इस बात को पहले स्पष्ट किया जा चुका है, अतः विभक्ति धरातल पर लिंग निर्णय का प्रश्न ही नहीं उठता है।

४.२१२ लिंग निर्णय

[१] वाक्य धरातल पर

[क] यै गाम् अच्छो—ऐ। (यह ग्राम अच्छा है।)

[ख] यै खाट् अच्छी ऐ। (यह खाट अच्छी है।)

[क] बैल अच्छो—ऐ। (बैल अच्छा है।)

[ख] खाट् अच्छी- ऐ। (खाट अच्छी है।)

[क] मामा अच्छा—ऐ। (मामा अच्छा है।)

[ख] माला अच्छी—ऐ। (माला अच्छी है।)

[२] सन्दर्भ मात्र से:

[क] इन् बैलन् कू बाँध दो। (इन बैलों को बाँध दो।)

[ख] इन् भैंसन् कू बाँध दो। (इन भैंसो को बाँध दो।)

[३] लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का लिंग निर्धारण (लिंग व्युत्पादक पर-प्रत्ययों के कारण)

लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के लिंग का निर्णय संज्ञा मूल प्रातिपदिकों अथवा संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों मे जुड़े हुये लिंग व्युत्पादक परप्रत्ययों के कारण हो जाता है। यथा:

माम्+आ[१] > पुल्लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक=मामा
बुड्ढ+इया > स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक=बुढिया
धोब्+ई[१] > पुल्लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक=धोबी
छोर्+ई[२] > स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक=छोरी

४.२१३ संज्ञा मूल प्रातिपदिकों अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के अन्त्य

४.२१३० संज्ञा प्रातिपदिकों[1] को, व्युत्पादक परप्रत्ययों के प्रयुक्त होने अथवा न होने के आधार पर दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

[१] संज्ञा मूल प्रातिपदिक:—इस प्रकार के प्रातिपदिकों में किसी प्रकार का कोई प्रत्यय संयुक्त नही होता है।

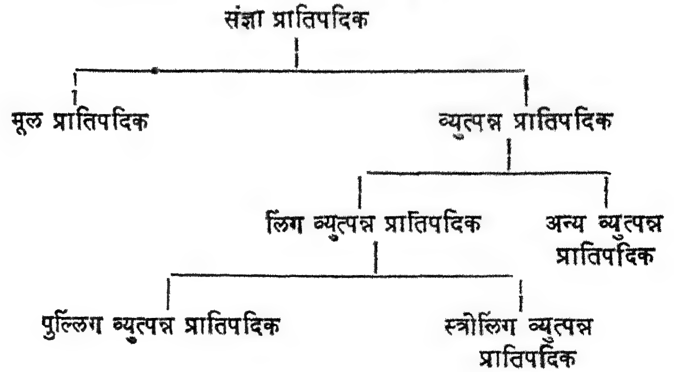
[२] संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक:—इस प्रकार के प्रातिपदिकों में एक या एक से अधिक संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना करने वाले व्युत्पादक प्रत्यय जुड़ते हैं।

संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों को भी दो उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

[क] लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक

[ख] अन्य व्युत्पन्न प्रातिपदिक

इस प्रकार संज्ञा प्रातिपदिक के वर्ग, उपवर्गों को इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है :



४.२१३१ इन प्रातिपदिकों के अन्त्य के कारण संज्ञा विभक्तियों में भी अन्तर पड़ जाता है। इस कारण इनके अन्त्य पर विचार करना प्रासंसंगिक एवं सार्थक होगा, क्योंकि इसके पश्चात अन्त्य के अनुसार विभक्ति भिन्नताओं को सूत्रवत प्रस्तुत किया जा सकेगा। अन्त्यानुसार, कुछ प्रातिपदिकों को उदाहरण स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

---

१ प्रातिपदित विभक्तिरहित अवस्था का नाम है।

४.२१३११ व्यजनान्त प्रातिपदिक

[१] मूल प्रातिपदिक :

चौपार् , ठाकुर् , लोग् , धंन्—, खेत्—, पच्—,
गाम् , घर , खाट , औरत्- , ईट्--गाय्—, आदि :

[२] व्युत्पन्न प्रातिपदिक :

जमीद् आर् , मुन् आर्- लुह्—आर्—,चम्—आर्—,
पच् आत , बर्--आत्—, तेल—इन्—, धोब्—इन्—,
माल्—इन्—, कह्- आर्, कह्—आर्—इन्,भड्ग्—अन्—
चोब् अन् ।

४.२१३१२ अकारान्त प्रातिपदिक

[१] मूल प्रातिपदिक

। सख्स , जिन्स—, लट्ठ—, आदि ।

४.२१३१३ आकारान्त प्रातिपदिक । जिन प्रातिपदिको के नीचे लकीर अकित है, वे केवल स्या० अगो० तथा बुलन्द० केन्द्रो मे ही व्यवहृत होते है ।

[१] मूल प्रातिपदिक

गांडा , कन्या--, रस्ता—, जाडा—, बूरा—, माला—,
आदि ।

[२] व्युत्पन्न प्रातिपदिक

छोर्—आ ,गध्—आ--,बछ्ड्—आ—,बुड्ढ्—आ—,
माम्—आ ,दाद्—आ—,चाच्—आ—,बच्च्—आ—,लौड्—
आ ,राज्—आ -, घोड्—आ—,भैंस्—आ—,बुढ्—इया—
बछ् -इया--,कुत्—इया—,लठ्—इया—,चिड्—इया—,आदि।

४.२१३१४ ईकारान्त प्रातिपदिक

[१] मूल प्रातिपदिक

। आदमी—, नदी—, कहानी—, बैयरबानी—आदि ।

[२] व्युत्पन्न प्रातिपदिक

। धोब्—ई—, माल्—ई—; तेल्—ई—, छोर्—ई—,
घोड्—ई—, लाठ्—ई—, सार्—ई—, लुग्—आई—,
सेठ्—आनी—।

४.२१३१५ उकारान्त प्रातिपदिक

[१] मूल प्रातिपदिक

। तम्बाकू —, आलू —, साधू —, डाकू , बिच्छू —।

४.२१३१६ एकारान्त प्रातिपदिक

[१] व्युत्पन्न प्रातिपदिक

दूब्—ए—, पांड्—ए—, चौब्--ए—।

४.२१३१७ औकारान्त प्रातिपदिक । औकारान्त प्रातिपदिक केवल शि० खुर०, जे०, तथा पहा० केन्द्रों में ही बोले जाते हैं।

[१] मूलप्रातिपदिक

। गाँडौ—,कन्धौ—,रस्तौ—,जाडौ—,बूरौ—, ।

[२] व्युत्पन्न प्रातिपदिक

। छोर्—औ—,गध्—औ—,बछ्ड्—औ—, बुड्ढ्—औ— ।

४.२२ संज्ञा विभक्ति

किसी संज्ञा मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक मे जब संज्ञा विभक्तिमय बनाने वाली विभक्ति जुड़ती है, तो उस विभक्ति (Noun Inflection) से वचन तथा कारक की एक साथ अभिव्यक्ति होती है।

प्रस्तुत क्षेत्र के सभी केन्द्रों में दो वचन हैं :

[१] एक वचन

[२] बहु वचन

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कुछ संज्ञा प्रातिपदिक दोनों वचनों के आधार पर रूपान्तरित नहीं होते हैं। यथा :

राम्, सूरज्, चन्दर्मा, दूध्, घी,

आदि के बहुवचन रूप नहीं होते हैं।

इस प्रकार का अध्ययन शब्दकोष के सन्दर्भ में ही किया जा सकता है, क्योंकि वचन सम्बन्धी उपरोक्त प्रतिबन्धन कुछ शब्दों तक ही सीमित हैं, उसका भाषा के गठन से कोई सम्बन्ध नहीं है। कारक[1] के प्रश्न पर केन्द्रों के दो मुख्य भेद हो जाते हैं :

---

१ कारक—अविकारी कारक के पश्चात् कोई परसर्ग नहीं आता है। विकारी कारक-रूप के पश्चात् परसर्गों का प्रयोग होता है। जहाँ विकारी कारक

[१] स्याना केन्द्र : जिसकी बोली में केवल दो कारक पाए जाते हैं :
[अ] अविकारी कारक
[आ] विकारी कारक

[२] शेष अन्य केन्द्र : जिनकी बोलियों में तीन कारक पाए जाते हैं:
[अ] अविकारी कारक
[आ] विकारी कारक
[इ] सम्बोधन कारक

४.२२१ सामान्य गठन-तालिका

संज्ञा विभक्ति की अनेकरूपताओं को सामान्य गठन रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हम सर्वप्रथम सामान्य गठन प्रस्तुत कर सकते हैं तत्पश्चात उस गठन रूप की जिस स्थिति में जो जो विभक्तियाँ आती हैं, उनका विस्तार से वर्णन कर सकते हैं। संज्ञा विभक्ति की सामान्य गठन तालिका का रूप निम्न प्रकार का है:

[१] स्याना केन्द्र में

	एक वचन	बहु वचन
अविकारी कारक	—	—
विकारी कारक	—	विभक्ति पर-प्रत्यय

तथा सम्बोधन कारक के अन्तर्गत भेद नहीं है, वहाँ विकारी कारक के पश्चात कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण तथा सम्बोधन द्योतक परसर्गों का प्रयोग होता है। जहाँ विकारी तथा सम्बोधन कारकों के अन्तर्गत भेद किया जाता है, वहाँ विकारी कारक रूप के पश्चात सम्बोधन द्योतक परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है एवं विकारी तथा सम्बोधन कारक के रूपों में भिन्नता पाई जाती है।

"—" यह चिन्ह विभक्तिरहित अवस्था का द्योतक है। ऐसी दशा में मूल अथवा व्युत्पन्न प्रतिपादिक ही संज्ञा-विभक्ति का कार्य सम्पन्न करता है।

[२] शेष अन्य केन्द्रों मे

	एक वचन	बहु वचन
अविकारी	—	—
विकारी	—	विभक्ति पर-प्रत्यय
सम्बोधन	—	विभक्ति पर-प्रत्यय

इस सामान्य गठन-तालिका के निष्कर्ष को इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्याना केन्द्र मे द्विमुखी अन्तर मिलता है अर्थात् एकवचन अविकारी, विकारी एवं बहुवचन अविकारी तथा बहुवचन विकारी मे अन्तर मिलता है किन्तु शेष अन्य केन्द्रों मे त्रिमुखी अन्तर पाया जाता है अर्थात् एकवचन, अविकारी, विकारी, सम्बोधन एवं बहुवचन अधिकारी, तथा बहुवचन विकारी तथा बहुवचन सम्बोधन मे अन्तर पाया जाता है। इस प्रकार दो प्रकार की सामान्य गठन तालिकाओं मे प्रत्येक विभक्ति परप्रत्यय एक निश्चित स्थान में है जो स्याना केन्द्र मे अपने अभाव से तथा शेष अन्य केन्द्रो मे अपने अभाव तथा दूसरी विभक्ति से व्यतिरेकी रूप मे आता है ।

४.२२२ प्रतिपादिकों के अन्त्य तथा विभक्तियाँ

संज्ञा विभक्तियों का अध्ययन प्रातिपदिकों के अन्त्यानुसार वर्गों में विभाजित करके किया जा सकता है। इसके लिये सर्वप्रथम दो मुख्य वर्ग केन्द्रानुसार होगे अर्थात् सर्वप्रथम हम स्याना केन्द्र की बोली में उपलब्ध संज्ञा-विभक्तियों का अध्ययन करेंगे, तत्पश्चात अन्य केन्द्रों की बोलियों की सज्ञा विभक्तियों का अध्ययन सम्भव होगा। अन्य केन्द्रों में जहाँ विभिन्नताएं उपलब्ध होंगी उनका विभक्ति वर्ग बन्धन प्रकरण में निर्देश कर दिया जायगा

४.२२२१ स्याना केन्द्र में :

इस केन्द्र मे प्रातिपदिकों के अन्त्य से विभक्तियों में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। किसी भी प्रकार से अन्त्य हुए संज्ञा मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों में विकारी बहुवचन विभक्ति

पदग्राम /ओं/ जुड़ता है। कहने का तात्पर्य यह है कि {–ओं} पदग्राम का एक ही सहपदग्राम —ओं है।

उदा० :

प्रातिपदिक अन्त्य	संज्ञा प्रातिपदिक	विकारी बहुवचन विभक्ति	संज्ञा पदग्रामिक संरचना
व्यंजनान्त	चौपार्—	—ओं	चौपारों
व्यंजनान्त	भैंस्—	—ओं	भैंसों
अकारांत	सख्स—	—ओं	सख्सों
आकारान्त	लौंडा—	—ओं	लौंडाओं
आकारान्त	मामा—	—ओं	मामाओं
ईकारान्त	घोबी—	—ओं	धोबियों
ईकारान्त	छोरी—	—ओं	छोरियों
ऊकारान्त	साधू—	—ओं	साधुओं
एकारान्त	चौबे—	—ओं	चौबों

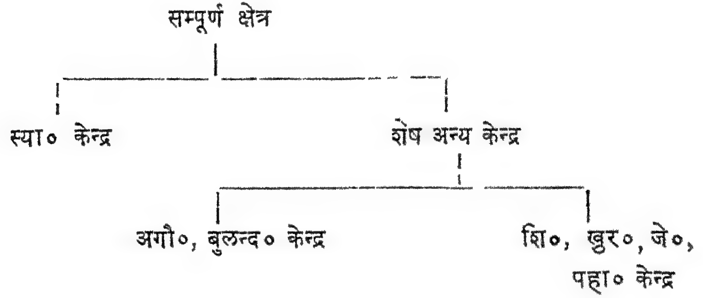
४.२२२२ शेष अन्य केन्द्रों में

४.२२२२१ शेष अन्य केन्द्रों के भी पुनः दो उपवर्ग किये जा सकते हैं :

[१] वे जिनमें विकारी कारक बहुबचन और सम्बोधन कारक बहुवचन की विभक्तियों के रूप सर्वथा भिन्न है। इस उपवर्ग में शि०, खुर० जे० तथा पहा० केन्द्र आते है।

[२] वे जिनमे ईकारान्त के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के अन्त्य प्रातिपदिकों मे सम्बोधन बहुवचन द्योतक विभक्ति विकारी बहुवचन द्योतक विभक्ति के साथ मुक्त-परिवर्तन मे वितरित होती है। इस उपवर्ग में अगौ० तथा बुलन्द केन्द्र आते हैं। इन केन्द्रों के भाषाभाषियों के लिए विकारी कारक बहुवचन एवं सम्बोधन बहुवचन का भेद उतना महत्वपूर्ण (Distinctive) नहीं है जितना शि०, खुर०, जे० तथा पहा० केन्द्रों के भाषा-भाषियों के लिए है।

सज्ञा विभक्तियों के आधार पर समस्त केन्द्रों को मुख्य रूप मे इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है।



४.२२२२२ इस सामान्य विवेचन के पश्चात् अब हम शेष अन्य केन्द्रो मे प्रातिपदिकों के अन्त्यानुसार लगने वाली विभक्तियों का विवरण देकर तत्पश्चात् उन्हें वर्गबद्ध करेंगे :

४.२२२२२१ प्रतिपादिकों के अन्त्यानुसार विभक्तियाँ

प्रातिपदिक अन्त्य	क	ख	ग
व्यंजनान्त	—	—अन्~ओं[१]	—ओं[१]
अकारान्त	—	—अन्~ओं[१]	—ओं[३]
आकारान्त	—	—अन्~ओ[१]	—ओं[१]
ईकारान्त	—	—अन्~ —यों[१] ~ —न्	—ओं[१]
ऊकारान्त	—	—अन्— ~ —ओं[१]	—ओं[३]
एकारान्त	—	—अन् ~ —ओं[१]	—ओं[२]
औकारान्त	—	—अन्~ —ओं[१]	—ओं[३]

[क] यह चिह्न अविकारी एकवचन और बहुवचन एवं विकारी और सम्बोधन एकवचन का द्योतक है।

[ख] यह चिह्न विकारी बहुवचन की स्थिति का द्योतक है।

[ग] यह चिह्न सम्बोधन बहुवचन की स्थिति का द्योतक है।

उदाहरण :

प्रातिपदिक अन्त्य	संज्ञा प्राति-पदिक	विकारी कारक बहुवचन विभक्ति तथा पदग्रामिक संरचना	सम्बोधनकारक बहु-वचन विभक्ति तथा पदग्रामिक संरचना
व्यंजनान्त	चौपार्	अन्—~ओं[१] (चौपारन्~ चौपारों)	—ओं[२] (चौपारों)
अकारान्त	सख्स	अन्~ओं[१] (सख्सन्~ सख्सों)	—ओं[२] (सख्सों)
आकारान्त	मामा	अन्~ओं[१] (मामन्~ मामाओं)	—ओं[२] (मामाओं)
ईकारान्त	धोबी	यन्~ओं[१] ~न् (धोबियन्~धोबियों~ धोबिन्)	—ओं[२] (धोबियों)
ऊकारान्त	साधू	अन्~ओं[१] (साधुअन्~ साधुओं)	—ओं[२] (साधुओं)
एकारान्त	चौबे	—अन्~ओं[१] (चौबन्~ चौबों)	—ओं[२] (चौबों)
औकारान्त	छोरौ	—अन्~ओं[१] (छोरन्~ छोरों)	ओं[२] (छोरों)

४.२२२२२२ वर्गबन्धन

४.२२२२२२१ {संज्ञा अविकारी कारक बहुवचन विभक्ति पदग्राम} के निम्न सहपदग्राम हैं :

{अन्} समस्त छै केन्द्रों में ईकारान्त के अतिरिक्त अन्य प्रकार से अन्त्य संज्ञा प्रातिपदिकों के पश्चात् ।

{ओं[१]} बुलंद शहर एवं अगौता केन्द्रों में ईकारान्त के अतिरिक्त अन्य प्रकार से अन्त्य संज्ञा प्रातिपदिकों के पश्चात् । इन केन्द्रों में यह सदपदग्राम {अन्} के साथ मुक्त परिवर्तन में वितरित होता है अर्थात् इन केन्द्रों में {अन्~ओं} स्थिति है ।

{न्} जे० तथा पहा० केन्द्रों में ईकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक के पश्चात्

{यन्} अगौ०, बुलन्द० शि० तथा खुर० केन्द्रो मे ईकारान्त संज्ञा प्रातिपदिकों के पश्चात्

{यो} अगौ० तथा बुलन्द० केन्द्रो मे ईकारान्त सज्ञा प्रातिपदिकों के पश्चात्। इन केन्द्रो मे इस स्थिति मे यह सदपदग्राम {यन्} के साथ मुक्त परिवर्तन मे आता है।

४.२२२२२२२ {ओं} सज्ञा सम्बोधन कारक बहुवचन विभक्ति पदग्राम।

४.३ सर्वनाम

४.३१ सर्वनामो का रूपतालिका वर्ग (Pa adigmatic cla s सज्ञा रूपतालिका वर्ग की भी भाँति है। इसमे भी लिग निर्णय वाक्य धरातल पर और कभी कभी केवल सन्दर्भ मात्र म होता है। सर्वनाम लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिको के लिग का निर्णय स नाम मूल प्रातिपदिको मे जुडे हुए ।लग द्योतक व्युत्पादक परप्रत्ययो म भी हो जाता है। सर्वनामो मे दा वचन (एकवचन तथा बहुवचन तथा दो कारक (अविकारी एव विकारी) होते है। सर्वनाम रूपतालिका के सम्बन्ध मे एक बात विशेष उल्लेखनीय है, वह यह कि उसम अनियमित रूपान्तर होता है।

४.३११ लिंग निर्णय

४.३१११ सन्दर्भ मात्र से

[क] मैं ना पीऊं। मैं नही पीता हूँ।

[ख] मैं ना पीऊं। मै नही पीती हूँ।

[क] तू बोलै मै गाऊं। तू बोलता है मैं गाता हू।

[ख] तू बोलै मै गाऊ। तू बोलती है मै गाती हू।

४.३११२ वाक्य स्तर पर

विशेषण द्वारा

[क] मै अभागौ तौ अपनौ मुँह् ना दिखानौ चाऊं
। मै अभागा अपना मुँह नही दिखाना चाहता हू।

[ख] मैं अभागन् तौ अपनौ मुँह् ना दिखानौ चाऊं
। मै अभागन अपना मुँह दिखाना नही चाहती हू।

क्रिया द्वारा

[क] मै वाकी पीठ खुजा रोऊ
। मै उसकी पीठ खुजला रहा हू।

[ख] मै वाकी पीठ खुजा रई यूँ

। मैं उसकी पीठ खुजला रही हूं ।

४.३११३ लिंग व्युत्पादक परप्रत्ययों के कारण

[क] मूल प्रा० अपन्—+—पुल्लिग व्युत्पादक परप्रत्यय-आ ~ औ> अपना ~ अपनौ

[ख] मूल प्रा० अपन्—+—स्त्रीलिंग व्युत्पादक परप्रत्यय—ई>अपनी

४.३२ गठन-तालिका

संज्ञा विभक्ति की भाँति सर्वनामों की सामान्य गठन तालिका प्रस्तुत नहीं की जा सकती है। इसका कारण यह है कि सर्वनाम रूपतालिका (Pronoun Paradigm) में नियमित रूपान्तर नहीं होता है। सर्वनाम रूपतालिका के कुछ रूपों में द्विमुखी अन्तर है, कुछ में त्रिमुखी तो कुछ में चौमुखी। इसके अतिरिक्त कुछ रूपों में केवल एकवचन में कारक के कारण अन्तर पाया जाता है, कुछ रूपों में केवल विकारी कारक में वचन के कारण अन्तर पाया जाता है। वचन एवं कारक की कोटियों के अन्तर के साथ-साथ क्षेत्रगत भी बहुत अन्तर हैं। इस कारण सर्वनामों की रूपतालिका प्रस्तुत करने से पूर्व इस पक्ष पर विचार करना अत्यावश्यक हो जाता है।

यहाँ, सर्वनाम रूपतालिका के वर्गो के अनुसार, गठन तालिका के स्वरूप पर विचार किया जा रहा है :

४.३२१ उत्तम पुरुष एवं मध्यम पुरुष वाचक सर्वनामों की गठन तालिका :

इन सर्वनामों में बहुवचन में कारक के कारण अन्तर नहीं आता है, एक वचन में ही कारक के कारण रूपान्तर होता है। इसकी गठन तालिका को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

एक वचन		
अवि०	वि०	बहुवचन

४.३२२ अन्य पुरुष वाचक। दूरवर्ती द्योतक संकेत वाचक।

अन्य पुरुष वाचक सर्वनामों के कारक एवं वचन के कारण अन्तर के प्रश्न पर, समस्त केन्द्रों के दो भेद हो जाते हैं :

[१] शि०, खुर० तथा अगो० केन्द्र: इन केन्द्रो मे एकवचन अविकारी और बहुवचन अविकारी के अन्तर्गत भेद नही किया जाता है। यथा

अविकारी कारक	विकारी कारक	
	एकवचन	बहुवचन

[२] शेष अन्य केन्द्र :

स्या०, बुलन्द, जे०, पहासु० केन्द्रो मे चौमुखी अन्तर होता है। यथा

एकवचन		बहुवचन	
अवि०	वि०	अवि०	वि०

४.३२३ अन्य पुरुष वाचक। निकटवर्ती द्योतक संकेत वाचक।

इसमे भी अन्तर के प्रश्न पर समस्त केन्द्र के दो भाग हो जाते है

[१] शि०, खुर०, जे० तथा पहा० केन्द्र :

अविकारी कारक	विकारी कारक	
	एकवचन	बहुवचन

[२] शेष अन्य केन्द्र .

एकवचन		बहुवचन	
अवि०	वि०	अवि०	वि०

४.३२४ चेतन प्रश्न वाचक

इस आधार पर समस्त केन्द्रों के तीन भेद हो जाते हैं :

[१] खुर०, जे० तथा पहा० केन्द्र

इनमें न कारक के कारण रूपान्तर होता है और न वचन के कारण। इन केन्द्रों में चेतन प्रश्न वाचक सर्वनाम/कौन्/एक वचन अवि०, एक वचन वि०, बहुवचन अवि०, बहुवचन वि० चारों स्थितियों में प्रयुक्त होता है।

[२] ग्वि० केन्द्र :—इसमे केवल कारक के कारण रूपान्तर होता है, वचन के कारण नहीं। यथा :

अविकारी कारक	विकारी कारक

[३] शेष अन्य केन्द्र : स्या०, अगौ० तथा बुलन्द केन्द्रों में अविकारी एकवचन और अविकारी बहुवचन के अन्तर्गत भेद नहीं किया जाता है :

अविकारी कारक	विकारी कारक	
	एकवचन	बहुवचन

४.३२५ अचेतन प्रश्न वाचक एवं प्राणीद्योतक अनिश्चयवाचक सर्वनाम.

इन सर्वनामों मे प्रत्येक केन्द्र मे अविकारी एकवचन और अविकारी बहुवचन के अन्तर्गत भेद नहीं किया जाता है। यथा :

अविकारी कारक	विकारी कारक	
	एकवचन	बहुवचन

४.३२६ सम्बन्ध सूचक सर्वनाम

इस आधार पर समस्त केन्द्रों के दो भेद हो जाते हैं :

[१] पहा० केन्द्र : इस केन्द्र में चौमुखी अन्तर पाया जाता है। यथा :

एकवचन		बहुवचन	
अवि०	वि०	अवि०	वि०

[२] शेष अन्य केन्द्र : अन्य केन्द्रों में एक वचन अवि० और बहुवचन अवि० के अन्तर्गत भेद नहीं किया जाता है। यथा :

अविकारी कारक	विकारी कारक	
	एकवचन	बहुवचन

४.३२७ सहसम्बन्ध सूचक सर्वनाम

सम्बन्ध सूचक सर्वनामों की भांति इन सर्वनामों के आधार पर भी दो भेद हो जाते हैं :

[१] शि०, खुर०, जे० तथा पहा० केन्द्र :

सम्बन्ध सूचक सर्वनामों मे केवल पहा० केन्द्रो में चौमुखी अन्तर पाया जाता है, किन्तु सहसम्बन्ध सूचक सर्वनामों में शि०, खुर० पहा० तथा जे० केन्द्रों में चौमुखी अन्तर उपलब्ध है।

[२] शेष अन्य केन्द्र :

सम्बन्ध सूचक के शेष अन्य केन्द्रों की भाँति सहसम्बन्ध सूचक के शेष अन्य केन्द्रों में एकवचन अवि० और बहुवचन अवि० के अन्तर्गत भेद नही किया जाता है।

४.३२८ निजवाचक सर्वनाम

निजवाचक सर्वनामों के व्युत्पन्न प्रातिपदिक के आधार पर दो भेद हो जाते है :

[१] निजवाचक स्त्रीलिंग व्युत्पन्न् प्रातिपदिक अपन्— + —ई>अपनी मे किसी कारण कोई रूपान्तर नहीं होता है।

[२] निजवाचक पुल्लिग व्युत्पन्न प्रातिपादिक अपन्—+—आ ~ —औ> अपना ~ अपनौ में रूपान्तर होता है।

इसमें द्विमुखी अन्तर पाया जाता है। व्युत्पन्न प्रातिपदिक अविकारी एकवचन में प्रयुक्त होता है। अविकारी बहुवचन, विकारी एकवचन और विकारी बहुवचन में {—ए} विभक्ति जुड़ती है। कहने का अर्थ यह है कि इस स्थिति में अविकारी बहुवचन, विकारी एकवचन और विकारी बहुवचन के अंतर्गत कोई भेद नहीं किया जाता है :

अविकारी एकवचन	अविकारी बहुवचन, विकारी एकवचन तथा विकारी बहुवचन

४.३२९ परिमाणद्योतक अनिश्चयवाचक सर्वनाम

इनमें अवि० एकवचन अवि० बहुवचन तथा वि० एकवचन के अन्तर्गत भेद नहीं किया जाता है। अर्थात् मूल प्रातिपदिक अवि० एकवचन, अवि० बहुवचन तथा वि० एकवचन में प्रयुक्त होता है, केवल विकारी बहुवचन में विभक्ति जुड़ती है :

अवि० एकवचन, अवि० बहुवचन तथा वि० एकवचन	वि० बहुवचन

४.३३ सर्वनाम रूपतालिका

सुविधा को ध्यान में रखते हुए, सर्वप्रथम सर्वनामों को रूपतालिका रूप में प्रस्तुत करने के पश्चात उनका विवेचन प्रस्तुत करेंगे :

अर्थ एवं कार्य के आधार पर सर्वनाम रूपतालिका के वर्ग एवं उपवर्ग	एकवचन		बहुवचन	
	अवि०	वि०	अवि०	वि०
४.३३१ उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम	मैं	में—' मो—' मु— नोट सं०[1]	हम्	हम्—
४.३३२ मध्यम पुरुषवाचक	तू	ते—' तु—' तो—' नोट सं०[1]	तम् तुम् नोट[1]	तम्—' तुम्— नोट सं०[1]
४.३३३ अन्य पुरुषवाचक (संकेतवाचक)				
४.३३३१ दूरवर्ती द्योतक	ग्—ओ व्—ओ व्—ऊ ऊ ओ नोट सं०[1]	वा—आ,— उ—स्— नोट सं०[2]	ग्—ओ व्—ए ग्—ए ऊ ओ नोट०[3]	उ—न्— उ—नन्' व्—इन्—। नो सं०[4]
४.३३३२ निकटवर्ती द्योतक	य्—ऊ य्—ए ग्—ए ज्—ए नोट सं०[5]	य—आ— इ—त्— इ—स्—। नोट सं०[6]	य—ए ग्—ए ज—ए नोट सं०[7]	इ—न्—।

अर्थ एवं कार्य के आधार पर सर्वनाम रूपतालिका के वर्ग एवं उपवर्ग	एकवचन		बहुवचन	
	अवि०	वि०	अवि०	वि०
४.३३४ प्रश्न वाचक				
४.३३४१ चेतन प्रश्नवाचक	क्—औन्	क्—औन्—, क्—इस्—, क्—आय्—। नोट सं० १	क्—औन्	क—औन्— क्—इन्— क्—आय्—। नोट० २
४.३३४२ अचेतन प्रश्नवाचक	क्—आ क्—अहा नोट सं० ३	क्—आय्—	क्—आ क्—अहा नोट सं० ४	क्—इन्हों—।
४.३३५ अनिश्चयवाचक				
४.३३५१ प्राणी द्योतक	कोई	काई—, किसी—, काऊ—, किन्हीं—। नोट सं० १	कोई	काई—यों—, किसियों—, किन्हियों—, काउसिन्—। नोट सं० २

अर्थ एवं कार्य के आधार पर् सर्वनाम रूपतालिका के वर्ग एव उपवर्ग	एकवचन		बहुवचन	
	अवि०	वि०	अवि०	वि०
४.३३५२ परिमाणद्योतक	(१) कछु (२) सब्	(१) कछु— (२) सब्—	(१) कछु (२) सब्	(१) कछुओं— कछुन्, नोट सं० ३ (२) सबों –, सबियों—, सबइ—, सबन्– । नोट सं० ४
४.३३६ सम्बन्ध एवं सहसम्बन्ध वाचक				
४.३३६१ सम्बन्ध वाचक	ज्—ओ ज्--ऊ नोट सं० १	ज्—आ–, ज्–इस्— नोट सं० २	ज्– ओ	ज् इन् ज् इन्ह-- नोट स० ३
४.३३६२ सहसम्बन्ध वाचक	व्—ओ	व्—आ—, व्—इस्—, उ—स्— नोट सं० ४	व्—ओ व्—ए नोट सं० ५	व् - इन्- व् — इन्ह्— नोट सं० ६

अर्थ एवं कार्य के आधार पर सर्वनाम रूपतालिका के वर्ग एवं उपवर्ग	एकवचन		बहुवचन	
	अवि०	वि०	अवि०	वि०
४.३३७ निजवाचक ४.३३७१ पुल्लिंग व्युत्पन्न	अपन्—आ अपन्—औ नोट सं० १	अपन्—ए—	अपन्—ए	अपन्—ए—
४.३२७२ स्त्रीलिंग व्युत्पन्न	अपन्—ई	अपन्—ई—	अपन्—ई	अपन्—ई—

४.३४ विवेचन । सहपदग्रामों का वितरण ।

४.३४१ उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

नोट सं० १

{में} सम्बन्ध द्योतक परसर्गों के साथ

{मु} स्या० तथा अगौ० केन्द्रों में अन्य परसर्गों के साथ

{मो} अन्य केन्द्रों में अन्य परसर्गों के साथ

४.३४२ मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

नोट सं० १

{ति} सम्बन्ध द्योतक परसर्गों के साथ

{तु} स्या० केन्द्र में अन्य परसर्गों के साथ

{तो} अन्य केन्द्रों में अन्य परसर्गों के साथ

नोट सं० २ तथा ३

१	२
अगौ०	शेष अन्य केन्द्र
तम्	तुम्

४.३४३ अन्यपुरुषवाचक

नोट सं० १

१ | २ | ३ | ४
|स्या० अगौ०| अगौ० | शि०, खुर०, पहा० | बुलन्द० जे०
ऊ / ~ ओ | गो | वो~वू

नोट सं० २

१ | २
स्या० अगौ० | शेष अन्य केन्द्र
उस् | वा

नोट सं० ३

१ | २ | ३ | ४
स्या० अगौ० | |शि०, खुर० पहा०| | पहा० | बुलन्द जे०
ऊ ~ औ | गो ~ | गे | वे

नोट सं० ४

१ | २ | ३
बुलन्द० | पहा० | शेष अन्य केन्द्र
विन् | उनन् | उन्

नोट सं० ५

१ | २ | ३ | ४
अगौ०, स्या० बुलन्द० | जे० | |खुर० पहा० शि०| | शि०
यू | ये | गे / ~ जे

नोट सं० ६

१ | २ | ३
बुलन्द० | शि० | शेष अन्य केन्द्र
इस् | इत् | या

नोट सं० ७

१ | २ | ३
स्या० अगौ० बुलन्द० जे० | |खुर० पहा० शि०| | शि०
ये | गे / ~ जे

४.३४४ प्रश्नवाचक

नोट सं० १

१	२	३
स्या०, अगौ०, बुलन्द०	शि०	शेष अन्य केन्द्र
किस्	काय्	कौन्

नोट सं० २

१	२	३
स्या०, अगौ०, बुलन्द०	शि०	शेष अन्य केन्द्र
किन्	काय्	कौन्

नोट सं० ३ तथा ४

१	२
स्या० अगौ०	शेष अन्य केन्द्र
का	कहा

४.३४५ अनिश्चय वाचक

नोट सं० १ तथा २

१	२	३	४
स्या० अगौ०	बुलन्द०	शि० खुर०, जे०	पहा०
किसी	किन्हो	काई	काऊ
किसियों	किन्हियों	काइयों	काउसिन्

ये रूप पदग्रामिक विश्लेषण (Morphological Segmentation) के सिद्धान्त पर अन्य रूपों में भी खंडित किये जा सकते हैं। इसका कारण यह है कि विकारी बहुवचन के रूप, विकारी एकवचन के रूपों के आगे कुछ विभक्तियाँ जोड़कर निष्पन्न किये गये हैं। हमने इनको उद्देश्यवश एक इकाई रूप मानकर अर्थ दिया है। वस्तुतः अगर हम / किसियों / को / किसि / तथा / यों / रूप में खंडित मानते हैं तो ऐसा करते समय / यों / को हम केवल बहुवचन का ही अर्थ दे सकते हैं। ऐसा करते समय निम्न आपत्तियाँ सामने आती है :

[१] / किसी / केवल अनिश्चय वाचक प्राणी द्योतक विकारी का रूप नहीं, अपितु, अनिश्चयवाचक प्राणी द्योतक एकवचन अविकारी का रूप है।

इस आपत्ति का समाधान यह कहकर किया जा सकता है कि एकवचन अर्थ––द्योतक विभक्ति—ϕ मान लें। किन्तु ऐसा मान लेने पर पुनः दो समस्याएँ उठती हैं :

[क] ऐसा करते समय हमें कारक तथा वचन कोटियों को अलग-अलग

मानना पड़ेगा। संज्ञा तथा सर्वनाम में, अन्य समस्त रूपों मे, कारक तथा वचन कोटियों की समन्वित अभिव्यक्ति होती है।

[ख] एकवचन, अर्थद्योतक —ϕ को समस्त रूपों में मानना पड़ेगा :

किसी ϕ

किन्ही ϕ

काई - ϕ

काऊ - ϕ

किन्तु इस रूप में हम - ϕ को वर्गबद्ध (Grouped) नहीं कर सकते, क्योंकि शून्य — ϕ किसी पदग्राम का सहपदग्राम मात्र हो सकता है, स्वयं पदग्राम (Morpheme) नहीं। इन्हीं सब कारणों तथा सुविधा को लक्ष्य करते हुए हमने अनिश्चयवाचक प्राणी द्योतक विकारी बहुवचन के रूपों को इकाई रूप में माना है।

नोट सं० ३

१	२
स्या०, अगौ०, बुलन्द० शि०	खुर० जे० पहा०
कछुओं	कछुन्

नोट सं० ४

१	२	३	४
स्याना०	अगौ० शि०	बुलन्द०	खुर० जे०, पहा०
सबों	सबइ	सबियों	सबन

नोट न० ३ तथा ४ (४.३३५२) के रूपों को इस प्रकार वर्गबद्ध किया जा सकता है :

अनिश्चयवाचक परिमाण द्योतक सर्वनाम

अनिश्चयवाचक परिमाण द्योतक प्रातिपदिक	अवि० एकवचन तथा बहुवचन और वि० एकवचन द्योतक	विकारी बहुवचन
कछु—	—	- ओं ~ —न्
सब्—	—	—ओं ~इयों~ —अइ ~ अन्

४.३४६ सम्बन्ध एवं सहसम्बन्ध वाचक

नोट सं० १

१	२
पह्रा०	शेष अन्य केन्द्र
जू	जो

नोट सं० २

१	२
बुलन्द०, स्या० अगौ०	शेष अन्य केन्द्र
जिस्	जा

नोट सं० ३

१	२
जे०	शेष अन्य केन्द्र
जिन्ह	जिन्

नोट सं० ४

१	२	३
स्या०	बुलन्द०	शेष अन्य केन्द्र
उस्	विस्	वा

नो० सं० ५

१	२
स्या०, अगौ०,	शेष अन्य केन्द्र
वे	वो

नोट सं० ६

१	२
जे०	शेष अन्य केन्द्र
विन्ह	विन्

४.३४७ निजवाचक

नोट सं०१

१	२
स्या०, अगौ०, बुलन्द०	शेष अन्य केन्द्र
अपना	अपनौ

स्त्रीलिंग व्युत्पन्न निजवाचक प्रातिपदिक रूपान्तर रहित है अर्थात् प्रातिपदित ही प्रत्येक अवस्था में विभक्तिमय है। पुल्लिग व्युत्पन्न प्रातिपदिक अवि०

एकवचन मे रूपान्तर रहित प्रयुक्त होता है। अवि० बहुवचन, वि० एकवचन और वि० बहुवचन मे {ए} विभक्ति जुड़ती है।

४.३५ सयुक्त सर्वनाम

सर्वनामो की यौगिक (Compound) सरचना निम्न प्रकार से सम्पन्न होती है :

४.३५१ सम्बन्धवाचक सर्वनाम + अनिश्चय प्राणीवाचक सर्वनाम यथा :

जो कोई>जोकोई

जा+काइ>जाकाइ

४.३५२ सम्बन्धवाचक सर्वनाम+ अनिश्चय परिमाणवाचक सर्वनाम ।–कछु।
यथा .

जो–+–कछु>जोकछु

४.३५३ अनिश्चय परिमाणवाचक सर्वनाम । सब् ।–+अनिश्चय परिमाण वाचक सर्वनाम ।–कछु ।

यथा :

सब्–+–कछु>सब्कछु

४.३५४ अनिश्चयवाचक सर्वनाम । सब्–।+अनिश्चय प्राणीवाचक सर्वनाम
यथा :

सब्–+–कोई>सब्कोई

सब्–+– काई>सब्काई

४.४ विशेषण

विशेषण रूपतालिका (Adjective Paradigm) के सम्बन्ध मे वाक्य स्तर पर ही विचार किया जा सकता है। इसका कारण यह है कि इसका कार्य शब्द स्तर (Word level) पर नही; अपितु वाक्य स्तर (Syntactic level) पर होता है। इस कारण विशेषण रूपतालिका वर्ग की परिभाषा निम्न प्रकार से दी जा सकती है :

'यह वह रूपतालिका है जो सज्ञा वाक्याश (Noun Phrase) मे विशेष्य (Head) के तुरन्त पूर्व आती है[1]।

---

१. जब विशेषणों का प्रयोग संज्ञा वाक्यांश में विशेष्य (Head) रूप में होता है, तब ये संज्ञा की भाँति रूपान्तरित होते हैं। अर्थात् तब प्रातिपदिकोंमें संज्ञाविभक्तियों का योग होता है। संज्ञा वाक्यांश में विशेष्य (Head) की विशेषता (Attributive) बतलाने पर ही ये विशेषण कहलाते हैं और ऐसी अवस्था में इनमें विशेषण विभक्तियों का योग होता है।

४.४१ विशेषणों के मुख्य दो वर्ग हैं :
रूपान्तर रहित—(Non-Declinable)
रूपान्तर सहित—(Dcclinable)

४.४११ रूपान्तर रहित

इस अवस्था में विशेषण प्रातिपदिक ही विभक्तिमय (Inflectional) होता है। विशेषण प्रातिपदिक मूल प्रातिपदिक अथवा मूल प्रातिपदिकों में एक पूर्व प्रत्यय अथवा एक या एक से अधिक व्युत्पादक परप्रत्यय के योग से निर्मित विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक होता है।

अर्थ एवं कार्य के आधार पर इस वर्ग के चार मुख्य उपवर्ग हैं :

[१] गुणवाचक विशेषण
[२] स्त्रीलिंग प्रणालीवाचक विशेषण
[३] स्त्रीलिंग परिमाणवाचक विशेषण
[४] संख्यावाचक विशेषण
[अ] निश्चित संख्यावाचक विशेषण
[क] गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण
[ख] समूह द्योतक निश्चित संख्यावाचक विशेषण
[ग] स्त्रीलिंग क्रमद्योतक निश्चित-संख्यावाचक विशेषण
[घ] स्त्रीलिग गुणात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण
[आ] अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

४.४१११ गुणवाचक विशेषण

मूल प्रातिपदिक :

यथा :

/ऊजड्, सुन्दर्, गरीब्, गाढा/

व्युत्पन्न प्रातिपदिक :

मू० प्रा० बढ्—+—व्युत्पादक परप्रत्यय—इया>बढिया
मू० प्रा० अच्छ्—+—व्युत्पादक परप्रत्यय—आ>अच्छा
मूल०प्रा० अच्छ्—+—व्युत्पादक परप्रत्यय—ई>अच्छी

जिन प्रातिपदिकों में व्युत्पादक परप्रत्यय {—आ~औ} जुड़ते हैं, वे केवल एकवचन अविकारी कारक में ही रूपान्तर रहित वर्ग में आते हैं। उनके अन्य रूपों में रूपान्तर होता है।

४.४११२ स्त्रीलिंग प्रणालीवाचक विशेषण

इनका निर्माण प्रणालीवाचक मूल पदग्राम {—ऐस्} में पूर्व प्रत्ययों तथा

स्त्रीलिंग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय {ई} के योग से होता है। यथा :

ϕ— + —ऐस् — + —ई > ऐसी
व् — + —ऐस् — + —ई > वैसी
क् — + —ऐस् — + —ई > कैसी
ज् — + —ऐस् — + —ई > जैसी

४.४११३ स्त्रीलिंग परिमाणवाचक विशेषण

इनका निर्माण {परिमाणवाचक मूल पदग्राम} मे पूर्व प्रत्ययों तथा स्त्रीलिंग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय {—ई} के योग से होता है। {—परिमाणवाचक मूल पदग्राम—} के दो सहपदग्राम है, जिनका क्षेत्रीय वितरण इस प्रकार है :

{त्त्} शि० मे
{तन्} अन्यत्र

स्त्रीलिग परिमाणवाचक विशेषण के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

इ + त्त्~तन् + ई इत्ती~इतनी
उ + त्त्~तन् + ई उत्ती~उतनी
जि + त्त्~तन् + ई जित्ती~जितनी
कि + त्त्~तन् + ई > कित्ती~कितनी

४.४११४ सख्यावाचक विशेषण

निश्चित एवं अनिश्चित सख्याओ का बोध कराने के आधार पर सख्यावाची विशेषणों के दो भेद हो जाते है :

निश्चित सख्यावाचक
अनिश्चित सख्यावाचक

४.४११४१ निश्चित संख्यावाचक

४.४११४११ गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण

[क] अपूर्णांक अथवा भिन्नात्मक गणनात्मक —इससे पूर्ण संख्या के किसी भाग का बोध होता है :

यथा :

$^{१}/_{४}$ पाव्~पउआ~पाउ
$^{१}/_{२}$ आधा~अद्धा~अद्धौ~आधौ
$^{१}/_{३}$ तिहाई
$^{३}/_{४}$ पौन्

१^{१}/$_{४}$ सवा
१^{१}/$_{२}$ डेढ़्
२^{१}/$_{२}$ ढाई~ढैया~ढाम्

इनके अतिरिक्त अपूर्णाङ्क विशेषणों का निर्माण पूर्णाङ्क संख्याओं में {सवा–} {साढे–} तथा {पौने–} उपसर्गों के जुड़ने पर होता है।

[ख] पूर्णाङ्क गणनात्मक

मूल प्रातिपदिक

एक्
दो
तीन्
चार्
पांच्
छै
सात्
आठ्
नौ
दस्
सौ
हजार्
लाख्
किरोड़्

नोट : शेष ग्यारह से निनाड़में तक की संख्याएँ एक से दस तक की संख्याओं में से किन्हीं दो संख्याओं के योग से बनती हैं।

४.४११४१२ समूह द्योतक निश्चित संख्यावाचक विशेषण :

जोडी (दो का समूह)
गंडा (चार का समूह)
दर्जन (बारह का समूह)
कौडी (बीस का समूह)
बीसो (बीस संख्याओं का समूह)
सैक्डा (सौ का समूह)।

४.४११४१३ स्त्रीलिंग क्रम द्योतक निश्चित संख्यावाचक विशेषण—

इनका निर्माण पूर्णाङ्क गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणों में एक साथ दो विशेषण व्युत्पादक परप्रत्ययों के योग से होता है। इनमें पहला व्युत्पादक परप्रत्यय क्रम द्योतक परप्रत्यय पदग्राम का कोई सहपदग्राम तथा दूसरा परप्रत्यय {ई^{2}} होता है। यथा :

एक् + ल् + ई^{2} पैहली
दो + सर् + ई^{2} दूसरी
तीन् + सर् + ई^{2} तीसरी
चार् + थ् + ई^{2} चौथी
पांच् + व् + ई^{2} पांच्वीं
छै + ट् + ई^{2} छठी
सात् + व् + ई^{2} सात्वीं
आठ् + व् + ई^{2} आठ्वी
नौ + व् + ई^{2} नौवी
दस् + व् + ई^{2} दसवी

४.४११४१४ स्त्रीलिंग गुणात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण

इनका निर्माण १ से १० तक की पूर्णाङ्क गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणों में एक साथ दो विशेषण व्युत्पादक परप्रत्ययो के योग से होता है। इनमे पहला व्युत्पादक परप्रत्यय {गुणात्मक द्योतक परप्रत्यय पदग्राम} का कोई सहपदग्राम {गन्}/{गुन्} तथा दूसरा व्युत्पादक परप्रत्यय {ई^{2}} होता है। यथा :

दो + गन् + ई^{2} दुग्नी
तीन् + गन् + ई^{2} > तिगनी
चार् + गन् + ई^{2} > चौग्नी
पांच् + गुन् + ई^{2} > पंच्गुनी
छै + गुन् + ई^{2} छैगुनी
सात् + गुन् + ई^{2} > सत्गुनी
आठ् + गुन् + ई^{2} > अठ्गुनी
नौ + गुन् + ई^{2} > नौगुनी
दस् + गुन् + ई^{2} > दस्गुनी

४.४११४२ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

इनका निर्माण गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणों के आगे विशेषण व्युत्पादक परप्रत्ययों के जोड़ने से होता है। यथा :

दस्—+—इयों>दसियों
पचास्—+—अन्>पचासन्.
सैक्ड़ा—+—अन्>सैक्ड़न्
सैक्ड़ा—+—ओ>सैक्ड़ो
एक्—+—आद्~आध्>एकाद्~एकाध्
दो—+—एक्[1]>दो एक्
चार्—+—एक्[1]>चार एक्

४.४१२ रूपान्तर सहित

इस वर्ग में वे विशेषण आते हैं जिनके मूल प्रातिपदिकों में विशेषण पुल्लिग व्युत्पन्न परप्रत्यय {आ~ओ} जुड़ता है।

{आ~औ} से निर्मित विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में रूप परिवर्तन होता है। स्त्रीलिंग व्युत्पन्न परप्रत्यय {—ई[2]} के योग से जो विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक बनते हैं, उनमें कोई रूपान्तर नहीं होता है। {आ~औ} से निर्मित विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक अविकारी कारक एकवचन में बिना किसी विभक्ति पर—प्रत्यय के प्रयुक्त होते हैं। शेष, अविकारी कारक बहुवचन, विकारी कारक एकवचन और विकारी कारक बहुवचन में {ए} विभक्ति परप्रत्यय जुड़ता है। इस प्रकार रूपान्तर सहित विशेषणों में द्विमुखी अन्तर पाया जाता है जिसमें {ए} विभक्ति परप्रत्यय अपने अभाव से व्यतिरेकी रूप में आता है।

अर्थ एवं कार्य के आधार पर इस वर्ग के उपवर्ग निम्नलिखित हैं :

(१) गुणवाचक विशेषणों के आकारान्त रूप
(२) पुल्लिग प्रणालीवाचक विशेषण
(३) पुल्लिग परिमाणवाचक विशेषण
(४) निश्चित संख्यावाचक विशेषण
[क] पुल्लिग क्रमद्योतक निश्चित संख्यावाचक विशेषण
[ख] पुल्लिग गुणात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण

४.४१२१ गुणवाचक विशेषणों के आकारान्त रूप

अविकारी कारक एक वचन रूप अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक

इनका निर्माण गुणवाचक विशेषण मूल पदग्राम में {पुल्लिग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय पदग्राम} =[आ~औ] के जुड़ने से होता है। यथा :

अच्छ्—+—आ~औ>अच्छा~अच्छौ

अन्य रूप

इसी प्रकार के समस्त गुणवाचक विशेषणो के आकारान्त व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में अविकारी कारक बहुवचन, विकारी कारक एक वचन एव विकारी कारक बहुवचन द्योतक विभक्ति पदग्राम { ए} जुड़ता है। यथा :

अच्छा ~ अच्छौ - ए अच्छे

४.४१२२ पुल्लिग प्रणालीवाचक विशेषण

अविकारी एकवचन रूप अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक

इनका निर्माण प्रणालीवाचक मूलपदग्राम {— ऐस्} मे पूर्व प्रत्ययों तथा {पुल्लिग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय पद्ग्राम} = [आ ~ औ] के योग से होता है। यथा :

ϕ—+—ऐस्—+ आ ~ औ ऐसा ~ ऐसौ

अन्य रूप

इसी प्रकार के समस्त पुल्लिग प्रणाली वाचक विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में अविकारी कारक बहुवचन, विकारीकारक एक वचन एवं विकारी कारक बहुवचन द्योतक विभक्ति परप्रत्यय {ए} जुड़ता है। यथा

ऐसा ~ ऐसौ +- ए ऐसे
वैसा ~ वैसौ + - ए वैसे
कैसा ~ कैसौ+—ए>कैसे आदि ।

४.४१२३ पुल्लिग परिमाणवाचक विशेषण

अविकारी कारक एकवचन रूप अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक

इनका निर्माण { परिमाणवाचक मूल पदग्राम—} मे पूर्व प्रत्ययों तथा {पुल्लिग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक पर प्रत्यय पदग्राम} के योग से होता है। यथा :

इ + त्त् ~ तन्—+ आ ~ औ इत्ता ~ इत्तौ ~ इतना ~ इतनौ

अन्य रूप : इसी प्रकार के समस्त पुल्लिग परिमाणवाचक विशेषणव्युत्पन्न प्रातिपदिकों मे अविकारी कारक बहुवचन, विकारी कारक एक वचन एव विकारी कारक बहुवचन द्योतक विभक्ति परप्रत्यय { ए} जुड़ता है। यथा :

इत्ता ~ इत्तौ ~ इतना ~ इत्नौ+ – ए> इत्ते ~ इत्ने
उत्ता ~ उत्तौ ~ उत्ना ~ उत्नौ+ –ए>उत्ते ~ उत्ने

कित्ता ~ कित्तौ ~ कित्‌ना ~ कित्‌नौ + —ए > कित्ते ~ कित्‌ने
जित्ता ~ जित्तौ ~ जित्‌ना ~ जित्‌नौ + —ए > जित्ते ~ जित्‌ने

४.४१२४ निश्चित संख्यावाचक विशेषण

४.४१२४१ पुल्लिग क्रम द्योतक निश्चित संख्यावाचक विशेषण

अविकारी एक वचन रूप अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक

इनका निर्माण पूर्णाङ्क गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणों में एक साथ दो विशेषण व्युत्पादक परप्रत्ययों के योग से होता है। इनमें पहला परप्रत्यय {—क्रम द्योतक परप्रत्यय पदग्राम—} तथा दूसरा परप्रत्यय {—पुल्लिग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय पदग्राम—} जोड़ा जाता है। यथा :

एक्—+—ल्+—आ ~ औ > पह्‌ला ~ पह्‌लौ

अन्य रूप

इस प्रकार के समस्त पुल्लिग क्रम द्योतक निश्चित संख्यावाचक विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में अविकारी कारक बहुवचन द्योतक विभक्ति परप्रत्यय {—ए} जुड़ता है। यथा :

पह्‌ला ~ पह्‌लौ + ए > पह्‌ले
दूस्‌रा ~ दुस्‌रौ + ए > दूस्‌रे
तीह्‌रा ~ तीस्‌रौ + ए > तीस्‌रे
चौथा ~ चोथौ + ए > चौथे आदि

४.४१२४२ पुल्लिग गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण

अविकारी एकवचन रूप अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक

इनका निर्माण १ से १० तक की पूर्णाङ्क गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषणों में एक साथ दो विशेषण व्युत्पादक परप्रत्ययों के योग से होता है। इनमें पहला व्युत्पादक परप्रत्यय {—गुणात्मक द्योतक परप्रत्यय पदग्राम—} तथा दूसरा व्युत्पादक परप्रत्यय {—पुल्लिग विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक परप्रत्यय पदग्राम—} जोड़ा जाता है। यथा :

दो—+—गन्—+—आ ~ औ > दुग्‌ना ~ दुग्‌नौ

अन्य रूप

इस प्रकार के समस्त पुल्लिग गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण

व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में अविकारी कारक बहुवचन, विकारी कारक एकवचन और विकारी कारक बहुवचन द्योतक विभक्ति परप्रत्यय { ए} जुड़ता है। यथा :

दुगना ~ दुगनौ ए दुगने
तिगना ~ तिग्नौ ए तिगने
चौग्ना ~ चौग्नौ ए चौग्ने आदि।

४.५ क्रिया (VERB)

४.५१ क्रिया, पदग्रामिक संचरना का वह रूपतालिकावर्ग है जिसमें क्रिया धातुओं (Verb Roots) अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों (Stems) के पश्चात् काल अर्थ, पुरुष, वचन तथा लिंग[1] के अनुसार विभक्तियाँ जुड़ती है। क्रिया विभक्ति (Verb-Inflection) की समस्त कोटियाँ 'काल रचना' के अन्तर्गत समाविष्ट हो जाती हैं। इसका कारण यह है कि काल के अनुसार क्रिया के समस्त वर्ग, उपवर्ग वैभक्तिक होते हैं। काल तथा अर्थ (Tense and Mood) क्रिया रूपतालिका को अन्य समस्त पदग्रामिक सरचना की रूपतालिकाओ मे अलग करते है। वाच्य। कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य। तथा प्रयोग। कर्तरि, कर्मणि तथा भावे प्रयोग की प्रतीति वाक्य धरातल पर होती है, पदग्रामिक सरचना के स्तर पर नहीं।

क्रिया पदग्रामिक सरचना के गठन को इस प्रकार समझाया जा सकता है :

मूल धातु ± क्रिया व्युत्पादक परप्रत्यय + विभक्ति प्रत्यय

४.५२ जो विभक्ति परप्रत्यय (Inflectional Suffixe) मूल धातु या व्युत्पन्न क्रिया प्रातिपदिक में जुड़ते है, उन्हे छै उपवर्गों मे इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है :

---

१ इस क्षेत्र की बोलियों में "काल विभक्ति वर्ग" में तीन काल, तीन अर्थ, तीन पुरुष, दो लिंग तथा दो वचन होते हैं :

काल	(१) वर्तमान काल	(२) भूत काल	(३) भविष्य काल
अर्थ	(१) निश्चयार्थ	(२) आज्ञार्थ	(३) सम्भवनार्थ
पुरुष	(१) उत्तम पु०	(२) मध्यम पु०	(३) अन्य पु०
लिंग	(१) पुल्लिग	(२) स्त्रीलिंग	
वचन	(१) एक वचन	(२) बहुवचन	

४.५२१ वर्तमान निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग

इस वर्ग में लिंग भेद नहीं होता है। पुरुष तथा वचन के अनुसार विभक्तियाँ जुड़ती हैं :

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पु॰	—ऊँ	—एँ
मध्यम पु॰	—ऐ	—ओ
अन्य पु॰	—ऐ	—एँ

उदा : **उत्तम पु॰ एकवचन**

√ह् +ऊं>हूं
खा+ऊं>खाऊं
करा+ऊं>कराऊं
दे+ऊं>दूं

मध्यम पु॰ एकवचन तथा अन्य पु॰ एकवचन ॰

ह्+ऐ>है
कर्+ऐ>करे
लग्+ऐ>लगै
जा+ऐ>जाऐ~जावै~जाहै~जाबै[1]
सो+ऐ>सोऐ~सोबै~सोहै~सौवै

उत्तम पु॰ बहुवचन तथा अन्य पु॰ बहुवचन

ह्+एँ>हैं
कर्+एँ>करैं
जा+एँ>जाएँ~जावं~जामैं~जाहैं[2]

१.

१ स्या॰	२ शि॰ जे॰, पहा॰ अगौ॰	३ अगौ॰	४ अन्य केन्द्र
जाहै	जाबै / ~	जावै	जाए

२.

१ स्या	शि॰	२ जे॰	पहा॰	३ अगौ॰	४ अन्य केन्द्र
जाहैं		जामैं		जावैं	जाएँ

सो—+—ऐं >सोएँ ~सोवैं ~सोहैं ~सोमैं
दे—+—ऐं >दै
ले—+—ऐं >लैं

मध्यम पु० बहुवचन

ह् +ओ हो

४.५२२ भूत निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग

इस वर्ग मे पुरुष भेद नही होता है। वचन तथा लिंग के अनुसार रूप निर्मित होते हैं।

	एक वचन	बहुवचन
पुल्लिग	आ ~ औ (नोट सं०¹)	ए
स्त्रीलिंग	ई	ईं

उदा०

पुल्लिग एक वचन

ह्—+— आ ~ औ > हा ~ हौ
जा —+— आ ~ औ > गया ~ गयौ
खा—+ —आ ~ औ > खाया ~ खायौ
मिल्— + — आ ~ औ > मिला ~ मिलौ
आ — + आ ~ औ > आया ~ आयौ
कर्—+ — आ ~ औ > करा ~ करौ

पुल्लिग बहुवचन

ह्—+ — ए > हे
आ — + ए > आए
जा—+ ए > गए

नोट सं० १—{आ} स्या०, अगौ० बुलन्द० केन्द्रों में {औ} अन्यत्र

दे—+—ए>दिए

ले—+—ए>लिए

स्त्रीलिंग एक वचन

ह्—+—ई>ही

पड्—+—ई>डी

आ—+—ई>आई

ले—+—ई>ली

दे—+—ई>दी

स्त्रीलिंग बहुवचन

ह्—+—ईं>हीं

आ—+—ईं>आईं

दे—+—ईं>दीं

४.५२३ भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग

इस काल की रचना में पुरुष, वचन तथा लिंग तीनों के भेद से रूप निर्मित होते हैं। इस काल की रचना की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक ही विभिक्त से काल, पुरुष, वचन तथा लिग की अभिव्यक्ति नहीं होती है। वस्तुत: इस काल की रचना में धातुओं के पश्चात् तीन विभक्तियाँ एक विशिष्ट क्रम से आती हैं। पुल्लिग भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक में पहली विभक्ति पुरुष तथा वचन द्योतक, दूसरी विभक्ति । ग् । भविष्य काल द्योतक तथा तीसरी विभक्ति लिंग तथा वचन द्योतक होती है। स्त्रीलिंग भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक में पहली विभक्ति पुरुष तथा वचन द्योतक, दूसरी विभक्ति । ग् । भविष्य काल द्योतक तथा तीसरी विभक्ति । ई । केवल स्त्रलिंग द्योतक होती है। यथा :

	पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	-उङ्-ग्—आ ~औ	ङ्—ग्—ए	उङ्—ग्—ई	ङ्—ग्—ई
मध्यम पु०	-ऐ—ग्—आ ~औ	औ—ग्—ए	ए—ग्—ई	ओ—ग्—ई
अन्य पु०	-ऐ—ग्—आ ~औ नोट सं[1]	ङ्—ग्—ऐ	ए—ग्—ई	ङ्—ग्—ई

नोट सं० १ {आ} स्या०, अगौ० बुलन्द० {औ} अन्यत्र

उदा०

उत्तम पु० पुंल्लिग एकवचन

जा + उड्–ग् आ ~ औ जाउड्गा ~ जाउड्गौ
सुन् + उड्–ग्–आ ~ औ सुनुड्गा ~ सुनुड्गौ
कर् + उड्–ग्–आ ~ औ > करुड्गा ~ करुड्गौ
जा + उड्–ग्–आ ~ औ > जाउड्गा ~ जाउड्गौ
चल् + उड्–ग्–आ ~ औ चलुड्गा ~ चलुड्गौ
दे + उड्–ग्–आ ~ औ > दुड्गा ~ दुड्गौ

मध्यम पु० पुंल्लिग एक वचन तथा अन्य पुं० पुंल्लिग एक वचन

जा–+–ऐ–ग्–आ ~ औ > जाऐगा ~ जाऐगौ ~ जावैगा
ले–+–ऐ–ग्–आ ~ औ > लेवैगा ~ लेगा ~ लेगौ
कर्–+–ऐ–ग्–आ ~ औ > करैगा ~ करैगौ
चल्–+–ऐ–ग्–आ ~ औ > चलैगा ~ चलैगौ

उत्तम पु० पुंल्लिग बहुवचन तथा अन्य पु० पुंल्लिग बहुवचन

जा–+–ड् ग–ए > जाड्गे ~ जावड्गे
खा–+ड् ग्–ए > खाड्गे ~ खावड्गे
चल्–+–ड् ग्–ए > चलड्गे
कर्–+–ड्–ग्–ए > करड्गे
दे–+–ड्–ग्–ए > दड्गे

मध्यम पु० पुंल्लिग बहुवचन

जा–+–औ–ग्–ए > जाओगे
खा–+–औ–ग्–ए > खाओगे
चल्–+–औ–ग्–ए > चलोगे
कर्–+–औ–ग्–ए > करोगे
दे–+–औ–ग्–ए > दोगे
ले–+–औ–ग्–ए > लोगे

उत्तम पु० स्त्रीलिंग एकवचन

जा–+–उड्–ग्–ई > जाउड्गी
चल्–+उड्–ग्–ई > चलुड्गी
दे–+–उड्–ग्–ई > दुड्गी

ले — + — उङ् — ग् — ई>लुङ्गी

कर् — + — उङ् — ग् — ई>करुङ्गी

मध्यम पु० स्त्रीलिंग एकवचन तथा अन्य पु० स्त्रीलिंग एकवचन

जा — + — ए — ग् — ई>जाएगी ~ जावेगी

ले — + — ए — ग् — ई>लेगी ~ लेवेगी

लिवा+ए — ग् — ई>लिवाएगी

दे — + — ए — ग् — ई>देगी ~ देवेगी

दिला — + — ए — ग् — ई>दिलाएगी

दिला — + — ए — ग् — ई>दिलवाएगी ~ दिलवावेगी

उत्तम पुं० स्त्रीलिंग बहुवचन तथा अन्य० पु० स्त्रीलिंग बहुवचन

जा — + ङ् — ग् — ई>जाङ्गी

सो — + — ङ् — ग् — ई>सोङ्गी

कर् — + — ङ् — ग् — ई>करङ्गी

चर् — + — ङ् — ग् — ई>चलङ्गी

पी — + — ङ् — ग् — ई>पिअङ्गी

मध्यम पु० स्त्रीलिंग बहुवचन

जा — + — ओ — ग् — ई>जाओगी

खा — + — ओ — ग् — ई>खाओगी

कर् — + — ओ — ग् — ई>करोगी

दे — + — ओ — ग् — ई>दोगी

ले — + — ओ — ग् — ई>लोगी

४.५२४ वर्तमान आज्ञार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग

इस वर्ग में लिंग भेद नहीं होता है। इस काल की रचना केवल मध्यम पुरुष में ही होती हैं। अतः इस काल मे मध्यम पु० में वचन के अनुसार विभक्तियाँ जुड़ती है :

एक वचन	बहुवचन	
	आज्ञार्थक	आदरार्थक
—	ओ	इए

उदा०

एकवचन

जा—+—>जा

बहुवचन आज्ञार्थक

जा—+—ओ>जाओ
खा—+—ओ>खाओ
पी—+—ओ>पीओ

बहुवचन आदरार्थक

कर्—+—इए>करिए
जा—+—इए>जाइए
सो—+—इए>सोइए

४.५२५ भविष्य आज्ञार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग

वर्तमान आज्ञार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग की ही भांति इस वर्ग मे भी केवल मध्यम पुरुष मे वचन के अनुसार विभक्तियाँ जुड़ती है, लिग के अनुसार भेद नहीं होता है :

एकवचन	बहुवचन
—इयो	—ना

एकवचन

कर्—+—इयो>करियो
जा—+—इयो>जइयो
आ—+—इयो>अइयो
सो—+—इयो>सोइयो
दे—+—इयो>दीयो
ले—+—इयो>लीयो
पी—+—इयो>पीयो

बहुवचन

कर्—+—ना>कर्ना

जा—+—ना>जाना

सो—+—ना>सोना

दे—+—ना>देना

पी—+—ना>पीना

४.५२६ भूत सम्भवनार्थ काल द्योतक विभक्ति वर्ग

इस काल की रचना धातु के पश्चात् दो विभक्तियों के योग से होती है। इनमें पहली विभक्ति {—त्—} जुड़ती है तथा दूसरी विभक्ति के रूप मे वचन तथा लिंग के अनुसार सामान्य भूत निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग की विभक्तियाँ जुड़ती हैं।

उदा०

पुल्लिंग एकवचन

आ—+—त्—आ~औ>आता~आतौ

खा—+—त्—आ~औ>खाता~खातौ

कर्—+—त्—आ~औ>कर्ता~कर्तौ

दे—+—त्—आ~औ>देता~देतौ

ले—+—त्—आ~औ>लेता~लेतौ

पुल्लिंग बहुवचन

आ—+—त्—ए>आते

खा—+—त्—ए>खाते

कर्—+—त्—ए>कर्ते

दे—+—त्—ए>देते

स्त्रीलिंग एकवचन

आ—+—त्—ई>आती

दे—+—त्—ई>देती

सो—+—त्—ई>सोती

पी—+—त्—ई>पीती

स्त्रीलिंग बहुवचन

आ—+—त्—ईं>आतीं

दे—+—त्—ईं>देतीं
सो—+—त्—ईं>सोतीं

४.६ क्रियाविशेषण (ADVERBS)

४.६० क्रियाविशेषण (Adverbs) तथा आगे की अन्य रूपतालिकाओं, समुच्चयबोधक (Conjunctions) परसर्ग (Post-Positions), एवं निपात (Particles) के बारे में वाक्य धरातल पर विचार किया जा सकता है।

क्रियाविशेषण रूपतालिका की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है :

'यह वह रूपतालिका है जो वाक्य में विशेषण एवं क्रियाओं के पूर्व आ सकती है। सामान्यतः क्रियाविशेषणों का प्रयोग विभक्ति प्रत्ययों के बिना ही होता है। अर्थात् प्रातिपदिक क्रियाविशेषण ही विभक्तिमय होता है। अपवादस्वरूप कुछ क्रियाविशेषण प्रातिपदिकों में लिंग के अनुसार विभक्तियां जुड़ती हैं।"

आगे समस्त क्रियाविशेषणों को, अर्थ एवं कार्य को ध्यान में रखते हुए, कुछ वर्गों में वर्गीकृत करके प्रस्तुत किया जायेगा :

४.६१ स्थानवाचक क्रियाविशेषण

४.६११ स्थिति अर्थद्योतक स्थानवाचक क्रियाविशेषण :

यह साधारणतया सर्वनामों अथवा अन्य क्रिया-विशेषणों पर आधारित होते हैं। इस वर्ग में यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, अर्थद्योतक क्रियाविशेषणों का निर्माण स्थिति सूचक मूल प्रातिपदिक-अहाँ~आं~हां-में भिन्नार्थक उपसर्गों के जुड़ने से होता है।

इस वर्ग के समस्त क्रिया-विशेषण क्षेत्रानुसार इस प्रकार हैं :

परिनिष्ठित हिन्दी	स्या०	अगो०	बुलन्द०	शि०	खुर०	पहा०	जे०
यहां	यहां	हियां	=	=	यहाँ	हियां	=
वहां	वहां	=	=	=	=	=	वाँ
जहां	जहां	=	जां	झां	=	=	जाँ

परिनिष्ठित हिन्दी	स्या०	अगो०	बुलन्द०	शि०	.खुर०	पहा०	जे०
वहां	वहां	=	वा	=	=	=	=
कहां	कहां	=	कां	=	कहां	कां	=
आगे	आगै	=	=	अगारै अगारी	आगै अगारे	अगार् अगारै	=
प छे	पीछै	=	=	पाछै पिछारे	=	पिछार् पिछारै	पाछे
ऊँचा	ऊँचा ऊँची	=	=	ऊँचौ ऊँची	=	=	=
ऊपर	उप्पर्	=	=	=	ऊपर्	उप्पर्	=
नीचे	नीचै	=	=	=	=	=	=
भीतर	भीतर्	=	=	=	=	=	=
बाहर	बाहर्	=	भार्	=	=	=	बार्
पास	पास्	धौरे	पास्	धौरे ढिग्	पास् धौरे	=	ढिग्
दूर्	दूर्	=	=	=	=	=	=

४.६१२ दिशा अर्थ द्योतक स्थान वाचक क्रियाविशेषण

इन क्रिया-विशेषणों का निर्माण दिशा सूचक मूल प्रातिपदिक ङ् घै~ङ्गै~त् मे {इ—} {उ—} {जि—} {कि—} उपसर्गो के जुड़ने से होता है।

इधर अर्थद्योतक: इ+ङ्गै~त्>ङ्घै~इडगै~इत्~इङ् घै

उधर अर्थद्योतक : उ—+—ङ्घै~त् >उङ्घै~उत्

जिधर अर्थद्योतक : जि—+—ङ्घै~त् >जिङ्घै~जित्

किधर अर्थद्योतक · कि—+—ङ्घै~ङ्गै~त्>किङ्घै~किङ्गै~कित्

४.६२ काल वाचक क्रियाविशेषण

इस वर्ग के क्रिया-विशेषणों मे से / अब् जब्, तब्; कब, / अर्थद्योतक क्रिया-विशेषणों का निर्माण काल सूचक मूल प्रातिपदिक /ब्/ मे भिन्नार्थक उपसर्गो के जुड़ने से होता है। इन क्रिया-विशेषणो मे से आज्, कल्, परसो, नरसो; अब् तब्,

कब्, बाद्-में कोई क्षेत्रगत अन्तर नहीं मिलता है। स्या० केन्द्र में कब्>कद् अवश्य बोला जाता है, जिस पर सन्धि विचार के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है। जिन क्रिया-विशेषणों में क्षेत्रगत अन्तर मिलते है, वे इस प्रकार हैं :

परिनिष्ठित हिन्दी अर्थ	स्या० तथा अगो०	बुलन्द	शि०	खुर०	पहा०	जे०
फिर्	फेर्	फिर्	=	=	=	फेर्
आगे	आगै	=	अगारै अगारी	आगै अगारी	अगारै अगारी	--
पीछे	पीछै	=	पाछै पिछार्	=	पिछारै पिछारै	पाछै
पहले	पैले		पैल्	पैले		

४.६३ रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

सर्वनामीय विशेषण जब क्रिया-विशेषण की रूपतालिका में आते है, वो रीतिवाचक अर्थोद्‌घाटित करते है। उन्हे यहाँ पुनः प्रस्तुत करने का अर्थ पुनरावृत्ति मात्र होगी। सर्वनामीय विशेषणों के अतिरिक्त धीरे अर्थद्योतक के लिए स्या० अगो० में /धीरे/ तथा अन्य केन्द्रों मे /धीमें/ तथा तेज अर्थद्योतक के लिए सर्वत्र/तेज् / प्रयुक्त होता है।

४.६४ परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

परिमाणवाचक रूपान्तरित सर्वनामीय विशेषणों का प्रयोग परिमाणवाचक क्रिया-विशेषणों की भाँति भी होता है। उनके अतिरिक्त शेष परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण इस प्रकार हैं :

परिनिष्ठित हिन्दी	स्या०	अगो०	बुलंद०	शि०	खुर०	पहा०	जेवर
बहुत	भौत्	भौत् घना	बहुत्	भौत्	=	=	घनौ
खूब	खूब्	=	=	=	=	=	=

परिनिष्ठित हिन्दी	स्या०	अगौ०	बुलंद०	शि०	खुर०	पहा०	जेवर
थोड़ा	थोडा	=	थोरा	थोरौ	थोडौ	थोरौ	=
कुछ	कुछ्	कछु	=	=	=	=	=
सब	सब्	=	=	=	=	=	=
और	और्	=	=	=	=	=	=
कम	कम्	=	=	=	=	=	=
तनिक	तनक्	=	जरा	तनक्	जरा	तनक्	=
कुल	कुल् सब्ली	=	तमाम्	सब्ले सब्ली	=	=	सग्ले सग्री
ज्यादा	जादै	=	जादा	जियादा	जादै	=	=

४.६५ नकारात्मक क्रिया-विशेषण

नकारात्मक क्रिया-विशेषण /ना, नई/ क्रिया से पहले आकर नकारात्मक अर्थ द्योतित करते हैं।

पुनश्च:—

मनोभाव दर्शक एवं स्वीकारात्मक क्रिया-विशेषण स्वयं में वाक्य संरचना का निर्माण करते हैं, इस कारण उनका विवेचन हमारी सीमा से परे को वस्तु है।

४.७ समुच्चय बोधक (Conjunctions)

४.७० "यह पदग्रामिक संरचना की वह रूपतालिका वर्ग है, जो दो पदग्रामिक संरचनाओं अथवा दो वाक्यांशों को जोड़ती है।"

अर्थ के आधार पर इसके चार उपवर्ग हैं :—

४.७१ संयोजक बोधक /और्/ यह समस्त क्षेत्रों में एक समान व्यवहृत होता है।

४.७२ प्रतिशेध बोधक /लेकिन्/ तथा /मगर्/
यह भी समस्त क्षेत्रों में व्यवहृत होते हैं।

४.७२ आश्रय बोधक /कि/ समस्त क्षेत्रों में व्यवहृत होता है।

४.७४ विभाजक बोधक

पदग्रामिक दृष्टि से ये अनिरन्तर यौगिक रूप (Discontinuous compound forms) हैं। इनमें कुछ खंडित क्रम (broken sequence) रूप मे है, और कुछ पुनर्घटित क्रम (Repeated sequence) रूप में है :—

४.७४१ खंडित क्रम :—

जो—तो
ऐसे—जैसे

४.७४२ पुनर्घटित क्रम :—

चाहे—चाहे
न—न
का—का
या—या

४.८ परसर्ग (Post-Positions)

४.८ पदग्रामिक संरचना की परसर्ग रूपतालिका के सम्बन्ध मे भी वाक्य-स्तर पर ही विचार किया जा सकता है। वस्तुत: ये आबद्ध रूप (Bound Forms) हैं, इस कारण इनका मुक्त रूप (Free Form) में कभी प्रयोग नहीं होता है। इसके विपरीत ये संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के विकारी कारक रूपों के पश्चात् उनमें जुड़कर आते हैं।

४.८१ विशेषणों की भांति परसर्गों के भी मुख्य दो वर्ग हैं :—

(१) रूपान्तर रहित
(२) रूपान्तर सहित

४.८११ रूपांतर रहित :—

इस अवस्था में परसर्गों में कोई रूपान्तर नहीं होता है। सम्बन्ध द्योतक

परसर्गों को छोड़कर अन्य कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, अर्थद्योतक परसर्ग रूपान्तर रहित होते हैं।

{नै}—यह कर्ता का भाव द्योतित करता है ।

यथाः—

राम्‌नै

मैंनै

{कर्म तथा सम्प्रदान अर्थद्योतक}

इसके सहपदग्रामों का वितरण इस प्रकार हैं:—

{कू} स्या०, बुलन्द०, शि०, पहा० में समस्त व्यंजनान्त एवं स्वरान्त पश्चात् यथाः—

राम्‌ कू

हम्‌ कू

मो कू

वा कू

{है} अगौ० में स्वर तथा वर्त्स्य तालव्य नासिक्य व्यंजन [न्‌] के पश्चात् । यथाः—

या—+—है>याहै

मो—+—है>मोहै

तो—+—है>तोहै

इन्‌—+—है>इन्है

{ऐ} अगौ० में अन्य व्यंजनों के पश्चात तथा खुर० एवं जे० में स्वरों के पश्चात । यथाः—

अगौ०

राम्‌—+—ऐ>रामै

हम्‌—+—ऐ>हमै

किस+ऐ> किसै

खुर० तथा जे०:—

मो—+—ऐ>मोऐ

वा—+—ऐ>वाऐ

या—+—ऐ>याऐ

{नें} खुर० तथा जे० में तालव्य नासिक्य व्यंजन [न्‌] के पश्चात् । यथाः—

बालकन्‌—+—नें>बालकन्नें

कौन्—+—नें>कौन् नें

{ऐं} खुर० तथा जे० में अन्य व्यंजनों के पश्चात :—

हम्—+—ऐं>हमें

{करण तथा अपादान अर्थद्योतक}

इसके सहपदग्रामों का क्षेत्रीय वितरण इस प्रकार है —

[१]	[२]	[३]	[४]
—अगौ०, स्या०, बुलन्द०, शि०	बुलन्द० शि०	खुर०पहा०	जे०
		तै	ते

सू / ~ सै

यथा:— लट्ठ सू

लट्ठ सै

लट्ठ तै

लट्ठ ते

{मैं} यह अधिकरण का कार्य करता है। 'इसमे किसी के अन्दर स्थित' का भाव द्योतित होता है। यथा :—

मेज्—+—मैं >मेज् मैं

वा—+—में >वामैं

{पै} यह अधिकरण का कार्य करता है। इसमे किसी के 'ऊपर होने' का भाव प्रकट होता है। यथा :—

मेज्—+—पै>मैज् पै

४.८१२ रूपान्तर सहित

सम्बन्ध अर्थद्योतक परसर्ग अपनी अग्रगामी पदग्रामिक संरचना से वैयाकरणिक सम्बन्ध व्यक्त करने के हेतु लिंग तथा वचन के अनुसार वैभक्तिक होते हैं।

{सम्बन्ध अर्थद्योतक मूल पदग्राम}

इसके दो सहपदग्राम हैं जिनका वितरण इस प्रकार है : —

{क्} यह अल्प विवृति के पश्चात् आता है।

{र्} अन्यत्र आता है।

सम्बन्ध अर्थद्योतक मूल पदग्राम के इन सहपदग्रामों मे लिंग तथा वचन के अनुसार विभक्तियाँ जुड़ती हैं :—

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिग	—आ ~ औ	—ए
स्त्रीलिंग	—ई | नोट सं १ |	—ई

यथा :—

राम्+का घोड़ा
राम्+के घोड़े
मेरा घोड़ा
मेरौ घोड़ौ
मेरे घोड़े
राम्+की घोड़ी
मेरी घोड़ी

४.९ निपात (Particles)

४.९० निपात वे आबद्ध रूप (Bound Forms) हैं जिनके जुड़ने से मुक्त-रूपों के मूल अर्थ में बल अथवा अवधारण का भाव सन्निहित हो जाता है। इन आबद्ध रूपों का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं क्रियाविशेषण पदग्रामिक संरचनाओं के बाद, उनमें जुड़कर होता है।

४.९१ निपातों को दो वर्गो में वर्गीकृत करके प्रस्तुत किया जा सकता है :—

समेतार्थक
केवलार्थक

४.९११ {समेतार्थक}

इस पदग्राम के दो सहपदग्राम हैं, जो प्रत्येक केन्द्र में मुक्त परिवर्तन (Free-Variation) में आते हैं :—

नोट सं० १ —
—{आ}—स्या०, अगौ०, बुलन्द में
—{औ}— अन्यत्र

{भी} ~ {बी}

यथा :—

घर्+भी~बी>घर् भी~घर् बी

छोरी+भी~बी>छोरी भी~छोरी बी

लाल्+भी~बी>लाल् भी~लाल् बी

मैं+भी~बी>मैं भी~मैं बी

जाउड्गा+भी~बी>जाउड्गा भी~जाउटगा बी

४.९१२ {केवलार्थक}

{समेतार्थक} पदग्राम की भांति इस पदग्राम के भी दो सहपदग्राम {ही} तथा {ई} हैं, जो सर्वत्र आपस मे मुक्त-परिवर्तन मे आते हैं। यथा :—

काली+ही~ई>काली ही~काली ई

मैं+ही~ई>मैं ही~मैं ई

रोता+ही~ई>रोता ही~रोता ई

परिशिष्ट

५.१ वाक्यांश (PHRASE)[1] अध्ययन

५.१० पदग्रामिक अध्ययन, पदग्रामिक संरचना का आन्तरिक—व्याकरण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन किसी भाषा के रूपों के गठन का अध्ययन होता है। इसके विपरीत वाक्य-विन्यास (Syntax) पदग्रामिक संरचनाओं का वाह्य-व्याकरण प्रस्तुत करता है और इससे व्याकरणिक रूपों का परस्पर सम्बन्ध ज्ञात होता है। पदग्रामिक संरचना से वाक्य तक पहुँचने के लिये वाक्यांशों (Phrases) का अध्ययन आवश्यक है। यों, हमारे अध्ययन की सीमाएँ पदग्रामिक-संरचना तक ही सीमित हैं, किन्तु इस क्षेत्र की बोलियों की क्रिया रूप की काल-रचना पदग्रामिक-संरचना से अधिक वृहत रूप में भी होती है। इस कारण, संक्षेप में संज्ञा, विशेषण, तथा क्रियाविशेषण वाक्यांशों के गठन का संक्षिप्त अध्ययन करते हुए क्रिया-वाक्यांशों पर अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से विचार किया जायेगा :—

५.११ संज्ञा वाक्यांश (Noun-Phrase)

संज्ञा वाक्यांशों में, विशेष्य (Head) संज्ञा होता है तथा गुणसूचक (Attributive) अन्य संज्ञा अथवा विशेषण आदि रूपतालिकाओं के शब्द होती हैं।

अन्तः केन्द्रमुखी संरचना

अच्छा छोरा

---

१ वाक्यांश दो प्रकार के होते हैं:—

(क) अन्तः केन्द्रमुखी वाक्यांश (ख) बहिः केन्द्रमुखी वाक्यांश

यदि कोई वाक्यांश वही कार्य प्रकट करता है, जो उसका कोई सन्निकट मौलिक अंश (Immediate Constituent) करता है तो इस प्रकार के वाक्यांश को अन्तः केन्द्रमुखी (Endocentric) वाक्यांश कहेंगे। इसके विपरीत यदि किसी वाक्यांश का कार्य उसके किसी भी सन्निकट मौलिक अंश द्वारा द्योतित नहीं होता, तो इस प्रकार के वाक्यांश को बहिःकेन्द्रमुखी (Exocentric) वाक्यांश कहेंगे।

यहाँ 'अच्छा छोरा' वाक्यांश में 'छोरा' का वही कार्य (Function) है जो अच्छा छोरा का है, अत यहाँ छोरा, विशेष्य (Head) है तथा 'अच्छा' गुणसूचक है।

बहिः केन्द्रमुखी संरचना

यथा :—। राम कू।

५.१२ विशेषण वाक्यांश

विशेषण वाक्यांश मे गुणवाची विशेषण (Qualitative Adjective), विशेष्य (Head) होता है तथा अन्य विशेषण अथवा क्रिया-विशेषण आदि गुण सूचक होते है।

अन्तः केन्द्रमुखी संरचना

यथा :—

। भौत् काला।

। एक् दो ~ दो एक्।

। दो तीन्।

। दस् पांच्।

। सौ सवा सौ।

५.१३ क्रिया-विशेषण वाक्यांश

अन्तः केन्द्रमुखी संरचना

द्विरुक्ति से निर्मित :—

संज्ञा की द्विरुक्ति से :—

। घर् घर्।

। गाम् गाम्।

विशेषण की द्विरुक्ति से :—

। ठीक् ठीक्।

। साफ् साफ्।

क्रिया-विशेषण की द्विरुक्ति से :—

। अब् अब्।

। कब् कब्।

। जब् जब्।

अनुकरणात्मक शब्दों की द्विरुक्ति से :—

। गट् गट्।

। खट् खट् ।

क्रिया-विशेषण + निषेधात्मक अव्यय + क्रिया-विशेषण:—

कभी ना कभी

कहीं ना कहीं

पदग्रामिक संरचनाओं के योग से :—

संज्ञा + संज्ञा

रात् दिन्

देस् विदेस्

क्रियाविशेषण + क्रियाविशेषण

आगै पीछै

बहिःकेन्द्र मुखी संरचना

काए कू

प्यार् सू

प्यार् तै

५.१४ क्रिया वाक्यांश (Verb-Phrase)

५.१४० क्रिया वाक्यांश की अन्तिम स्थिति में जब पदग्रामिक सरचना के छै वर्गों की विभक्तियाँ आती हैं तो सहायक क्रिया (Auxiliary Verbs) के रूप में वितरित होती हैं। सहायक-क्रिया के रूप में, क्रिया पदग्रामिक संरचना का निर्माण करने वाली छै विभक्तियों के वर्गों में से प्रथम वर्ग (वर्तमान निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग) और दूसरे वर्ग (भूत निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग) की विभक्तियां अगौ०, स्या०, तथा बुलन्द० केन्द्रों में / ह् / धातु के साथ तथा अन्य केन्द्रों में बिना किसी धातु के जुड़े आती हैं। तीसरे वर्ग (भविष्य निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्तिवर्ग) की विभक्तियां सभी केन्द्रों में / ह् / धातु के साथ् आती हैं। चौथे वर्ग (वर्तमान आज्ञार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग) तथा पांचवें वर्ग (भविष्य आज्ञार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग) की विभक्तियां बिना किसी धातु के जुड़े आती हैं। छठे वर्ग (भूत सम्भवनार्थक काल द्योतक विभक्ति वर्ग) की विभक्तियाँ / हो / धातु के साथ जुड़कर आती हैं। इस प्रकार क्रिया पदग्रामिक संरचना के विभक्ति के छै वर्गों से क्रमशः (१) वर्तमान निश्चयार्थक सहायक क्रिया (२) भूत निश्चयार्थक सहायक क्रिया (३) भविष्य निश्चयार्थक स० (४) वर्तमान आज्ञार्थक स० (५) भविष्य आज्ञार्थक स० तथा (६) भूत सम्भवनार्थक स०, का निर्माण होता है।

इस प्रकार क्रिया वाक्यांश में सहायक क्रिया सदैव रूप-अन्त्य विभक्ति (Form Closing Suffix) के रूप मे आती है ।

५.१४१ क्रिया वाक्यांश का गठन रूप

प्रस्तुत क्षेत्र की बोलियो मे क्रिया वाक्यांश के गठन का रूप निम्न रूपों मे से कोई एक होता है :—

प्रा० विभ० स०
प्रा० विभ० प्रा० स०
प्रा० प्रा० विभ० स०
प्रा० विभ० प्रा० विभ० स०

५.१४११ प्रा० विभ स०

(१) प्रा० + भूत निश्चयार्थक कालद्योतक विभ० + वर्तमान निश्चयार्थक स०

उदाहरण :—

पुल्लिग एक वचन

(मैं) आ + आ~औ ऊं~हूं आया ऊं~आया हूं~आयौ ऊं~आयौ हूं
(तू) आयौ~आया + ऐ~है
(वह) आयौ~आया + ऐ~है

पुल्लिग बहुवचन

(हम) आ + —ए + —ऐं~हैं >आए ऐं~आए हैं
(तुम) आए+हो~ओ
(वे) आए+ऐं~हैं

स्त्रीलिंग एक वचन

(मैं) आ + ईं — + ऊं~हूं>आई ऊं~आई हूं
(तू) आई+ऐ~है
(वह) आई+ऐ~है

स्त्रीलिंग बहुवचन

(हम) आ — + —ईं + ऐं~है>आई ऐं~आई है[1]

---

१. जब स्त्रीलिंग भूत निश्चयार्थक काल द्योतक विभक्ति—{ईं} के पश्चात् सहायक क्रिया जुड़ती है तो विभक्ति की अनुनासिकता का लोप हो जाता है।

(तुम्) आई+औ~हौ

(वे) आई+ऐं~हैं

(२) प्रा०+वर्तमान निश्चयार्थक मध्यम पु० एवं अन्य पु० एकवचन द्योतक विभ०—ऐ+—भूत निश्चयार्थक स०

उदा० :—

पुँल्लिग एकवचन

जा—+—ऐ+आ~हा~औ~हौ>जाऐ हा~जाए हौ~जावै आ~जावै औ~जावै हा

पुँल्लिग बहुवचन

जा—+—ऐ+हे~ए>जाऐ हे~जावै हे~जावै ए

स्त्रीलिंग एकवचन

जा—+—ऐ—+—ही~ई>जाऐ ही~जावै ही~जावैई

स्त्रीलिंग बहुवचन

जा—+—ऐ+—हीं~ईं>जाऐ हीं~जावै हीं~जावै ईं।

(३) प्रा०+भूत निश्चयार्थक कालद्योतक विभ०+भविष्य निश्चयार्थक स०

पुँल्लिग एकवचन

(मैं) जा—+—आ ~औ+हुङ्गा ~हुङ्गौ>गया हुङगा~गयौ हुङगौ

(तू) गया होगा~गयौ होगा~गयौ हौऐगा

(वह) गया होगा~गयौ होगा~गयौ हौऐगा

पुँल्लिग बहुवचन

(हम) जा—+—ए+होङ्गे>गए होङ्गे

(तुम) गए होगे

(वे) गए होङ्गे

स्त्रीलिंग एकवचन

(मैं) जा+ई+हुङ्गी> गई हुङ्गी

(तू) गई होगी~गई होएगी

(वह) गई होगी~गई होएगी

स्त्रीलिंग बहुवचन

(हम) जा—+—ईं+होङ्गी>गई होङ्गी

(तुम) गई होगी

(वे) गई होङ्गी

(४) प्रा०+भूत सम्भवनार्थक काल द्योतक विभ० भविष्य निश्चयार्थक सं०

उदा० :—

पुल्लिग एकवचन

(मैं) आ ता ~ तौ हुड्गा ~ हुड्गौ आता हुड्गा ~ आतौ हुड्गौ

(तू) आता होगा ~ आतौ होगा ~ आतौ होऐगा

(वह) आता होगा ~ आतौ होगा ~ आतौ होऐगा

पुल्लिग बहुवचन

(मैं) आ ते होड्गे आते होड्गे

(तुम) आते होगे

(वे) आते होङ्गे

स्त्रीलिग एकवचन

(मै) आ + ती हुडगी आती हुड्गी

(तू) आती होगी ~ आती होएगी

(वह) आती होगी ~ आती होएगी

स्त्रीलिग बहुवचन

(हम) आ + ती + होड्गी आती होड्गी

(तुम) आती होगी

(वे) आती होङ्गी

(५) प्रा०+भूत सम्भवनार्थक काल द्योतक वि० + भूत सम्भवनार्थ स०

उदाहरण:—

पुल्लिग एकवचन

आ—+—ता ~ तौ होता ~ होतौ > आता होता ~ आतौ होतौ

पुल्लिग बहुवचन

आ—+—ते + होते > आते होते

स्त्रीलिंग एकवचन

आ—+—ती + होती > आती होती

स्त्रीलिंग बहुवचन

आ— ~ —तीं + होती > आती होती

(६) प्रा०+भूत निश्चयार्थक काल द्योतक वि०+भूत सम्भवनार्थक स०

पुल्लिग एकवचन

आ+आ ~ औ+होता ~ होतौ > आया होता ~ आयौ होतौ

पुल्लिंग बहुवचन

आ—+—ए+होते>आए होते

स्त्रीलिंग एकवचन

आ—+—ई+होती>आई होती

स्त्रीलिंग बहुवचन

आ—+—ईं+होतीं>आई होतीं

५.१४१२ प्रा०—+—विभ०+प्रा०+स०

(७) प्रा०+भूत सम्भवनार्थ काल द्योतक विभ०+हो+वर्तमान निश्चयार्थक स०

पुल्लिंग एकवचन

(मैं) आ—+—ता~तौ+√हो+ऊं~हूँ>आता होऊं~आतौ होऊं

(तू) आता होए~आतौ होए

(वह) आता होए~आतौ होए

पुल्लिंग बहुवचन

(हम) आ+ते+√हो+ऐं~हैं>आते होऐं~आते होवैं~आते होमैं

(तुम) आते होऔ

(वे) आते होऐं~आते होवैं~आते होमैं

स्त्रीलिंग एकवचन

(मैं) आ+ती+√हो+ऊं~हूँ>आती होऊं

(तू) आती होए

(वह) आती होए

स्त्रीलिंग बहुवचन

(हम) आ—+—तीं+√हो+ऐं~हैं>आती होऐं~आती होवैं~
आती होमैं

(तुम) आती होऔ

(वे) आती होऐं~आती होवैं~आती होमैं

(८) प्रा०+भूत निश्चयार्थक काल द्योतक विभ०+√हो+वर्तमान निश्चयार्थक स०

पुल्लिंग एकवचन

(मैं) आ—+—आ~औ+√हो+ऊं~हूँ>आया होऊं~आयौ होऊं

(तू) आया होए~आयौ होए

(वह) आया होए~आयौ होए

पुल्लिंग बहुवचन

(हम) आ—+—ए+√हो+ऐं~हैं>आए होऐं~आए होवें~आए होमैं

(तुम) आए होओ

(वे) आए होऐं~आए होवें~आए होमैं

स्त्रीलिंग एकवचन

(मैं) आ—+—ई+√हो+ऊं~हूं>आई होऊं

(तू) आई होए

(वह) आई होए

स्त्रीलिंग बहुवचन

(हम) आ—+—ईं+ √हो+—ऐं~हैं>आई होऐं~आई होवें ~आई होमैं

(तुम) आई होओ

(वे) आई होऐं~आई होवें~आई होमैं

(९) प्रा०+भूतसम्भवनार्थक कालद्योतक वि०+√र्+भूतनिश्चयार्थक स०

पुल्लिंग एकवचन

आ+—ता~तौ+√र्+आ~औ>आता रा~आतौ रौ

पुल्लिंग बहुवचन

आ+ते+√र्+—ए>आते रए

स्त्रीलिंग एकवचन

आ+—ती+√र+ई>आती रई

स्त्रीलिंग बहुवचन

आ—+तीं+√र+ईं>आती रईं

५.१४१३. प्रा०+प्रा०+विभ०+स०

(१०) प्रा०+प्रा०+भूत निश्चयार्थक काल द्योतक विभ०+वर्तमान निश्चयार्थक स०

पुल्लिंग एकवचन

(मैं) आ+√र्ह्+आ~औ+ऊं~हूं>आ रा ऊं~ आ रौ ऊं~आ रौ हूं~आ रिया हूं

(तू) जा रा ऐ~जा रौ ऐ~जा रा है~जा रौ है~जा रिया है

(वह) जा रा ऐ~जा रौ ऐ~जा रा है~जा रौ है~जा रिया है

पुल्लिग बहुवचन

(हम) आ+√रह्+ए+ऐं~हैं>आ रए ऐं~आ रए हैं

(तुम) आ रए ओ~आ रए हो

(वे) आ रए ऐं~आ रए हैं

स्त्रीलिंग एकवचन

(मैं) आ+√रह्+ई+ऊं~हूँ>आ रई ऊं~आ रई हूँ

(तू) आ रई ऐ~आ रई है

(वह) आ रई ऐ~आ रई है

स्त्रीलिंग बहुवचन

(हम) आ+√रह्+ई+ऐं~हैं>आ रई ऐं~आ रई हैं

(तुम) आ रई ओ~आ रई हो

(वे) आ रई ऐं~आ रई हैं

इसी प्रकार से अन्य काल वाचक क्रिया वाक्यांश प्रा० √रह्[1] के स्थान पर अन्य प्रातिपदिकों के प्रयुक्त होने पर बनते हैं। यथा :—

प्रा०+√चुक्—+भूत निश्चयार्थक विभ०+वर्तमान निश्चयार्थक स० यथा :—

(मैं) आ+√चुक् +आ~औ+ऊं~हूँ>आ चुका हूँ~आ चुकौ ऊं~आ चुका ऊं

प्रा०+√ग—+भूत निश्चयार्थक विभ०+वर्तमान निश्चयार्थक स० यथा :—

(मैं) आ+√ग्—+आ~औ +ऊं~हूँ>आ गया हूँ~आ गयौ ऊं~आ गया ऊं

(११) प्रा०+प्रा०+भूत निश्चयार्थक काल द्योतक वि०+भविष्य निश्चयार्थक स०

पुल्लिग एकवचन

(मैं) आ—+—√रह्+आ~औ+हुङ्गा~हुङ्गौ>आ रा हुङ्गा~आ रौ हुङ्गा~आ रौ हुङ्गौ~आ रिया हुङ्गा।

---

१. {रह् अर्थद्योतक पदग्राम} के तीन सहपदग्राम हैं :—

{—रिय्—} अगौ० में आकारान्त के पूर्व

{—र—} अन्यत्र आकारान्त एवं औकारान्त के पूर्व

{—र्—} सर्वत्र अन्य स्वरान्त के पूर्व

(तू) आ रा होगा ~ आ रौ होगा ~ आ रौ होऐगा
(वह) आ रा होगा ~ आ रौ होगा ~ आ रौ होऐगा

पुल्लिग बहुवचन

(हम) आ + √रह् + ए + होङ्गे > आ रए होङ्गे
(तुम) आ रए होगे
(वे) आ रए होङ्गे

स्त्रीलिंग एकवचन

(मैं) आ + √रह् + ई + हुङ्गी > आ रई हुङ्गी
(तू) आ रई होगी ~ आ रई होएगी
(वह) आ रई होगी ~ आ रई होएगी

स्त्रीलिंग बहुवचन

(हम) आ + √रह् + ईं + होङ्गी > आ रई होङ्गी
(तुम) आ रई होगी
(वे) आ रई होङ्गी

इसी प्रकार से अन्य कालवाचक क्रिया वाक्यांश प्रा० √रह् के स्थान पर अन्य प्रातिपदिकों के प्रयुक्त होने पर बनते है। यथा :—

प्रा० + √चुक् + भूत निश्चयार्थक वि० + भविष्य निश्चयार्थक स०। यथा:—

(मैं) आ + √चुक् + आ ~ औ + हुङ्गा ~ हुङ्गौ > आ चुका हुङ्गा ~ आ चुकौ हुङ्गौ

प्रा० + √ग् + भूत निश्चयार्थक वि० + भविष्य निश्चयार्थक स०। यथा:—

(मैं) आ + √ग् + आ ~ औ + हुङ्गा ~ हुङ्गौ > आ गया हुङ्गा ~ आ गयौ हुङ्गौ

५.१४१४ प्रा० + विभ० + प्रा० + विभ० + स०

(१२) प्रा० + भूत सम्भवनार्थक कालद्योतक विभ० + प्रा० + भूत सम्भवनार्थक कालद्योतक विभ० + वर्तमान निश्चार्थक स०

पुल्लिग एकवचन

(मैं) आ — + — ता ~ तौ — + — √रह् — + — ता ~ तौ — + ऊं ~ हूँ > आता रहता हूँ ~ आतौ रहतौ हूँ ~ आता रहता ऊं ~ आतौ रहतौ ऊं
(तू) आता रहता है ~ आतौ रहतौ ऐ
(वह) आता रहता है ~ आतौ रहतौ ऐ

पुंल्लिग बहुवचन

(हम) आ+—ते+√रह्—+—ते—+—ऐं~हैं >आते रह्ते ऐं~आते रह्ते हैं

(तुम) आते रह्ते औ~आते रह्ते हौ

(वे) आते रह्ते ऐं~आते रह्ते हैं

स्त्रीलिंग एकवचन

(मैं) आ—+ती— + — √रह्— +ती—+—ऊं~हूं> आती रह्ती ऊँ~आती रह्ती हूँ

(तू) आती रह्ती ऐ~आती रह्ती है

(वह) आती रह्ती ऐ~आती रह्ती है

स्त्रीलिंग बहुवचन

(हम) आ—+—तीं+√रह् +तीं+ऐं~हैं>आती रह्ती ऐं~आती रह्ती हैं

(तुम) आती रह्ती हौ~आती रह्ती औ

(वे) आती रह्ती ऐं~आती रह्ती हैं

(१३) प्रा०—+भूत सम्भवनार्थक कालद्योतक विभ०+प्रा०+भूत सम्भवनार्थक कालद्योतक विभ०+भविष्य निश्चयार्थक स०

पुंल्लिग एकवचन

(मैं) आ— + —ता~तौ—+√रह्+ता~तौ—+हुङ्गा ~हुङ्गौ>आता रह्ता हुङ्गा~आतौ रह्तौ हुङ्गौ

(तू) आता रह्ता होगा~आतौ रह्तौ होगौ~आतौ रह्तौ होएगा

(वह) आता रह्ता होगा~आतौ रह्तौ होगौ~आतौ रह्तौ होएगा

पुंल्लिग बहुवचन

(हम) आ—+—ते—+ √रह्+ते +होङ्गे>आते रह्ते होङ्गे

(तुम) आते रह्ते होगे

(वे) आते रह्ते होङ्गे

स्त्रीलिंग एकवचन

(मैं) आ—+ती—+ √रह्— + ती—हुङ्गी>आती रह्ती हुङ्गी

(तू) आती रहती होगी ~ आती रहती होएगी
(वह) आती रहती होगी ~ आती रहती होएगी

स्त्रीलिंग बहुवचन

(हम) आ— + —तीं — + √रह् — + तीं — + —होङ्गी >
आती रहती होङ्गी
(तुम) आती रहती होगी
(वे) आती रहती होङ्गी

५.२ विशिष्ट क्षेत्रीय शब्द

शोध-प्रबंध में अधिकांश क्षेत्रीय शब्दों का परिनिष्ठित हिन्दी अर्थ प्रस्तुत कर दिया गया है। नीचे कुछ ऐसे क्षेत्रीय शब्दों का परिनिष्ठित हिन्दी अर्थ दिया जा रहा है जो विशिष्ट रूप से प्रयुक्त होते हैं तथा जिनका परिनिष्ठित हिन्दी अर्थ प्रस्तुत करना, प्रस्तुत क्षेत्र से इतर क्षेत्र के विद्वान-पाठकों के लिए अत्यावश्यक है :—

इङ्घे — इधर
उङ्घे — उधर
काइ — किसी
कउवा — कौवा
कांसा — धातु विशेष
खरा — शुद्ध
खोल् — विशेष रूप से गर्म होने के अर्थ में
खोंचा — बुरी तरह से खींचना
घाम् — विशिष्ट गरमी के अर्थ में
घरी — घड़ी
चाक् — (१) मिट्टी से निर्मित लिखने वाला कलम
(२) विवाह के अवसर का एक रीति-रिवाज
(३) ठीक
छाक् — विवाह के अवसर पर बनने वाला विशिष्ट पदार्थ
छोरा — लड़का
झान् — संगीत वाद्य यंत्र 'झाँझ'
बहोतेरे — बहुत से
बन्जर् — वह भूमि जो कृषि के योग्य न हो
बिगर् — बिगड़

बघर्रा	एक विशिष्ट जानवर
बूरा	शर्करा का संबंधित रूप
बैयर्वानी	स्त्री
बौल्	खेलने की गेंद
भब्भड़्	भीड़
भया	हुआ
भूबलिया	एक जाति विशेष जो यत्र तत्र घूमती फिरती है तथा लोहे का सामान बनाती है ।
नाउ	नाई
निब्टा	समाप्त
निस्पत्	उत्कोष
मइया	माँ
मद्दी	मंदी
मढइया	झोपड़ी
मच्ली	उबकाई आना
मझ्ली	बीच की
माँढ्	चाँवल से निकाला गया पदार्थ
माँज्	बर्तन साफ करने के संदर्भ में
मौल्	चूड़ियों के संदर्भ में फूटना
रए	रहे
रेवै आ	रहता था
लाध्	(१) किसी के शरीर पर भार स्वरूप अत्यधिक सामान रख देने के अर्थ में (२) गाय एवं भैसों आदि पशुओं के दूध रहित अवस्था के सम्बन्ध में
लङ्ग	तरफ्
लौंडा	लड़का
लोट्	आराम करने के लिये लेट जाने के अर्थ में
लौट्	प्रत्यागमित होने के अर्थ में
लग्गा	किसी वस्तु के खर्च होने के क्रम का आरम्भ होना
सिक्री	अपवित्र चूल्हा के सन्दर्भ में

सिक्री   साफ की हुई जमीन के अर्थ में

सुरक्   आभा युक्त लाल् रंग के संदर्भ में

सौख्   एक पति की एक से अधिक पत्नियाँ एक दूसरे के लिये बुरे अर्थ में प्रयुक्त करती हैं।

५·३ भाषा शास्त्रीय पारिभाषिक अंग्रेजी शब्दों का प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मे मान्य हिन्दी अनुवाद

A

Abstract	भाव वाचक
Adjective	विशेषण
Adverb	क्रिया-विशेषण
Affricate	स्पर्श-संघर्षी
Allophone	सहस्वन
Allophonic-statement	सहस्वनों के सम्बन्ध मे वक्तव्य
Allomorph	सहपदग्राम
Alveolar	वर्त्स्य
Analysis	विश्लेषण
Analogous pairs (Sub-minimal pairs)	उपस्वल्पान्तर युग्म
Articulator	उच्चारण सहायक अवयव
Articulatory differences	उच्चारणगत भिन्नतायें
Aspiration	महाप्राणता
Aspirated	महाप्राण
Attribute	विशेषण
Attributive	गुणसूचक

B

Back	पश्च
Back-vowels	पश्च स्वर
Base	मूलरूप या मूल प्रातिपदिक
Bilingual	द्विभाषीय
Bilabial	द्वयोष्ठ्य
Bound	आबद्ध
Bound forms	आबद्ध-रूप
Broken-Sequence	खंडित-क्रम

Cardinal Vowels	मान स्वर
Causals	प्रेरणार्थक
Central	केन्द्रीय
Central-Vowels	केन्द्रीय स्वर
Closed	संवृत
Cluster	गुच्छ
Comparative	तुलनात्मक
Complementary	परिपूरक
Complementary Distribution	परिपूरक-वितरण
Concrete	मूर्त
Conditioned	प्रतिबन्धित
Conjunction	समुच्चयबोधक
Correlative	सहसम्बन्ध सूचक
Consonant	व्यंजन
Consonantal Cluster	व्यंजन-गुच्छ
Consonantal Phonemic Structure	व्यंजन ध्वनिग्रामिक गठन
Contrast	व्यतिरेक
Contrastive	व्यतिरेकी
Contrastive Distribution	व्यतिरेकी वितरण

D

Declinable	रूपान्तर सहित
Defective-Phoneme	दोषपूर्ण ध्वनि ग्राम
Derivative	व्युत्पत्ति
Derivational	व्युत्पादक
Descriptive	वर्णनात्मक
De-voiced	अघोष
Dialect	बोली
Diphthong	सन्ध्यक्षर
Discontinuous	अनिरन्तर

Discontinuous compound forms	अनिरन्तर यौगिक रूप
Distinctive	विशेष
Distinguished features	विशेष-लक्षण
Distinguished Sounds	महत्वपूर्ण ध्वनियाँ
Distribution	वितरण

E

Economy	लाघव
Endocentric	अन्तःकेन्द्रमुखी
Environment	परिवेष
Exocentric	बहिःकेन्द्रमुखी

F

Falling Diphthong	अवरोही सन्ध्यक्षर
Final	अन्तिम
Final position	अन्तिम स्थिति
Flapped	उत्क्षिप्त
Following	अनुगामी
Form	रूप
Form-class	रूप-वर्ग
Free forms	मुक्त-रूप
Free-variation	मुक्त-परिवर्तन
Fricative	संघर्षी
Front-vowels	अग्रस्वर

G

Gemination	द्वित्व
Glottal	काकल्य
Gender	लिंग
Grammatical	वैयाकरणिक
Grammatical-system	वैयाकरणिक-प्रणाली
Grouping	वर्ग बन्धन

H

Half-closed	अर्द्ध संवृत
Half-opened	अर्द्ध विवृत
Head	विशेष्य

I

Identical	एक-रूप
Identical phonemic environment	एक रूप ध्वनिग्रामिक परिवेश
Immediate constituent	सन्निकट मौलिक अंश
Individual-features	वैशिष्ट्य-लक्षण
Inflection	विभक्ति
Informant	सूचक
Initially	आरम्भिक
Isoglasses	सम्वाक् रेखायें
Internal Juncture	आन्तरिक विवृति
Interrogative	प्रश्न वाचक
Intervocally	द्विस्वरान्तर्गत
Intonation	सुर-लहर

J

Juncture	विवृति

L

Labial	ओष्ठ्य
Labio-dental	दन्त्योष्ठ्य
Lateral	पार्श्विक
Lax	शिथिल
Layer	परत
Length	दीर्घता
Linguistics	भाषा-शास्त्र
Lowered	निम्न

M

Manner of Articulation	उच्चारण-प्रयत्न

Meaning	अर्थ
Medially	माध्यमिक
Methodology	प्रणाली
Minimal pairs	स्वल्पान्तर-युग्म
Monosyllabic	एकाक्षरीय
Mood	अर्थ
Morph	पद
Morpheme	पदग्राम
Morphemic, Morphology	पदग्राम शास्त्र
Morphological	पदग्रामिक
Morphological construction	पदग्रामिक संरचना
Morphological-System	पदग्रामिक-प्रणाली
Morphophonemics	सन्धि-विचार
Mutually Exclusive	अन्यापवर्जी

N

Nasalisation	अनुनासिकता
Nasals	नासिक्य
Nasal consonants	नासिक्य-व्यंजन
Non-aspiration	अल्प प्राण
Non-contrastive distribution	अव्यतिरेकी वितरण
Non-declinable	रूपान्तर रहित
Non-syllabic	अनक्षरात्मक
Noun	संज्ञा
Number	वचन

O

Opened	विवृत
Opposed-pairs	विरोधी युग्म
Over-all pattern	समान-सांचा

P

Palatal	तालव्य

Pattern	सांचा
Paradigm	रूप तालिका
Particle	निपात
Phone	स्वन
Phoneme	ध्वनिग्राम
Phonemic-Analysis	ध्वनिग्रामिक विश्लेषण
Phonemics	ध्वनिग्रामशास्त्र
Phonemic-system	ध्वनिग्रामिक-प्रणाली
Phonetic	ध्वन्यात्मक
Phonetic Sound Types	ध्वन्यात्मक ध्वनि रूपों
Phonotactic	ध्वनिग्राम-क्रम-गठनात्मक
Phonological	ध्वनिप्रक्रियात्मक
Phonological System	ध्वनि प्रक्रियात्मक प्रणाली
Pitch	सुर
Pitch-level	सुर धरातल
Place of Articulation	उच्चारण-स्थान
Plus-juncture	अल्प-विवृति
Post-positions	परसर्ग
Prefix	उपसर्ग
Pronoun	सर्वनाम
Proximate	निकटवर्ती

R

Reduced-form	लघु रूप
Relative	सम्बन्ध सूचक
Remote	दूरवर्ती
Repeated Sequence	पुनर्घटित-क्रम
Retracted	प्रत्याकृष्ट
Release	निस्तार
Rising Diphthong	आरोही सन्ध्यक्षर
Rolled	लुंठित
Root	धातु